ईरान के कट्टर राष्ट्रपति का अंत

चारधाम यात्रा बेमौत मर रहे श्रद्धालु

एंटीबायोटिक से खतरा क्यों

बालिका गृहों में यौन शोषण

# सरिता

जून (प्रथम) 2024, ₹ 70

## संविधान की शक्ति

## गुलामी और भेदभाव से मुक्ति

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# सरिता

संपादक
प्रकाशक
**परेश नाथ**

संस्थापक
**विश्वनाथ**
1917-2002

जून (प्रथम) 2024 अंक 1659


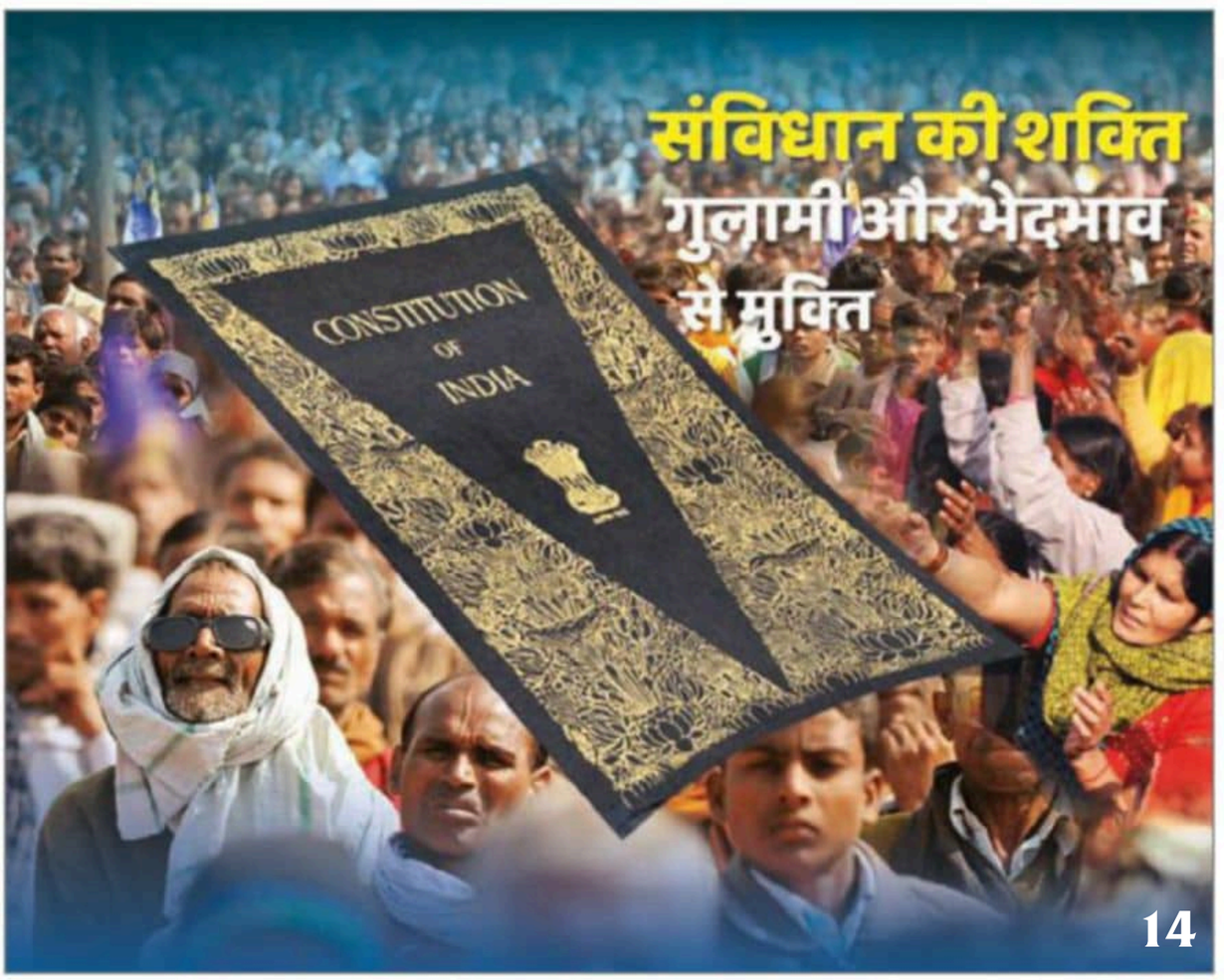


## लेख


36 **ईरान के राष्ट्रपति**
दर्दनाक अंत

44 **राहुल गांधी से**
शादी का सवाल

50 **चारधाम यात्रा**
बेमौत मर रहे श्रद्धालु

56 **बालिका गृहों में**
यौन शोषण

64 **सरकारी स्कूलों के बच्चे**
ला सकते हैं अच्छे नंबर

70 **एंटीबायोटिक**
क्यों है खतरनाक

74 **जैंडर चेंज कराना**
क्या आसान हो गया है


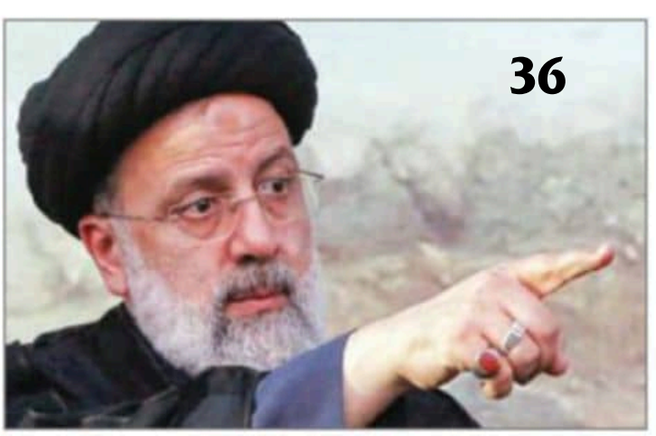


More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

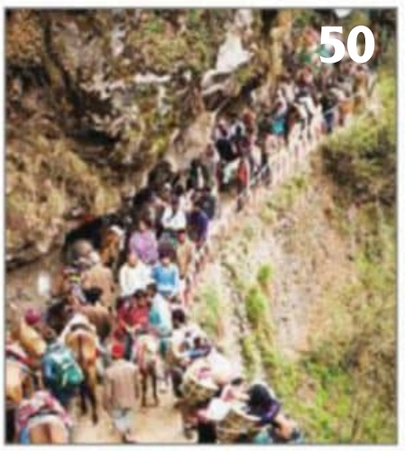


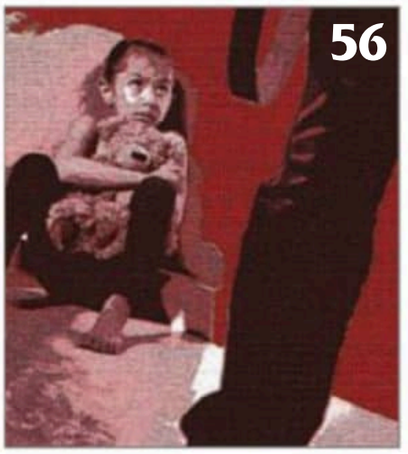


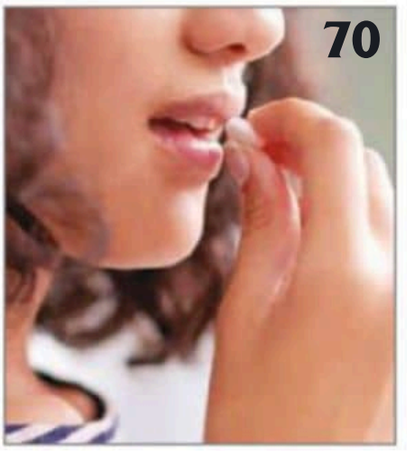



84 **बाप बड़ा न भैया**
सब से बड़ा रुपैया

94 **बच्चों को रिस्क**
उठाने दें


## कहानी


98 **कर्नल साहब**
कौन थी यह सोनिया


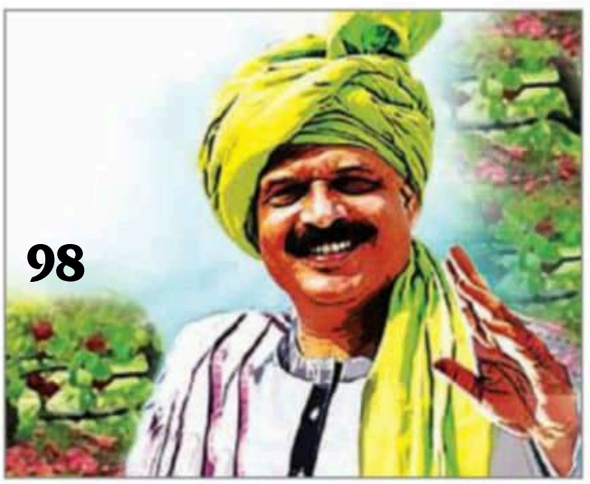



104 **सुलक्षणा**
किस अनजानी राह पर चल पड़ी थी वह ?

114 **हनक**
कहानी व्यक्ति के अर्श से फर्श तक आने की

122 **अधपकी रोटियां**
पतिपत्नी के रिश्ते की नोकझोंक

130 **मेरी खुशी**
उस की खुशी का राज क्या था


और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

## व्यंग्य


118 **सर जी मी टू**
कृपादृष्टि को तरसता तुच्छ प्राणी


## स्तंभ


8 **आप के पत्र**

10 **सरित प्रवाह**

34 **श्रीमतीजी**

92 **पाठकों की समस्याएं**

135 **इन्हें आजमाइए**

138 **चंचल छाया**


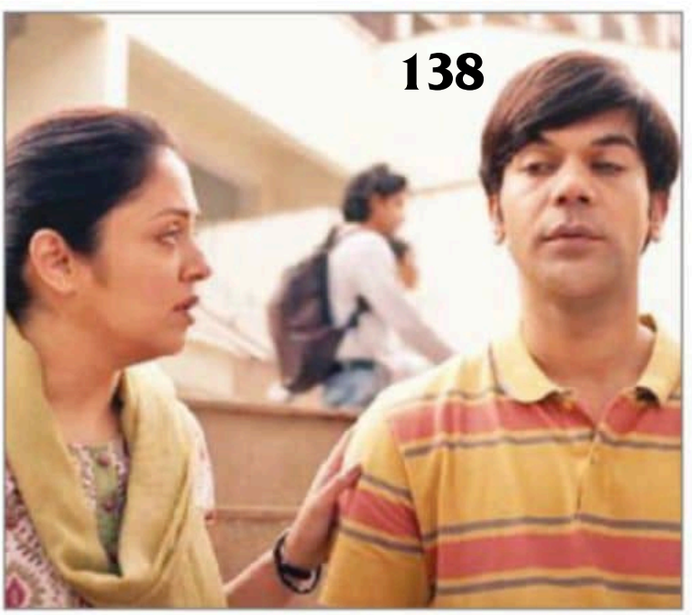


More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

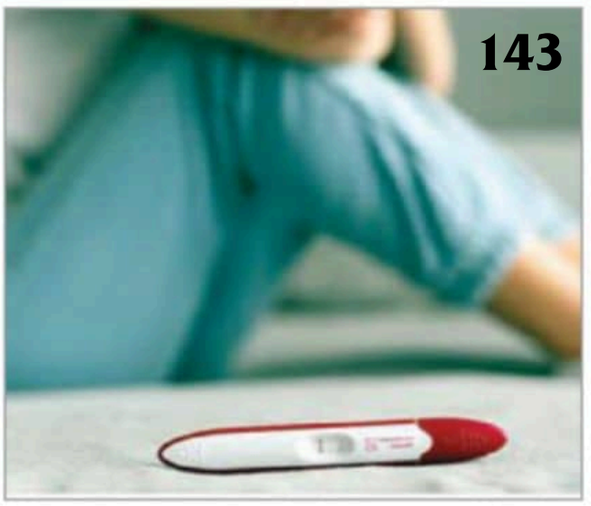


# फिल्म

## 143 निसंतानता पर

फिल्में क्यों नहीं

**मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय**

**दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.**
**फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.**
**अन्य कार्यालय :** 31, ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845.** 11, फर्स्ट क्रास, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076.** गीतांजली टावर, शौप नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने), अजमेर रोड, **जयपुर-302006. फोन : 09529020226.** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई-400031. **फोन : 022-24122661/43473050, 9833151545.** 703, आईएनएस टावर, बांद्रा कुर्ला कौंप्लैक्स, **मुंबई-400051. फोन : 022-48264114. कोलकाता-700026. फोन : 033-40707193.** 109/5बी, हाजरा रोड (ग्राउंड फ्लोर), (नियर पैरामाउंट नर्सिंग होम), **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फिट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

**सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714. एक्सटैंशन नंबर : 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाटसऐप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in**

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.

**मूल्य : एक प्रति ₹ 70. वार्षिक : ₹ 1,608, दो वर्ष : ₹ 3,048 ( रजिस्टर्ड डाक से )**

**वार्षिक मूल्य :** केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.

**अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य ( हवाई डाक से ) :** वार्षिक 100 अमेरिकी डौलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल : article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल : invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल : editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE

© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. INDIA ISSN 0971-1538
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.
THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

वर्ष : 79, अंक : 11

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## आवेग के शिकार में अपराध

कुछ व्यक्ति इस तरह के होते हैं कि यदि उन के मन का न हुआ तो वे उग्र हो जाते हैं और अपने इस संवेग के कारण अपराध करते हैं. एक व्यक्ति ने रोड पर जा रही लड़की पर तेजाब डाल दिया. एकतरफा प्रेमप्रसंगों में ऐसी घटनाएं अकसर होती हैं. लड़कियां पुरुषों की लम्पट वृत्ति का शिकार होती रही हैं और वे ताउम्र विकृत चेहरे की पीड़ा झेलती हैं. वहीं, आरोपी व्यक्ति पकड़ में आए तो भी उस का कुछ नहीं होता. वह अपमानित हो कर सजा काट आ जाता है.

एक लड़की के लिए चेहरा खास होता है जिस पर वह नाज करती है. यहां पर हरेक अपनी इच्छा का मालिक है. दूसरे के साथ उस के मनभेद चलते रहते हैं. कभी यह बात हौटटौक में बदल जाती है और पुलिस केस भी बन जाता है. हम घर के बाहर अकसर लड़ते हैं. एक कारण व्यक्ति का ईगो भी है जो उसे झुकने नहीं देता. बात न बिगड़ जाए तो इस के लिए एक जना चुप्पी साध ले. आप के चुप रहने से उस का आवेग शांत हो जाएगा. व्यक्ति को कभी उग्र नहीं होना चाहिए. उस की यही वृत्ति हर छोटेबड़े अपराध का कारण बनती है. **दिलीप कुमार गुप्ता**

*

सम्पादक महोदय,

नमस्कार!

वर्षों तक कम्युनिस्ट ऐजेंडा चला, हिन्दू समाज को जाति वर्गों में बांट कर, वैमनस्य को बढ़ावा देना, सकारात्मकता बढाने का अपना दायित्व निभाने की अपेक्षा गिनी चुनी घटनाओं को बढ़ा चढ़ा कर पेश करना!

रीति रिवाज, परम्पराओं को अंधविश्वास और ढकोसला बताना यही सब चला, इसमें बालीवुड, नाटक, पत्रकार, कथित बुद्धिजीवी इन सबका सत्ता की सरपरस्ती में नापाक गठजोड़ पूरी निर्लज्जता से चलाया गया!

अब कुछ फिल्मों के माध्यम से सच्चाई सामने आ रही है तो क्या तकलीफ है जी घटनाओं में कुछ गलत है तो बताओ!

बाबा रामदेव पर कोर्ट ने निर्णय दिया तो आपको बड़ा आनन्द आ रहा है कभी नेस्ले, यूनि लिवर, जानसन & जानसन और भी पचासों कंपनियों पर विश्व भर में कार्यवाही हुई है उन पर तो आपकी कलम को चक्कर आ जाते होंगे!

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

महोदय सच्चाई से नाता जोड़ कर अपने पापों का प्रायश्चित कर लीजिए, इसी में कल्याण है!

धन्यवाद!

राकेश, जयपुर!

*–बिना भाषा संशोधन के प्रकाशित पत्र.*

*

## यह भी खूब रही

शर्माजी कुछ महीनों पहले ही रिटायर हुए थे. अब उन के पास कोई विशेष काम नहीं था. स्वयं को व्यस्त रखने के लिए दोस्तों के यहां जाना व उन को बुलाना बढ़ गया. एक दिन हम 5-6 दोस्त शर्माजी के यहां गप्पें लगाने को इकट्ठा हुए. वे कहने लगे, "भई, अब हम थोड़ा किचन का काम देखेंगे."

श्रीमती शर्मा अंदर से आती हुई बोलीं, "अरे, कभी कुछ काम किया ही कहां है, कभी चाय तक नहीं बनाई है. मैं चाय बना कर ले आती हूं."

शर्माजी बोले, "अरे, रुको न, चाय तो आज मैं ही बनाऊंगा." और वे चले चाय बनाने. श्रीमती शर्मा साथ जाने लगीं तो उन्हें यह कह कर रोक दिया कि आप यहीं बैठो. श्रीमती शर्मा बुदबुदाईं, 'कभी तो चाय बनाई ही नहीं.'

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

थोड़ी देर बाद शर्माजी बिलकुल बैरा स्टाइल में चाय की ट्रे ले कर आ गए. सब ने चाय ले ली. पहली चुस्की लेते ही नाक में हींग की महक और चरपराहट तैर गई. सब एकदूसरे का मुंह देखने लगे तो वे बोले, "है न, बढ़िया मसाला चाय."

सब कहने लगे, "आप भी तो लीजिए न."

वे बोले, "अरे, अभी एक बार और लेना, चाय तो बहुत बन गई." और वे चाय की केतली भर कर ले आए और स्वयं भी चाय ले कर बैठ गए.

इसी बीच श्रीमती शर्मा किचन में गईं तो सारा माजरा समझ गईं. किचन स्लैब पर 'जीरावन मसाला' रखा हुआ था जोकि कुछ देर पहले बच्चों ने अमरूद के साथ खाने को निकाला था. वही चाय में डल गया. डब्बे पर लगा जीरावन लेबल हलका हो गया था. शर्माजी ने जैसे ही चाय की चुस्की ली तो उन का मुंह देख कर हमें हंसी आ गई.

**मंजुला भूतड़ा** ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# सरित प्रवाह

संपादकीय

## सरकार, बैंक और उद्योगपति

जब से भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार ने बैंकों के नौन परफौर्मिंग एसेट, डूबा हुआ पैसा, खातों से टैक्स देने वाली जनता के 30 लाख करोड़ रुपयों को निकालने का अधिकार बैंकों को दे दिया है, बैंकों के मुनाफे बढ़ गए हैं. बैंकों ने कई सालों तक ऐसे लोगों को भरभर कर कर्ज दिया था जिन के सरकार से अच्छे संबंध थे. इन लोगों ने सरकार को खूब समर्थन भी दिया था. आम आदमी को इस से कोई लाभ नहीं हुआ पर बैंकों की बैलेंस शीट सुधर गईं और वे मुनाफे दिखाने लगे हैं.

इस का अर्थ यह नहीं है कि देश में बैंकिंग व्यवस्था सुधर गई है. बैंक साहूकार थे और आज भी वैसे ही हैं. वे कर्ज, क्रैडिट कार्ड, होम लोन, एजुकेशन लोन, ट्रैवल लोन लेने को लोगों को उकसाते हैं और फिर वसूली के लिए घरदुकान नीलाम करते हैं. बैंकों के नियम हर रोज बदलते हैं. बैंक आज तमाम सुविधाओं का लालच दे कर लोगों से फिक्स्ड डिपौजिट या अन्य खाता खुलवाने को लुभाते हैं और लोग खाता खुलवा भी लेते हैं, कल को रिजर्व बैंक के आदेश का हवाला दे कर वे उन सुविधाओं को कम कर सकते हैं या बंद कर सकते हैं जिन से प्रभावित हो कर ग्राहकों ने खाते खुलवाए.

बैंकों के मुनाफे बढ़ रहे हैं क्योंकि बैंकिंग व्यवस्था आज हर नागरिक का हर खाता, वह चाहे किसी भी बैंक में हो, खंगाल सकती है. सिबिल प्रणाली से किसी को भी बैंकिंग व्यवस्था से बाहर कर के उसे कंगाल बनाया जा सकता है. केवाईसी का बहाना बना कर किसी का भी पैसा जब्त किया जा सकता है. जब बैंकों के पास सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक की शह पर हर तरह के हथियार होंगे तो सरकार की कैशलैस नीतियों और औनलाइन पेमैंट की व्यवस्था का लाभ उन्हें मिलेगा ही और फिर मुनाफा तो होगा ही.

बैंक कस्टमरफ्रैंडली होते हैं, यह सिर्फ कहने की बात है. बैंकों को ढंग से चलाने के नाम पर रिजर्व बैंक असल में बैंकों के ग्राहकों को शिकंजों में कसता है जिस से बैंकों का मुनाफा बढ़ रहा है पर आम ग्राहक पिस रहा है. सभी बैंकों ने मिल कर हर सुविधा की मोटी फीस लगानी शुरू कर दी है जो कभी भी बढ़ाई जा सकती है. केंद्र सरकार और उस के इशारे पर चलने वाला रिजर्व बैंक जनता को चूसने के तरीके अपना रहे हैं और यह पैसा सरकार के बहुत ही घनिष्ठ उन बड़े उद्योगपतियों के पास जा रहा है जो अरबोंखरबों के कर्ज में डूबे हैं लेकिन दुनिया के अमीरों में गिने जाते हैं.

यह बैंकिंग व्यवस्था की देन है कि

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भारत के 2 शहरों– दिल्ली व मुंबई– में दुनिया के अमेरिकी डौलर वाले बिलियनयर्स भरे पड़े हैं जो यूरोपीय व अमेरिकी बिलियनयर्स को चिढ़ा रहे हैं कि देखो, इस गरीब देश में बैंकों से मिलीभगत कर के कितना पैसा जमा किया जा सकता है.

बैंक व्यवसायों का साथ दें, उन के साथ मुनाफा कमाएं, इस पर किसी को एतराज नहीं. पर केंद्र सरकार की शह पर 'वे' सूदखोर महाजन बन गए हैं, यह देश की दुखद हालत है. देश के 2 लाख किसानों की आत्महत्याएं बैंकों के कर्ज के कारण होने वाली वसूली के जोखिम के कारण ही हुई हैं, यह न भूलें.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## जीएसटी या सरकारी पूजा

सरकार ने देश के व्यापारियों पर जीएसटी यह कह कर थोपा था कि इस से व्यापार सुविधाजनक हो जाएगा और एक से बंधी दूसरी चेन वाली बिक्री के कारण न हेराफेरी होगी न इंस्पैक्टर राज होगा. सरकार के दूसरे वादों की तरह यह भी खोखला साबित हो रहा है. जीएसटी एक आफत का पहाड़ बन चुका है और बारबार के रिटर्नों, लंबे नंबरों की मुसीबतों, उलझी टैक्स दरों, सरकारी नोटिसों, ईवे बिलों के चक्करों में व्यापारियों को इस सुविधा की बहुत बड़ी कीमत देनी पड़ रही है.

सरकार चाहे खुश हो कि प्रारंभ में 84,000 करोड़ रुपए के कुल टैक्स से यह 1 साल में बढ़ कर 2 लाख करोड़ मासिक के आसपास होने लगा है. इस में घोटाले होने लगे हैं. बड़े फख्र से अधिकारी कह रहे हैं कि कोलकाता में उन्होंने 5,000 करोड़ रुपए का घोटाला पकड़ा है और जांच व छापे जारी हैं. उन का कहना है कि बिना उत्पादन व बिक्री के बिना जीएसटी पोर्टल से बाकायदा ईवे बिल निकाल कर इनपुट टैक्स क्लेम किया जा रहा है और जम कर सरकार को लूटा जा रहा है.

लूटा सरकार को कम जा रहा है, असल में सरकार लूट रही है जो भारीभरकम टैक्स मैनुअल बना कर अपने अफसरों को ताबड़तोड़ नोटिस जारी करने का अवसर दे रही है. पर नोटिस का मतलब है व्यापारी की सांस रुकना. यह एक तरह की रंगदारी होती है जिस में अपील और दलील से नहीं, मेज के नीचे से लेनदेन से काम चलता है. जीएसटी का ज्यादा लाभ यह हुआ है कि ये मौके राज्य सरकारों के पहले के सेल्स टैक्स अफसरों के हाथों से खिसक कर केंद्र के अफसरों के हाथों में पहुंच गए हैं. मंदिर जितना बड़ा होगा, मूर्तियां उतनी ज्यादा होंगी और उतना ही चढ़ावा ज्यादा दिया जाएगा, इस सिद्धांत पर टैक्सभक्तों को न केवल अब परिक्रमाओं में ज्यादा चक्कर



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

लगाने पड़ रहे हैं, पूरे मंदिर परिसर में शातिरों की भीड़ जमा हो गई है जो भक्तों को तुरंत दर्शन, तुरंत पूजा कराने के नाम पर पैसा वसूलती है. टैक्स सरकारी पूजा जैसा बन गया है.

इस टैक्स पूजापाठी प्रक्रिया में बाहरी लोगों को लाभ होने लगा है. हर व्यापारी को अकाउंटैंट बढ़ाने पड़ रहे हैं और साथ ही, एडवाइजरी और कंसलटैंटों की गिनती भी बढ़ रही है. एडवाइजरी कंपनियां मोटे रिटर्नों पर नियुक्त की जाने लगी हैं. रिस्क इंश्योरैंस भी चालू होने की संभावना है जिस में गुजरे सालों के रीअसैसमैंट पर लगे टैक्स के भुगतान की सुविधा हो.

सरकारी टैक्स किसी भी युग में सही नहीं रहा है. अब जब सरकार पूजापाठियों के हाथों में है तो कोई भी उम्मीद करना बेकार ही है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## धर्मस्थल और मैरिज डैस्टिनेशन

धर्म के नाम पर मानसिक गुलामी का तौरतरीका एक ही नहीं है बल्कि बहुत सारे हैं. हर धर्म की चेष्टा रहती है कि उस के भक्तों का पलपल उस के नियंत्रण में रहे चाहे वे उस नियंत्रण में सुखी रहें या दुखी. धर्म दक्षिणा वसूलने का अधिकार रखता है, नियंत्रण करने का अधिकार रखता है लेकिन मुसीबतों से छुटकारा दिलाने का उस का दायित्व नहीं होता.

चारधाम यात्राओं के कारण उत्तराखंड और्कियोलौजिकल डिजास्टर की ओर बढ़ रहा है और नए निर्माणों के कारण वहां की खोखली जमीन धंसने लगी है. धार्मिक स्थलों को अब केवल स्वर्ग पाने की सीढ़ी नहीं बनाया जा रहा बल्कि डैस्टिनेशन मैरिजों का केंद्र भी बनाया जा रहा है. मजेदार बात यह है कि ये विवाह रिजौर्टों में नहीं, मंदिरों में हों, ऐसा प्रचारित किया जा रहा है. उखीमठ के ओंकारेश्वर मंदिर में ऐसा ही एक मंडप बनाया गया है.

धर्मप्रचार चूंकि मौखिक प्रचार से चलता है और लोग उस की असलियत छिपा कर उस का बड़ा गुणगान करते हैं, इसलिए यह सफल भी होगा. जो भक्त होते हैं वे सब कष्ट सह लेते हैं पर किसी परेशानी को वे होंठों तक नहीं लाते.

विवाह दो जनों का आपसी समझौता है. इसे सदियों से धर्मों ने कब्जे में ले लिया है. धर्म ने नियम भी बना डाले और उन्हें लागू भी करवा डाला. धर्म के दखल से विवाह सुखी हुए हों, ज्यादा चले हों, कोई विधुर न हुआ हो, बच्चे हुए हों, जो बच्चे हुए वे सभी स्वस्थ हुए हों इस सब की गारंटी किसी धर्म ने नहीं ली. शादी पर रिश्तेदारों, दोस्तों का जमावड़ा तो हो जाता है पर बाद में कोई तकलीफ होती है तो सब कन्नी काट जाते हैं.

धर्म न तो बाल विवाह रोक पाया, न दहेज रोक पाया, न आत्महत्या के अभिशाप से औरतों को मुक्ति दिला पाया, न औरतों को सौतनों से बचा पाया. दरअसल धर्म की ऐसी कोई रुचि भी नहीं थी कि विवाह बाद सबकुछ ठीक रहे.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

शिवपार्वती और रामसीता के विवाहों तक में जब विवाद होते रहे तो कलियुग के पुजारीपंडे भला क्यों कोई गारंटी लेंगे पर विवाह के समय वे नए दंपती को लूटने में आगे रहते हैं.

विवाह जब से होटलों और रिजौर्टों में होने लगे हैं, शहरों के बीच बनी धर्मशालाओं में विवाह का धंधा लगभग चौपट हो गया है. जो शानबान ये होटल या रिजौर्ट उपलब्ध कराते वह मंदिर या धर्मशाला में संभव नहीं. सो, लोग छिटकने लगे और एक विवाह में धर्म के दुकानदारों को बहुत छोटा सा अंश ही मिलने लगा. सो, अब उत्तराखंड या अन्य धार्मिक स्थल, जो शहरों से कुछ दूर हैं और जिन के आसपास मंदिरों की बड़ी जमीन है, डैस्टिनेशन मैरिज के लिए हाथपैर मार रहे हैं. उन्हें व लोगों को लालच दिया जा रहा है कि भगवानों की नजरों के नीचे हुए विवाह ज्यादा सुखी होंगे.

ऐसे भक्त लाखों में हैं जो विवाह में मंदिरों को इस्तेमाल कर के अपने को धन्य समझेंगे. इस्कौन, जो आधी विदेशी संस्था है और जिस का प्रबंधन पढ़ेलिखे कुछ देशी, कुछ विदेशी लोगों ने हथिया लिया, विवाह आयोजन बड़ी सफलता से करा लेता है. उन्हें प्रबंधन की कला आती है. उन्होंने तो मंदिर ही इस तरह बनाए हैं कि उन में 400-500 लोग ठहराए जा सकें. पूजाओं के दिनों में वहां काफी लोग ठहरते हैं और अब तो वहां शादियां कर के भी ठहरने लगे हैं.

अब बाकी मंदिर भी यही करेंगे, कुछ करने भी लगे हैं. जिन के पास खाली जगह है वे वहां आकर्षक टैंट लगाने लगे हैं. वहां चूंकि पैसा सीधे ज्यादा नहीं लिया जाता, इसलिए परिवार को लगता है कि काम सस्ते में हो रहा है. हालांकि, मंदिर के प्रबंधन वाले एक तो हर बराती से मूर्ति के सामने चढ़ावे के तौर पर कुछ पा ही जाते हैं और फिर बरात का नामपता जमा हो जाता है, सो महीनोंसालों तक वे मार्केटिंग करते रहते हैं. ईसाइयों में तो हर विवाह चर्च में ही होता है, वहां प्रीस्ट बाहर कम जाता है, लोग विवाह कराने चर्च में आते हैं.

बहरहाल, शादी के बहाने यह अच्छी कमाई है जिसे हिंदू मंदिर अब तक हासिल नहीं कर रहे थे. अब यह शुरू हो गया है. और विवाह कराने वाला तो धर्म का एजेंट ही होगा, स्थान और खानेपीने की व्यवस्था भी अब उसी के पास होगी. वहीं, इस विवाह में दहेज नहीं होगा, बाद में पति का रौद्र रूप नहीं होगा, इस की कोई गारंटी नहीं. सुविधा केवल विवाह के दिन के लिए है. विवाह के बाद की सर्विसिंग चाहिए तो उस के लिए अलग से खर्च करना पड़ेगा. ●

**सही व सटीक विचार**

सही व सटीक विचारों के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.

**Subscription.mag@delhipress.in** पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# अग्रलेख

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# संविधान की शक्ति गुलामी और भेदभाव से मुक्ति

• भारत भूषण श्रीवास्तव

संविधान एक बहुत बड़ी ताकत के रूप में स्थापित हो चुका है जो लोगों को हर तरह की सुरक्षा देता है. यह दस्तावेज सभी के अधिकारों की असल गारंटी है. इस के छिनने की चर्चाभर से आम लोग बेचैन हो उठते हैं क्योंकि वे घुटन और शोषण के दौर में वापस नहीं जाना चाहते. तो फिर क्यों इस पर हिंदूवादी आएदिन बवंडर मचाते रहते हैं, पढ़िए इस खास रिपोर्ट में.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

इस बार के लोकसभा चुनाव प्रचार में जो हलकापन देखने में आया उसे छिछोरापन कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी. हद तो यह भी थी कि राजद नेता तेजस्वी यादव के मांसमछली खाने तक को मुद्दा बनाने की कोशिश की गई. आम लोगों की दिलचस्पी पहले से ही इस आम चुनाव में नहीं थी, ऊपर से घटिया चुनावप्रचार ने उसे और उकता कर रख दिया. पहले ही चरण के कम मतदान से विपक्ष और खासतौर से सत्तारूढ़ भाजपा सहित सभी पार्टियां कम मतदान से सकते में आ गई थीं. लिहाजा, वोटर को लुभाने और मतदान बढ़ाने के लिए क्याक्या हथकंडे व टोटके नहीं अपनाए गए, यह बहुत जल्दी भूलने वाली बात नहीं है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भाजपा को जब समझ आ गया कि धर्म, हिंदुत्व और राममंदिर का कार्ड उम्मीद के मुताबिक नहीं चल रहा है तो उस ने बारबार मुद्दे बदले. उस के पास उपलब्धियों के नाम पर गिनाने को कुछ खास नहीं था तो ईडी गठबंधन के पास भी उसे घेरने के लिए आकर्षक मुद्दे नहीं थे. बेमन से वोट करते लोग चौकन्ने तब हुए जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने यह कहना शुरू किया कि भाजपा अगर तीसरी बार सत्ता में आई तो संविधान नष्ट कर देगी.

इस से ऐसा लगा मानो जानेअनजाने में उन्होंने नरेंद्र मोदी और भाजपा की दुखती रग पर हाथ रख दिया है. जिस का न केवल अतीत बल्कि भविष्य से भी गहरा संबंध है. इस के बाद आरक्षण पर घमासान मचा. दोनों ही गठबंधन पूरे प्रचार में एकदूसरे पर आरक्षण खत्म करने और संविधान बदलने का आरोप लगाते रहे.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

400 पार का नारा लगा रहे नरेंद्र मोदी की बौखलाहट तब देखने लायक थी जिन्हें एक झटके में घुटनों के बल आते बारबार यह सफाई देनी पड़ी थी कि मोदी तो छोड़िए खुद बाबासाहेब अंबेडकर भी आ कर कहें तो भी कोई संविधान नहीं बदल सकता. उन्होंने कांग्रेस पर भीमराव अंबेडकर के अपमान और पीठ पर छुरा घोंपने का भी आरोप लगाया और 21 मई को तो पूरे नेहरू खानदान को लपेटे में यह कहते ले लिया कि हम नहीं बल्कि ये लोग बारबार संविधान में संशोधन करते रहे हैं. बकौल मोदी, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संविधान की पहली प्रति डस्टबिन में डाल दी थी क्योंकि उस पर धार्मिक चित्र लगे थे. इमरजैंसी के दौरान भी संविधान को डस्टबिन में डाल दिया गया था. इन आरोपों के जवाब में राहुल गांधी भी अपनी रट पर कायम रहे.

## संविधान को ले कर आरोपप्रत्यारोप

यह सब इतनी तेजी से हुआ कि गैरसवर्णों यानी आरक्षित वर्ग में खासी हलचल मच गई जिस के लिए संविधान उतना ही अहम होता है जितना कि सवर्णों के लिए रामायण और गीता होते हैं. जब एक पब्लिक मीटिंग में नरेंद्र मोदी संविधान की तुलना तमाम धर्मग्रंथों से कर बैठे तो आरक्षित वर्ग का शक और घबराहट दोनों और गहरा उठे.

अब जब सबकुछ सामने है तो तय है कि यह बहस या मुद्दा चुनाव के बाद ही खत्म नहीं हो जाने वाला. यह भी साबित हो गया कि सरकार किसी की भी हो, वह संविधान को खत्म करना तो दूर की बात है उस से बहुत ज्यादा छेड़छाड़ करने की भी हिम्मत नहीं जुटा पाएगी. यह बहुत जरूरी भी था कि संविधान को ले कर दोनों दलों और गठबंधनों का रुख सार्वजनिक तौर पर

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

विपक्ष, खासकर राहुल गांधी ने संविधान की बहस छेड़ कर मानो सत्ता पक्ष को बैकफुट पर ला दिया हो.

स्पष्ट हो कि भले ही जरूरत के मुताबिक इस में मामूली फेरबदल होता रहे लेकिन इस की नींव और बुनियादी ढांचे से कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी.

संविधान को ले कर हुए आरोपप्रत्यारोपों को केवल सियासी नजरिए से देखना एक नादानी वाली बात होगी. वजह, इस ने भारतीय समाज में वे बदलाव किए हैं जिन की कल्पना भी आजादी के पहले कोई नहीं कर सकता था. लेकिन एक निराशाजनक बात जो आज भी साफसाफ नजर आती है, वह यह है कि संविधान भारतीय समाज की पौराणिक मानसिकता नहीं बदल पाया. भारतीय संविधान की मिसाल दुनियाभर में दी जाती है लेकिन भारत में उतनी नहीं जितनी कि दी जानी चाहिए. मुमकिन है इस की वजह इतनी भर हो कि सवर्णों की नजर में इस दस्तावेज का गैरजरूरी होना हो और गैरसवर्णों की नजर में खुद के लिए एक रक्षाकवच जो उन के अधिकारों की हिफाजत करने के साथ समानता, स्वतंत्रता, न्याय वगैरह का अधिकार देता है.

## देश का मूल संविधान

संविधान का बनना और उस का लागू होना आसान काम नहीं था क्योंकि एक बहुत बड़ा वर्ग, जो मुख्यधारा में था, इस के विरोध में था. इस वर्ग का अंगरेजों से भी पहले समाज पर राज चलता था यानी उन की हुकूमत चलती थी. जाहिर है, यह वर्ग सनातनियों का था जिन का इकलौता मकसद आज भी देश को हिंदू राष्ट्र बनाना है, हालांकि हिंदू राष्ट्र के हिमायती और पैरोकार अब डगमगाते दिख रहे हैं लेकिन उन्होंने अपनी जिद या कोशिशें छोड़ दी हों, ऐसा कहने की कोई वजह नहीं. लेकिन ऐसा कहने की बहुत वजहें हैं कि उन के पास इस के सिवा दूसरा कोई काम या मकसद है ही नहीं.

संविधान बनाने वाली टीम में तरहतरह की विचारधारा वाले लोग, मसलन कांग्रेसी, वामपंथी समाजवादी, कम्युनिस्ट और मध्यमार्गी वगैरह शामिल थे लेकिन

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

खुली विचारधारा के नेताओं ने लोकतांत्रिक मूल्यों को आधार बना कर संविधान बनाने में योगदान दिया, जिस में भीमराव अंबेडकर और जवाहरलाल नेहरू अहम थे.

कट्टर हिंदूवादियों ने खुद को इस से दूर रखा था.

40 के दशक में महात्मा गांधी, भीमराव अंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे दर्जनों नेता विदेशों से पढ़ कर आए थे, लिहाजा उन में अपनेअपने आइडियों से ही सही, देश को नए तरीके से गढ़ने का जज्बा था. उन के दिमाग में नए दौर की रोशनी थी. कुलजमा उन में आदमी को आदमी समझने का सलीका और तमीज थी.

जब संविधान को लिखने और संपादित करने की बात आई तो इस के केंद्र में 2 नेता ही प्रमुखता से रह गए. पहले थे डाक्टर भीमराव अंबेडकर और दूसरे जवाहरलाल नेहरू. हालांकि संविधान को तैयार करने में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, डाक्टर राधाकृष्णन, के एम मुंशी, वल्लभभाई पटेल, राजकुमारी अमृत कौर, सी राजगोपालाचारी, जे बी कृपलानी, हंसा मेहता, बी आर राजन, अल्लादी कृष्णा स्वामी अयंगर वगैरह की भूमिकाएं भी गौण नहीं थीं लेकिन इन दोनों (अंबेडकर और नेहरू) जितनी अहम न थीं. ये दोनों विकट के प्रतिभावान, महत्त्वाकांक्षी और बदलाव के हिमायती थे. जबकि दोनों में भारी वैचारिक और राजनीतिक मतभेद भी थे जिन्हें उन्होंने संविधान निर्माण में आड़े नहीं आने दिया.

धोतीकुरता और तिलकधारी नेताओं की भीड़ में ये दोनों अलग ही दिखते थे. ये सूटबूट वाले नेता थे जिन में फर्क यह भी था कि अंबेडकर धर्म सहित दूसरे विषयों पर रिसर्च और तर्क ज्यादा करते थे जबकि नेहरू सीधे निष्कर्ष देते थे. इस मिजाज के चलते एक वक्त में उन के भी अर्धतानाशाह हो जाने की पूरी गुंजाइश थी लेकिन वह लोकतांत्रिक और संवैधानिक दबाव ही था जिस ने उन्हें जरूरत से ज्यादा छूट नहीं दी.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## जारी है सनातनियों से लड़ाई

1945 आतेआते यह स्पष्ट हो चुका था कि अंगरेज भारत छोड़ देंगे लेकिन भारत को भगवान भरोसे नहीं छोड़ जाएंगे. इस के लिए भारत को एक संविधान और चुनी गई सरकार के अलावा मानवाधिकारों और कानून सहित वे तमाम गारंटियां लोगों को देनी होंगी जो यूरोपीय देशों में दी जाने लगी थीं. यानी एक व्यवस्थित लोकतांत्रिक देश बनना होगा. तब शीर्ष भारतीय नेताओं ने अपने वैचारिक और सैद्धांतिक मतभेद त्यागते एकजुट हो कर तय किया कि जैसे भी हो आजादी ले ली जाए. ऐसा हुआ भी जिस में पाकिस्तान बनने की कहानी भी शामिल है जिस का अफसाना इतना भर है कि मुसलमान अलग देश चाहते थे लेकिन



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## संविधान ने दिया दलितों को सम्मान

- हम मंदिरों में किसी को भी जाने की सलाह नहीं देंगे लेकिन सार्वजनिक स्थान होने के नाते किसी को केवल हिंदू मंदिर में न जाने दिया जाए, यह पौराणिक भेदभाव सदियों से चला आ रहा है जिसे संविधान के अनुच्छेद 25 (2) ने समाप्त कर दिया.
- संविधान की बदौलत दलितों को 1955 के अनटचेबिलिटी कानून से अछूत होने के बिल्ले से मुक्ति मिली.
- अनुसूचित जातियों के लिए 1989 का कानून भी संविधान के संरक्षण के कारण बना जिस में पब्लिक प्रौपर्टी पर किसी को निम्नजाति में जन्म लेने के कारण रोका नहीं जा सकता था.
- संविधान ने तो दलित, अछूतों के मंदिरों में पुजारी बनने के रास्ते भी खोल डाले हालांकि पुजारी बन कर वे दलितों या सवर्णों का कोई भला नहीं करने वाले थे.
- अनुसूचित जातियों व जनजातियों को आरक्षण संविधान ने दिलाया जो सरकारी नौकरियों और शिक्षा संस्थानों में आज भी लागू है. आरक्षण विरोधी इसे हटाने के लिए ही संविधान के बदलने की बात कर रहे हैं. सदियों से समाज द्वारा कुचले लोग मुट्ठीभर नौकरियों व स्कूलों में सीटों पर कुछ को मंजूर नहीं हैं.
- संविधान दलितों, पिछड़ों की एक बड़ी ताकत है जिसे कमजोर करने की कोशिश पिछले सालों में कौन्ट्रैक्ट नौकरियां या लेटरल अपौइंटमैंट के जरिए कम करने की कोशिश भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा की जा रही है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel Join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

उन में हिंदुओं की तरह धार्मिक और जातिगत मतभेद तब नहीं थे.

40 का दशक दुनियाभर में उथलपुथल से भरा था. भारत में यह कुछ ज्यादा थी क्योंकि कोई भी इस बाबत आश्वस्त नहीं था कि आजादी अगर मिली तो वह बहुत ज्यादा दिनों तक कायम रह पाएगी. इस हताशा और निराशा के पीछे छिपी वजहें थीं धर्म और घोषित ब्राह्मण राज, जिस में दलितों (तब पिछड़े भी दलितों यानी शूद्रों में शुमार किए जाते थे), आदिवासियों और सवर्ण औरतों की स्थिति जानवरों व गुलामों सरीखी थी. यह स्थिति लंबे समय तक रही और कमोबेश आज भी है.

इस बारे में 'सरिता' इकलौती पत्रिका है जो लगातार 70 सालों से पाठकों को आगाह करती रही है. इसलिए यह धर्म के दुकानदारों और ठेकेदारों की आंखों में चुभती भी रही है. सरिता ने हमेशा ही तथ्य और तर्क आधारित लेखन व पत्रकारिता की है. यह आवश्यक नहीं कि उस के सभी पाठक प्रकाशित सभी रचनाओं और संपादकीय 'सरित प्रवाह' से हमेशा सहमत हों लेकिन उन की असहमति को भी सरिता ने जगह दी है और उन की आपत्तियों व आलोचनाओं का यथोचित उत्तर हमेशा दिया है और आगे भी देती रहेगी. सरिता का डिजिटल संस्करण भी उस के प्रिंट संस्करण की तरह लोकप्रिय हो कर उत्सुकता और दिलचस्पी से पढ़ा जाता है. इस में रोज सामयिक मुद्दों पर नईनई रचनाएं पाठकों को पढ़ने को मिलती हैं.

समाज और परिवारों को अपने संविधान



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

यानी धर्मग्रंथों, उस में भी खासतौर से मनुस्मृति, से हांकने वालों से 40 के दशक में कोई लड़ पाया था तो वे अंबेडकर और नेहरू ही थे, जिन के विचार धर्म के बारे में बहुत स्पष्ट थे. थोड़े से में भी इन के विचारों को देखें तो समझ आता है कि एक दफा अंगरेजों से लड़ कर उन के खिलाफ जनसमर्थन तैयार करना आसान काम था बनिस्बत इन देसी शासकों के.

1936 में लिखी अपनी आत्मकथा 'टुवर्ड्स फ्रीडम' के पेज 240-41 पर जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, 'भारत और दूसरी जगहों पर जिसे धर्म कहा जाता है कम से कम जिसे संगठित धर्म कहा जाता है उस के तमाशे ने मुझे हमेशा आतंकित किया है और मैं ने बारबार उस की भर्त्सना की है और उन से मुक्ति की बात की है. लगभग हमेशा ही उस ने वहम और प्रतिक्रिया, हठधर्मिता और कट्टरता, अंधश्रद्धा, शोषण और निहित स्वार्थी हितों को बचाए रखने की हिमायत की है.'

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## अंबेडकर ज्यादा आक्रामक थे

जवाहरलाल नेहरू के मुकाबले भीमराव अंबेडकर हिंदू धर्म में पसरे भेदभाव छुआछूत, शोषण और पितृसत्ता के खिलाफ ज्यादा मुखर थे. ऐसा इसलिए कि शूद्र होने के नाते उन्होंने धार्मिक और जातिगत अत्याचारों को बहुत नजदीक से देखा और भुगता भी था. उन्होंने इस 'बीमारी' का निदान ही नहीं, बल्कि उपचार भी किया जो संविधान की शक्ल में सामने आया भी. यह और बात है कि बीमारी कैंसर सरीखी है जो आज भी मुंहबाए खड़ी है.

अपने आखिरी दिनों में 14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर में अंबेडकर ने हिंदू धर्म छोड़ कर बौद्ध धर्म अपना लिया था. तब उन के साथ लगभग 5 लाख हिंदू बौद्ध हो गए थे. यह उतनी अहम बात नहीं है जितनी यह कि हिंदू धर्म और हिंदू राष्ट्र के बारे में उन की राय, चिंतन या दर्शन, कुछ भी कह लें, क्या था. बिलाशक वह आज भी प्रासंगिक और मौजूद है जिस की छाप संविधान पर दिखती भी है.

तब उन्होंने 22 प्रतिज्ञाओं की घोषणा की थी जिन के मुताबिक वे और उन के अनुयायी किसी हिंदू देवीदेवता का पूजनपाठ नहीं करेंगे; व्रत, उपवास, श्राद्धकर्म नहीं करेंगे और ब्राह्मण से किसी भी तरह का धार्मिक कर्मकांड नहीं कराएंगे वगैरहवगैरह. इस के पहले 25 दिसंबर, 1927 को उन्होंने महाराष्ट्र के कोलाबा (अब रायगढ़) में ब्राह्मणवादियों के संविधान मनुस्मृति की प्रतियां जलाते समय कहा था कि भारतीय समाज में जो कानून चल रहा है वह मनुस्मृति पर आधारित है. यह एक ब्राह्मण पुरुष सत्तात्मक भेदभाव वाला कानून है, इसे जला कर खत्म किया जाना चाहिए.

उन्होंने यह काम जानबूझ कर बाकायदा वैदिक तौरतरीकों से ही किया था. मनुस्मृति जलाने के लिए एक वेदी बनाई गई थी जिस में चंदन की लकड़ियां डाली गई थीं. वेदी के आसपास 3 बैनर लगे थे जिन पर लिखा था- 'मनुस्मृतिदहन भूमि', 'छुआछूत का नाश हो' और तीसरे पर लिखा था- 'ब्राह्मणवाद को दफन करो'.

मनुस्मृति के पेज एकएक कर फाड़े गए थे और उन की आहुतियां ठीक वैसे ही दी गई थीं जैसे यज्ञ और हवन में हवन सामग्री की दी जाती है. कहींकहीं आज भी दलित समुदाय के लोग और संगठन 25 दिसंबर को मनुस्मृति दहन दिवस समारोहपूर्वक मनाते हैं, जिस पर स्वाभाविक तौर पर बवाल मचता है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

इस से फर्क क्या पड़ा, यह और बात है लेकिन तब अंबेडकर ने बड़े दिलचस्प तर्क दिए थे. मसलन, गांधी ने विदेशी वस्त्रों की होली क्यों जलाई थी, न्यूयौर्क में मिस मेयो की मदर इंडिया पुस्तक को क्यों जलाया गया था, साइमन कमीशन का बहिष्कार क्यों किया गया था आदि. मनुस्मृति का दहन उस का विरोध जताने का तरीका है और मनुस्मृति को पूजने

संविधान निर्माता डा. भीमराव अंबेडकर ने 25 दिसंबर, 1927 को जातिवाद और भेदभाव से भरी मनुस्मृति की प्रति जलाई, जिसे दलित समाज आज तक फौलो करता है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वाले जातिव्यवस्था के समर्थक हैं. महार जाति में पैदा हुए भीमराव बचपन से विभिन्न ज्यादतियों के शिकार, साक्षी और भुक्तभोगी भी थे लेकिन उन की भड़ास इस बार इसलिए फूटी थी क्योंकि एक तालाब से दलितों को पानी भरने से दबंगों ने रोका था जो उन दिनों देशभर में आएदिन की बात थी.

लेकिन यह भड़ास बहुत तार्किक थी. उन्होंने तब मनुस्मृति जलाने की तुलना फ्रांस की सामाजिक क्रांति से करते हुए कहा था कि लुईस 16वें ने 24 जनवरी, 1789 को जनप्रतिनिधियों की मीटिंग बुलाई थी जिस में राजा और रानी मारे गए थे, उच्चवर्ग के लोगों को परेशान किया गया था और कुछ मारे भी गए थे. बाकी भाग गए और अमीर लोगों की संपत्ति जब्त कर ली गई थी. इस से फ्रांस में 15 साल का लंबा गृहयुद्ध चला था.

लोगों ने इस क्रांति के महत्त्व को नहीं समझा है. यह क्रांति केवल फ्रांस के लोगों की खुशहाली की शुरुआत नहीं थी बल्कि इस से पूरे यूरोप और दुनिया में क्रांति आ गई थी. उन्होंने पेट्रोशियंज का उदाहरण भी दिया था कि कैसे धर्म के नाम पर प्लेबियंस को बेवकूफ बनाया गया था.

## दरके हैं भेदभाव

यह सोचना ही अपनेआप में दुष्कर है कि ब्राह्मणों के दबदबे वाले उस दौर में उन्होंने अंतर्जातीय शादियों की जरूरत पर यह कहते जोर दिया था कि जातिप्रथा को इसी से तोड़ा जा सकता है. हालांकि इस दिशा में कुछ खास नहीं हुआ है. 1955 के हिंदू विवाह कानून में विवाह में जाति की शर्त को समाप्त ही कर दिया गया. दलित सवर्णों में रोटीबेटी के संबंध अपवादस्वरूप ही देखने को मिलते हैं और उन में से भी आधे धार्मिक और जातिगत पूर्वाग्रहों के चलते आधे रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं. लेकिन आज किसी की हिम्मत नहीं कि वह पब्लिक ट्रांसपोर्ट में बराबर वाले की जाति पूछ कर उस से उठने को कह सके.

इस का यह मतलब नहीं कि अंबेडकर की कोशिशें और सुझाव अव्यावहारिक थे बल्कि यह है कि ब्राह्मणों और दूसरे कुछ सवर्णों ने वक्त रहते इस खतरे को भांप लिया था और होशियार हो गए थे. उन का खुला विरोध हर स्तर पर तब भी हुआ था और आज भी होता रहता है. जातपांत, छुआछूत, धार्मिक और दीगर भेदभाव अगर पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं तो दरके तो हैं.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## संविधान ने दी महिलाओं को मजबूती

- सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 14 की व्याख्या करते हुए कहा कि औरतों को सेना में परमानैंट कमीशन का अधिकार है.
- और्केस्ट्रा बैंड में कितनी औरतें नाचेंगी जैसे मनमाने सरकारी आदेश को संविधान के तहत कूड़े में फेंक दिया गया.
- रेप के मामलों में टू फिंगर टैस्ट संविधान के खिलाफ माना गया क्योंकि यह बलात्कार की पीड़िता की डिगनिटी के खिलाफ है और अनुच्छेद 21 का उल्लंघन है.
- संविधान के अनुच्छेद 14 ने ही अविवाहित युवतियों को गर्भपात कराने का कानूनी हक दिया वरना उन्हें अपनी जिंदगी क्रूर दाइयों के हवाले करनी पड़ती थी.
- अनुच्छेद 21 ने ही एक औरत को अपनी मरजी से ऊंची या नीची जाति वाले पुरुष से विवाह का हक दिया.
- इसी अनुच्छेद ने पत्नी पर पति के मालिक होने के हक से मुक्ति दिलाई जो भारतीय दंड संहिता की धारा 497 में पत्नी के प्रेमी को सजा दिलाने का हक रखता था.
- संविधान ने ही औरतों को पति के बराबर एक बच्चे के अभिभावक बनने का हक दिलाया है.
- संविधान के अनुच्छेदों 15 व 21 के कारण कार्यस्थल पर औरतों को छेड़छाड़ से मुक्ति के प्रावधानों का संरक्षण मिला है.
- संविधान ने ही एक एयर होस्टेस को शादी के बाद भी नौकरी पर बने रहने का हक दिया जबकि तब सरकारी कंपनी एयर इंडिया का नियम था कि विवाहित युवतियां यह नौकरी नहीं कर सकतीं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## ऐसा क्या है मनुस्मृति में

असल में सारे फसाद की जड़ भीमराव अंबेडकर मनुस्मृति को ही मानते थे हालांकि दूसरे धर्मग्रंथों से भी वे नाखुश थे. लेकिन वे मनुस्मृति की तरह उन आदेशों और निर्देशों का संकलन नहीं थे जिन्हें कानून का दर्जा दे दिया गया था. जगहजगह शूद्रों को प्रताड़ित करने की बात मनुस्मृति में अधिकारपूर्वक कही गई है और जगहजगह ही ब्राह्मण को महज जाति की बिना पर पूजनीय, भगवान का दूत या प्रतिनिधि बताया गया है.

शिक्षित तो शिक्षित, अशिक्षित दलित भी जानतासमझता है कि ब्राह्मणों के पास एक ऐसी किताब है जिस में यह सब लिखा हुआ है और यह भगवान ने लिखवाया है कि छोटी और नीच जाति में पैदा होना पिछले जन्म के पापों का फल है जिस की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी. ब्राह्मण की गुलामी ढोना और मुफ्त में सेवा करना इन में से एक है जिस से पाप कटते हैं और अगर ऐसा नहीं किया तो अगले जन्म में कुत्ता, सूअर या किसी दूसरे पशु योनि में जन्म लेना पड़ेगा.

लेकिन सवर्ण महिलाओं को आज तक यह एहसास नहीं कि उन की शूद्रों सरीखी पारिवारिक और सामाजिक हैसियत की वजह भी यही मनुस्मृति है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

दूसरे धर्मग्रंथों में तो उस की टुकड़ेटुकड़े नकलभर है जिसे सवर्ण महिलाएं बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से रोज बांचती हैं, पूजापाठ करती हैं और व्रतउपवास भी करती हैं. यह हैरत और तरस खाने वाली बात है. एक बड़ा फर्क उन में और शूद्रों में शुरू से ही यह रहा है कि वे पीरियड्स के दिनों को छोड़ कर अछूत नहीं मानी जातीं और शूद्र उन की तरह धार्मिक आयोजनों की कलश यात्राओं में सिर पर भार ढोती नजर नहीं आतीं. यानी शूद्र फिर भी बदतर होने के पैमाने पर सवर्ण महिलाओं से कहीं बेहतर स्थिति में हैं. बकौल मनुस्मृति :

- महिला को किसी भी स्थिति में स्वतंत्र नहीं रहना चाहिए; उसे बचपन में पिता, युवावस्था में भाई और शादी के बाद पति के संरक्षण में रहना चाहिए.
- स्त्रियां दूसरे पुरुषों को आकृष्ट करने और संभोग करने के लिए हमेशा आतुर रहती हैं.
- स्त्रियों में 8 अवगुण हमेशा रहते हैं, इसलिए उन पर भरोसा नहीं करना चाहिए.
- पति चाहे जैसा भी हो, पत्नी को देवता की तरह उस की पूजा करनी चाहिए.
- पति चाहे दुराचारी हो, व्यभिचारी हो और सभी गुणों से रहित हो, तब भी स्त्री को हमेशा पति की सेवा देवता की तरह करते रहना चाहिए.
- स्त्री को संपत्ति रखने का अधिकार नहीं है, वगैरह वगैरह.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## बदहाल हैं महिलाएं

संविधान के संरक्षण में मौजूदा यानी तथाकथित आधुनिक महिला की जिंदगी में कोई खास बदलाव आए नहीं हैं सिवा इस के कि उसे शिक्षा का अधिकार मिल गया है, वह भी इसलिए कि वह नौकरी या व्यवसाय कर पैसा कमा सके और जोजो बदलाव दिखते हैं वे बनावटी हैं. महिला इसी में खुश और संतुष्ट है कि उसे मेकअप करने की आजादी है, गहने पहनने का शौक पूरा हो रहा है और थोड़ीबहुत आजादी घूमनेफिरने की मिल गई है. अगर संविधान न होता तो यह भी न मिलता



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

जैसे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान में औरतों को नहीं मिल रहा.

हकीकत तो यह है कि आज की भारतीय महिला, जो खुद के आधुनिक होने की गलतफहमी पाल बैठी है, दिनभर कोल्हू के बैल की तरह खटती रहती है. सुबह के नाश्ते से ले कर डिनर तक वह कोई 12–14 घंटे काम करती है जिस के एवज में उसे मिलता है तो, बस, एक अदृश्य तिरस्कार और त्याग का उपदेश जो बचपन से ही उस के दिलोदिमाग में भर दिया जाता है कि तुम्हें ही घर और बाकी सब संभालना है. यह इसलिए हो रहा है कि वह संवैधानिक अधिकारों की जगह पौराणिक उत्तरदायित्व को सीने से लगाए बैठी है.

घर के पुरुष जगह पर बैठेबैठे उस पर हुक्म चलाते रहते हैं कि चाय, नाश्ता, खाना लगाओ और तो और, वे पानी तक अपने हाथ से भर कर नहीं पीते. बिरले ही घर होंगे जहां पुरुष बिस्तर ठीक करते हों. कामकाजी महिलाओं पर तो दोहरा भार है. दफ्तर के साथसाथ उन्हें घर के सारे कामकाज करने पड़ते हैं. लेकिन फिर भी कोई पुरुष एक पत्नी को इसलिए छोड़ नहीं सकता कि वह पौराणिक पंडों की कही बातें पूरी नहीं कर रही. यह संविधान की सुरक्षा है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बात यहीं खत्म नहीं होती. पति और बेटे की सलामती के लिए उसे करवाचौथ और संतान सप्तमी जैसे ढेरों व्रत रखने पड़ते हैं. यानी मनुस्मृति, कुछ डिस्काउंट और संशोधनों के साथ ही सही, लागू है और महिलाओं ने इसे शूद्रों की तरह भाग्य और नियति मान लिया है पर उस के लिए धर्म को बुरी तरह बेचा गया है. इस बारे में रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी एक कविता में कहा है जो आज भी प्रासंगिक है–

- हे प्रभु आप ने स्त्री को अपने भाग्य पर विजय प्राप्त करने का अधिकार क्यों नहीं दिया.
- उसे सिर झुका कर इंतजार क्यों करना पड़ता है, सड़क के किनारे थके हुए धैर्य के साथ इंतजार करते हुए.

बिलाशक संविधान महिलाओं को कई हक

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# यह दिया था संविधान ने

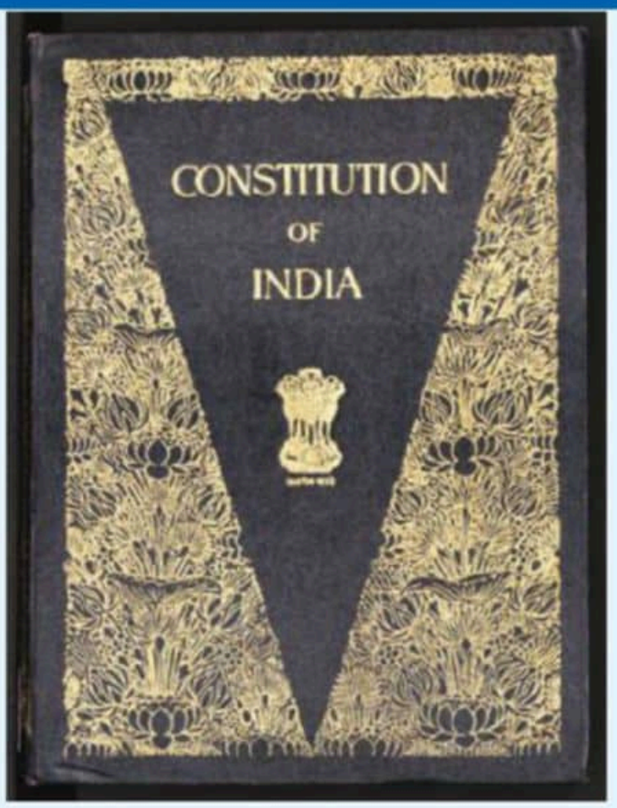


संविधान ने वह सबकुछ दे दिया था जो धर्म ने छीन रखा था. दलितों और औरतों को बराबरी का हक न तो तब मनुवादियों को हजम हो रहा था, न आज हो रहा है. इस पर राजनीति और सरकारी नौकरियों में जातिगत आरक्षण की व्यवस्था से तो उन के कलेजे पर सांप लोटने लगे थे.

संविधान के मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 12 से 35) ही धर्म का दबदबा तोड़ने के लिए काफी थे, जिन में समता, समानता, संस्कृति और शोषण के विरुद्ध अधिकारों ने ही मनुस्मृति के श्लोकों को ध्वस्त कर दिया था. दलितों को आम नागरिक की तरह अधिकारों का दिया जाना भी सवर्णों को रास नहीं आया था.

अनुच्छेद (15) ने तो और भी कहर ढाया था कि जो यह निर्देश देता है कि धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर या इन में से किसी एक आधार पर राज्य भेदभाव नहीं करेगा. सार्वजनिक स्थलों पर सुविधाओं के सभी के लिए उपयोग की बात भी इसी में वर्णित है. अनुच्छेद 15 (4) में पहले संशोधन के तहत जातिगत आरक्षण दिया गया जिसे ले कर हर कभी विवादफसाद होते रहते हैं. सवर्ण हर कभी योग्यता का राग आलापा करते हैं जो महज जाति की बिना पर नौकरियों पर अपना हक समझते थे.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

दलितों के बाद सब से शोषित तबके महिलाओं को मतदान का अधिकार (अनुच्छेद 326) के तहत मिला तो उन में एक अलग आत्मविश्वास पैदा हुआ जो उन्हें उन के अस्तित्व का आभास कराता हुआ था कि हम भी कुछ हैं. इस की खास बात यह थी कि यह अधिकार अमेरिकी महिलाओं को 133 साल बाद मिला था तो भारत में संविधान बनते ही मिल गया था.

पुरुषों के समान अधिकार मिलना भी महिलाओं के लिए एक सरप्राइज गिफ्ट था लेकिन सनातनियों ने जम कर बवाल उस वक्त काटा जब हिंदू कोड बिल वजूद में आया- हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956. इस के तहत हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू अप्राप्तवयता और संरक्षता अधिनियम और हिंदू दत्तक भरणपोषण अधिनियम से महिलाओं को उन के वास्तविक हक मिले जिन में अंतर्जातीय विवाह को कानूनी मान्यता, द्वि विवाह को अपराध घोषित करना, महिलाओं को भी तलाक का अधिकार सहित दूसरे कई अधिकार मिले तो धर्म के ठेकेदार और हिंदूवादी सड़कों पर आ कर कहने व चिल्लाने लगे थे कि इस से हमारा धर्म भ्रष्ट हो रहा है, संस्कृति नष्ट हो रही है, इसलिए इन्हें वापस लिया जाए.

यह तिलमिलाहट बेवजह नहीं थी क्योंकि यह बिल, जो टुकड़ोंटुकड़ों में पारित हुआ, पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर निर्णायक प्रहार था जिस ने संपन्न परिवारों की →



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

देता है लेकिन वे उतने ही अमल में आते दिखाई देते हैं जितने कि शूद्रों के हक, लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि चूंकि संविधान सफल नहीं हो पाया है, इसलिए इसे बदल देना चाहिए. यह मांग अकसर तरहतरह से सनातनी लोग संविधान निर्माण के समय से ही उठाते रहे हैं जो दरअसल, मनुस्मृति को दोबारा थोपने की साजिश है.

जिन किन्हीं ने संविधान के दिए अधिकारों की अवहेलना देख कर भेदभाव फैलाते और वर्णव्यवस्था की हिमायत करते इन धर्मग्रंथों का विरोध किया उन्हें जान से मारने तक की धमकियां मिलीं. इन में एनसीपी के नेता छगन भुजबल भी शामिल हैं जिन्होंने मनुस्मृति के खिलाफ इतनाभर कहा था कि भारत में हम संविधान के मार्गदर्शन में रहना चाहते हैं न कि मनुस्मृति के तहत. उन्हें धमकी मिली थी कि अगर आप मनुस्मृति का विरोध बंद नहीं करते हैं तो आप का हश्र भी दाभोलकर और पानसरे जैसा होगा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ऐसी ही धमकी एक दलित पत्रकार और न्यूज वैबसाइट 'मूक नायक' की फाउंडर मीना कोटवाल को भी मिली थी जिन्होंने मनुस्मृति जलाते हुए अपना एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया था.

मीना कोटवाल

बेहद दिलचस्प बात यह है कि आखिर क्यों छगन भुजबल और मीना कोटवाल जैसों को जान से मारने की धमकी दी जाती है जबकि उन के बराबर ही मनुस्मृति को समारोहपूर्वक जलाने का गुनाह करने वाले भीमराव अंबेडकर को देशभर में घंटेघड़ियाल बजा कर सनातनी न केवल भगवान की तरह पूज रहे हैं

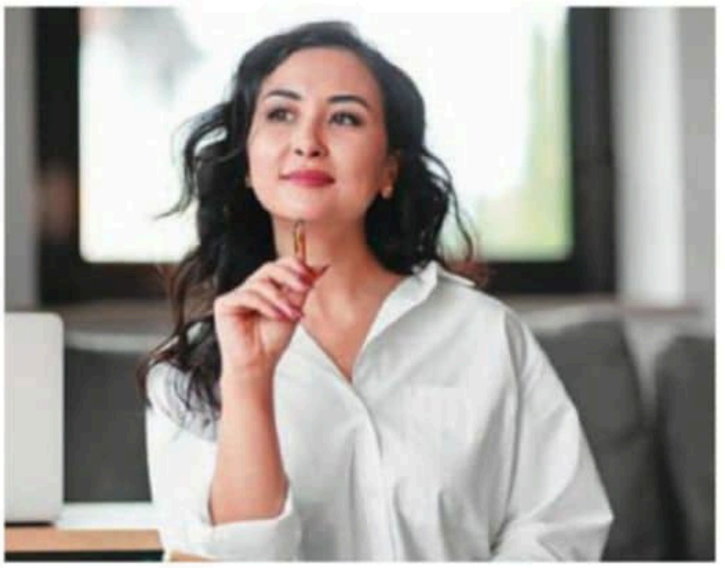

महिलाओं को आज जो आजादी हासिल है वह संविधान की देन है, जिस में लैंगिक भेदभाव को खत्म करने के कानून बनाए गए. आज महिलाएं पढ़लिख कर नौकरी कर पा रही हैं.

बल्कि उन के बनाए संविधान की दुहाई भी दे रहे हैं?

यह दोहरापन दरअसल, बुद्ध को भी विष्णु अवतार घोषित कर देने वाले सनातनियों की एक नपीतुली साजिश है कि जितना ज्यादा हो सके, दलितों को भी पूजापाठी बना दो चाहे वे अंबेडकर की ही पूजा क्यों न करें जिस से संविधान में लिखी बातें उसी किताब में कैद हो कर रह जाएं. पहले उन्हें प्रताड़ित कर गुलाम बनाया जाता था, अब गले लगाने का और पूजापाठ का हक दे कर आखिरकर पाखंड पुराना ही रचा जा रहा है. नहीं तो आरएसएस और हिंदू महासभा सहित तमाम सनातनियों ने संविधान की भ्रूणहत्या करने की कोशिशों में कोई कसर बाकी नहीं रखी थी. इस में सवर्ण तबका तब की तरह आज भी उन के साथ है और सवर्ण औरतें इस की भारी कीमत भी अदा कर रही हैं.

## क्यों जारी है विरोध

संविधान पर मौजूदा चुनावी प्रचार और



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

महिलाओं को हर स्तर पर बराबरी का दर्जा देते उन के पैरों में जकड़ी धार्मिक बेड़ियों से उन्हें आजाद कराया. आज वही संपन्न महिलाएं धर्म की रक्षक भी बनी बैठी हैं क्योंकि उन्हें बताया ही नहीं जाता कि जो संविधान ने दिया है वह किस तरह का हीरा है.

बिलाशक इस के, उम्मीद के मुताबिक, नतीजे नहीं निकले हैं तो इस के लिए भी धर्म की साजिश जिम्मेदार है जिस की समाज पर पकड़ इतनी मजबूत है कि विधवा विवाह अभी भी अपवादस्वरूप ही होते हैं. उन की तरह तलाकशुदा महिलाओं को भी मनहूस करार दे दिया जाता है. महिलाओं की दूसरी शादी आसानी से नहीं होती और परित्यक्ताओं को शक की निगाह से देखा जाता है. लेकिन कुछ नहीं हुआ है, यह कहना भी निराशाजनक बात होगी. जो हुआ है उस में प्रमुख यह है कि अब पुरुष पहले की तरह एक पत्नी के रहते दूसरी शादी नहीं कर सकते, नहीं तो सवर्ण महिला पहले इसी दहशत में पति को परमेश्वर का दर्जा देते पूजती रहती थी कि वह न जाने कब ढोलधमाके के साथ दूसरी, तीसरी, चौथी या पांचवीं ले आए और उसे घर के किसी कोने की कोठरी में धकेल दे या फिर बाहर ही निकाल दे क्योंकि उसे रोकनेटोकने वाला कोई नहीं था. उलटे, इस बाबत प्रोत्साहन देने के लिए एक पूरी सेना साथ देती थी.

लेकिन अब ऐसा नहीं है. संविधान सभी को न्याय की गारंटी देता है. कोई भी पीड़ित थाने और अदालत जा कर न्याय हासिल कर सकता है. मनुस्मृति की दुहाई देने वाले दुखी इसीलिए भी रहते हैं कि अब गरीब, दलित और महिलाओं की हिफाजत संवैधानिक कानूनों के तहत होती है. पहले यह काम राजा, जमींदार, जाति का मुखिया या पुजारी किया करते थे. यही ज्यूडीशियरी मनमाने फैसले धर्मग्रंथों में वर्णित कानूनों के तहत जाति और जैंडर के आधार पर देती थी.

भीमराव अंबेडकर का मानना था कि धर्म, दरअसल, आदेशों और निर्देशों का एक ऐसा संकलन है जिस में कमजोरों और औरतों को न्याय के नाम पर सताया जाता है, उन का शोषण किया जाता है. खूबी तो यह भी है कि संविधान दोषी को भी अपना पक्ष रखने का अधिकार देता है. पौराणिक काल की न्यायव्यवस्था में अपने पक्ष रखने और साक्ष्यों के लिए कोई जगह नहीं थी. राजा, मंत्री और ऋषिमुनि जो फैसला दे देते थे उसे मानना एक बाध्यता थी. यानी वही निचली अदालत से ले कर सुप्रीम कोर्ट तक थे जिन में कैदियों के भी कोई अधिकार नहीं थे लेकिन अब हैं. भले ही कुछ कानून अंगरेजों ने बनाए लेकिन सभी के लिए भेदभाव रहित न्याय संविधान ने सुनिश्चित किया.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

संविधान बनाने वाले कितने दूरदर्शी थे, इस का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उन्होंने किसानों के अधिकारों का भी पूरापूरा खयाल रखा. आजादी के वक्त 80 फीसदी लोग गांवों में बसते थे और इन में से भी कोई 70 फीसदी मजदूर थे. जमीनों पर कब्जा दबंगों का हुआ करता था. शोषण और अत्याचार के हाल तो ये थे कि जमींदार छोटी जाति वालों से बैल की तरह काम लेते थे और उन्हें जिंदा रहने लायक ही खाना देते थे. 1957 में प्रदर्शित फिल्म 'मदर इंडिया' की तरह गांवगांव में सूदखोर लाला सुखीलाल हुआ करते थे जो किसानों के अशिक्षित होने का नाजायज फायदा ब्याज पर ब्याज की शक्ल में उठाते थे ब्रिटिश हुकूमत के पहले. गरीब किसानों की जमीन राजा और दबंग जब चाहे, जैसे चाहे हड़प लेते थे.

संविधान के अनुच्छेद 300 (ए) के तहत सरकार भी आसानी से किसानों की जमीन नहीं ले सकती. हालांकि सब से पहले 1894 में ब्रिटिश सरकार ने भूमि अधिग्रहण अधिनियम 1894 बनाया था लेकिन राजशाही और जमींदारी के दौर में यह बहुत ज्यादा प्रभावी नहीं हो पाया था. नए प्रावधानों के तहत भूमि अधिग्रहण का पहला स्टैप →



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बहस सहित आरोपप्रत्यारोप कोई नई बात नहीं है जिन का निष्कर्ष यही निकलता है कि धार्मिक शासन की मंशा रखने वाले ही इस का विरोध, बदलाव या फिर इसे नष्ट कर सकते हैं. कांग्रेस की मंशा इस में कुछ बदलावों की हमेशा से ही रही है जो उस ने कुछ देश के और कुछ अपनी मनमानी के लिए किए. यहां यह याद रखना बेहद जरूरी है कि संविधान बनाने का हक उसे देश की जनता ने ही दिया था. संविधान सभा के लिए जो सभा निर्वाचित की गई थी उस में उसे तीनचौथाई बहुमत मिला था, इसलिए कांग्रेस संविधान नष्ट करेगी, यह सोचना उतना ही बेमानी है जितना यह कि आरएसएस या भाजपा कभी मनुस्मृति नष्ट करेंगे.

धर्म समर्थक तो संविधान चाहते ही नहीं थे क्योंकि उन के सिर पर तो अनंतकाल से मनुस्मृति रखी हुई थी और आज भी है लेकिन उतने खुलेतौर पर रखने की हिम्मत भाजपाई नहीं जुटा पाए जितनी कि 'इंडिया' के दलों ने संविधान को सीने से लगा कर चुनावप्रचार किया. संविधान के बारे में हिंदूवादियों की राय तो सावरकर ने वक्त रहते ही प्रगट कर दी थी जिस का उल्लेख प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'वुमन इन मनुस्मृति' सावरकर समग्र के वौल्यूम–4 के पृष्ठ 416 पर इन शब्दों में मिलता है–

"भारत के संविधान के बारे में सब से बुरी बात तो यह है कि इस में कुछ भी भारतीय नहीं है...वेदों के बाद मनुस्मृति हमारे हिंदू राष्ट्र के लिए सर्वाधिक पूजनीय है जो प्राचीनकाल से ही हमारे रीतिरिवाज, संस्कृति, विचार व कर्म का आधार बनी हुई है. इस ग्रंथ ने सदियों से हमारी आध्यात्मिक व पारलौकिक उन्नति का पथ प्रशस्त किया है. यहां तक कि

केंद्र में भाजपा सरकार बनने के बाद हिंदू राष्ट्र की मांग जोर पकड़ने लगी है. इस में कोई दोराय नहीं कि इस मांग के पीछे सत्ता का भी समर्थन हासिल है.

आज भी करोड़ों भारतीय अपने जीवन और व्यवहार में मनुस्मृति की मान्यताओं का अनुपालन कर रहे हैं. मनुस्मृति हिंदू लौ है."

जब तत्कालीन हिंदू हृदय सम्राट, हिंदूमहासभा के मुखिया ने बेबाकी से अपनी राय प्रदर्शित कर दी तो भला आरएसएस क्यों खामोश रहता. उस ने 30 नवंबर, 1949 को अंगरेजी के अपने मुखपत्र और्गेनाइजर के अपने संपादकीय में लिखा–

'लेकिन हमारे संविधान में प्राचीन भारत के विशिष्ट संवैधानिक विकास का कोई उल्लेख नहीं है. मनु ने जो कानून बनाया वह यूनानी और फारसी दार्शनिकों से बहुत पहले बनाया. मनुस्मृति में स्पष्टतया वह कानून व्यवस्था आज की तारीख में दुनियाभर के लिए विशेष आदर का विषय है क्योंकि उस में स्वाभाविक आज्ञापालन और निश्चितता बोध के गोपनीय सूत्र हैं. लेकिन हमारे संविधान विशेषज्ञों का ध्यान उधर नहीं गया.'

इस पर किसी ने गौर नहीं किया, उलटे, दुनियाभर में आरएसएस की आलोचना उस

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

किसान को नोटिस देना है और जमीन की जरूरत है ही, इसे भी सरकार को बताना पड़ेगा और कीमत भी बाजारभाव के मुताबिक तय होगी. नोटिस हर जगह जरूरी है. सरकार नागरिक से कभी भी, कुछ भी नहीं छीन सकती. यह और बात है कि कानूनी खामी के चलते बुलडोजर कल्चर भी देश में पनप रहा है जिस के अधिकतर शिकार वही लोग होते हैं जो मनुवादियों को हमेशा से खटकते रहे हैं.

इन सब से भी ज्यादा क्रांति और बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में संविधान के जरिए आए जिस के चलते अब हर कोई पढ़ रहा है वरना तो मनुस्मृति जैसे धर्मग्रंथ तो पढ़ने का हक सिर्फ ब्राह्मणों को ही देते थे. कोई और अगर पढ़ता था तो वह अपराधी माना जाता था और राजा को उसे मौत की सजा तक देने का हक धर्म ने दे रखा था. भीमराव अंबेडकर दलितों और महिलाओं के शोषण और पिछड़ेपन की वजह उन्हें न पढ़ने देने की साजिश को ही मानते थे, इसलिए उन्होंने कहा था कि शिक्षा शेरनी का दूध है, इसे जो पिएगा वह दहाड़ेगा.

संविधान का अनुच्छेद 21 (ए) सभी को शिक्षा की गारंटी देता है. 46वें संशोधन के तहत साल 2002 में 6 से ले कर 14 साल तक के सभी बच्चों को शिक्षा मूल अधिकार के तौर पर दी जाने लगी है, वह भी निशुल्क. इस से जाहिर है, हाहाकारी बदलाव आया है बावजूद इस हकीकत के कि अभी भी सौ फीसदी बच्चे नहीं पढ़ पा रहे हैं. दलितों के पढ़ने को ले कर सवर्ण तबका हमेशा ही एतराज जताता रहा है जो संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों के आगे कसमसा कर रह जाता है.

स्वास्थ्स सेवाएं भी सभी के लिए उपलब्ध हैं वरना तो एक दौर था जब वैद्य सिर्फ सवर्णों का ही इलाज करते थे क्योंकि अछूत शूद्र को छूने से उन्हें पाप लगता था. अब अस्पतालों की सहज उपलब्धता से सभी को इलाज मिल रहा है. हालत यह है कि हजारों की तादाद में दलित डाक्टर ब्राह्मणों को जिंदगी दे रहे हैं. इस से किसी का धर्म भ्रष्ट नहीं हो रहा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ऐसी कई बातों से बदलाव भारतीय समाज में हो रहे हैं तो सिर्फ संविधान की वजह से, जिस पर आएदिन बखेड़ा खड़ा किया जाने लगा है.

की संकीर्णता के बाबत होने लगी. अंगरेजी लेखक द्वय पाउला बाचेटा और शहनाज जे रोउसे ने अपनी किताब 'जैंडर इन द हिंदू नैशन: आरएसएस वुमन एज आइडियोलौग्स' में लिखा भी है कि– 'अंबेडकर ने हिंदू कोड बिल लिखा जिस का मकसद हिंदू पर्सनल लौ में सुधार करना और महिलाओं को पैतृक संपत्ति में अधिकार व अन्य अधिकारों की गारंटी करना था. आरएसएस हिंदू कोड विरोधी बिल का हिस्सा था. माधव सदाशिव गोलवलकर ने घोषणा की कि महिलाओं को बराबरी का अधिकार मिलने से पुरुषों के लिए भारी मनोवैज्ञानिक संकट खड़ा हो जाएगा, जो मानसिक रोग व अवसाद का कारण बनेगा.'

पाउला बाचेटा

## धर्म वालों की बौखलाहट

सहज समझा जा सकता है कि संविधान और फिर हिंदू कोड बिल से सनातनी किस हद तक बौखला कर अनर्गल अनापशनाप बातें करने लगे थे जबकि संविधान उन से कुछ छीन नहीं रहा था सिवा इस के कि अब ब्राह्मण राज और मनुस्मृति का कोई



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वैधानिक मूल्य या महत्त्व नहीं रह गया है. अब जो भी होगा, संविधान और कानून के मुताबिक होगा और सभी इसे मानने के लिए बाध्य होंगे. तब वाराणसी के एक संत राम राज पार्टी के मुखिया करपात्री महाराज ने तो साफ कह दिया था कि मैं एक अछूत का लिखा संविधान नहीं मानूंगा. इस संत ने हिंदू कोड बिल के विरोध में आसमान सिर पर उठा लिया था.

11 दिसंबर, 1949 को भी आरएसएस ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक रैली के जरिए हिंदू कोड बिल का विरोध किया था. एक वक्ता ने तो इसे हिंदुओं के लिए एटम बम तक करार दिया था. इस दिन हिंदू कोड बिल मुर्दाबाद के नारे भी संघियों ने लगाए थे और भीमराव अंबेडकर के पुतले भी जलाए थे. आज वही आरएसएस और उस की राजनीतिक संतान भाजपा अगर संविधान को कांग्रेस से बचाने पर तुल ही गए हैं तो इस से बड़ा मजाक और क्या होगा जबकि हर कभी संविधान को ले कर उन की कसक, बेचैनी, व्यथा, जिसे बकौल गोलवलकर, अवसाद कहना ज्यादा सटीक रहेगा, तरहतरह से सामने आती रहती है जिसे नफरत भी कहा जा सकता है. कुछ चर्चित उदाहरण देखें–

3 अप्रैल, 2016 को उत्तर प्रदेश भाजपा महिला मोरचा की मुखिया मधु मिश्रा ने अलीगढ़ में ब्राह्मण महासभा के होली मिलन समारोह में दलितों की तरफ इशारा करते कहा था, "आज तुम्हारे सिर पर बैठ कर संविधान के सहारे जो राज कर रहे हैं, याद करो वे कभी तुम्हारे जूते साफ करते थे, आज तुम्हारे हुजूर हो गए हैं."

मधु मिश्रा ने इस सभा में और भी काफीकुछ बकबास की थी जिस से भाजपा का संघी चेहरा उजागर हुआ था. उसे ढकने के लिए भाजपा ने उन्हें पार्टी से निष्कासित कर चेहरे पर घूंघट डालने की कोशिश की थी.

संविधान बनने के बाद भाजपा के पैतृक संगठन आरएसएस ने हिंदू कोड बिल का विरोध किया और अंबेडकर का पुतला जलाया.

इन सनातनियों के मन में कितनी नफरत दलित, आदिवासी और मुसलमानों के प्रति भरी है, अगर इस का संकलन किया जाए तो 19वां पुराण तैयार हो जाएगा. लेकिन मोदी राज के दौरान कुछ न भूलने वाले और नाकाबिले माफी अहम वाकेयों का जिक्र जरूरी है जो यह साबित करते हैं कि हम 70–75 सालों में शिक्षित तो हो गए लेकिन सभ्य नहीं हो पाए. हम में से कुछ इंसानियत के सही और लोकतांत्रिक माने क्यों नहीं स्वीकार पा रहे? क्यों वे कुछ यानी भगवा गैंग के छोटेबड़े मैंबर दलितों और मुसलमानों से नफरत करने और उसे जताने का हक कानूनी तौर पर चाहते हैं? क्यों ये लोग संवैधानिक आरक्षण खत्म कर देना चाहते हैं? और इस बाबत अब वे दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को यह कहते डराने व भड़काने लगे हैं कि तुम्हारे हिस्से का आरक्षण छीन कर मुसलमानों को दे दिया जाएगा. दरअसल, इन लोगों को नफरत समानता और बराबरी से है जो

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

संविधान ने दी है, सो, ये लोग, बकौल गोलवलकर, मानसिक रोगियों जैसा बरताव करने से खुद को आज भी रोक नहीं पाते.

तभी तो फरीदाबाद में 2 दलित बच्चों, 11 महीने की दिव्या और ढाई साल के वैभव को जला दिए जाने पर उन्हें न बचा पाने की अपनी सरकार की नाकामी ढकते केंद्रीय मंत्री वी के सिंह ने 22 अक्तूबर, 2015 को कहा था कि कोई अगर कुत्तों पर पत्थर फेंके तो उस के लिए क्या सरकार जिम्मेदार है. यानी उन के मुताबिक मनुस्मृति में गलत नहीं लिखा कि दलित पशुतुल्य हैं और संविधान में गलत लिखा है कि सब बराबर हैं. साल 2002 में झज्जर में जब गौकशी के आरोप में 5 दलित युवकों को विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने मार डाला था तब आचार्य गिरिराज किशोर ने कहा था, हमारे शास्त्रों के हिसाब से गौ का जीवन बहुमूल्य है. संविधान ऐसे दलितों का रक्षक है.

## संविधान पर ही पुनर्विचार क्यों

हिंदूवादियों की मंशा अगर संविधान बदलने की न होती तो वे इस पर पुनर्विचार की बात न करते. इस बार का बवाल तब मचना शुरू हुआ था जब भाजपा सांसदों अनंत हेगड़े और रंजन गोगोई ने आम चुनाव में लोकसभा की 400 सीटें जीत कर संविधान में बदलाव किए जाने की बात कही थी. इस के पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष विवेक देवराय ने 15 अगस्त, 2023 को कहा था कि अब धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, समानता, न्याय और बंधुत्व जैसे शब्दों का कोई मतलब नहीं है, संविधान औपनिवेशिक विरासत है इसलिए इसे हटा कर नया संविधान लिखा जाना चाहिए. यह बेहद खतरनाक मंशा है जिस का उम्मीद के मुताबिक राजनीतिक विरोध हुआ.

इस के पहले सितंबर 2017 में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने भी हैदराबाद में कहा था कि संविधान के बहुत सारे हिस्से विदेशी सोच पर आधारित हैं और जरूरत है कि आजादी के 70 साल बाद इस पर गौर किया जाए. इस के पहले 24 जनवरी, 2016 को तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने भी अहमदाबाद में कहा था कि



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अब आरक्षण पर पुनर्विचार होना चाहिए. उस वक्त भी विपक्षी दल उन सहित पूरी भगवा गैंग पर यह कहते टूट पड़ा था कि ये लोग अपने हिडन एजेंडे को थोपने की कोशिश कर रहे हैं. सीपीआई एम के महासचिव सीताराम येचुरी ने कहा था, 'आरएसएस चाहता है कि हमारा भारत एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य न रह कर, उन के उद्देश्य के मुताबिक, एक हिंदू राष्ट्र के रूप में बदल जाए.'

जबकि जरूरत इस बात की है कि भगवा गैंग मनुस्मृति जैसे भेदभाव फैलाते धर्मग्रंथों पर पुनर्विचार करे कि दरअसल हिंदुओं को वर्ण, जाति और गोत्र में बांटा तो इन्होंने ही है, संविधान ने तो उन्हें, खासतौर से दलितों, आदिवासियों, औरतों और किसानों को, उन के वाजिब हक दिए हैं (देखें बौक्स) जो एक लोकतंत्र की बुनियाद और खूबी सहित खूबसूरती भी हैं.

इसे नष्ट करना या मनमरजी से बदलना अब आसान काम नहीं रह गया है क्योंकि यह संविधान अब आम आदमी की शक्ति है जो धर्मग्रंथों की तरह भ्रमित नहीं करती, भाग्य और चमत्कारों का झांसा दे कर ठगी नहीं करती. आम आदमी की ही भाषा में दो टूक कहा जाए तो इस से जो टकराएगा वह चूरचूर हो जाएगा.

## लेकिन ऐसा होगा नहीं

ऐसा लगता है कि संविधान बनने से ले कर भगवा गैंग उस में बदलाव की बात कर वक्त ही काट रहा है जिस से उसे कहने को एक काम और ब्राह्मणों को दानदक्षिणा मिलती रहे. भगवा गैंग का मकसद सिर्फ हिंदू राष्ट्र का निर्माण करना है, जो भारी बहुमत हासिल करने के बाद भी दुष्कर काम है. भीमराव अंबेडकर की ही हिंदू राष्ट्र को ले कर दी गई इस चेतावनी को याद रखा जाना चाहिए कि हिंदू राष्ट्र बना तो वह वंचितों यानी दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों व सवर्णों की महिलाओं के लिए बड़ी आपदा साबित होगा. हिंदूवादी अंगरेजों से भी ज्यादा क्रूर साबित होंगे. वे धर्म, ईश्वर और पाखंडों के जरिए इन का शोषण करेंगे.

उन की एक यह नसीहत भी याद रखनी जरूरी है कि यदि हम संविधान को सुरक्षित रखना चाहते हैं, जिस में जनता की जनता के लिए और जनता द्वारा बनाई गई सरकार का सिद्धांत प्रतिष्ठापित किया गया है, तो हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम हमारे रास्ते में खड़ी बुराइयों, जिन के कारण लोग जनता द्वारा बनाई सरकार के बजाय जनता के लिए बनी सरकार को प्राथमिकता देते हैं, की पहचान करने और उन्हें मिटाने में ढिलाई नहीं करेंगे. ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# ईरान के कट्टर राष्ट्रपति का दर्दनाक अंत

• नसीम अंसारी कोचर



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हैलिकौप्टर दुर्घटना में ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की मौत पर जहां कुछ देशों ने अफसोस जाहिर किया है तो कई बहुत खुश हैं. इजराइल के कई यहूदी धर्मगुरुओं ने रईसी की मौत पर सार्वजनिक रूप से टिप्पणियां की हैं. तानाशाहों के बारे में लोगों की राय कुछ ऐसी ही होती है और उन का अंत दर्दनाक होता है.

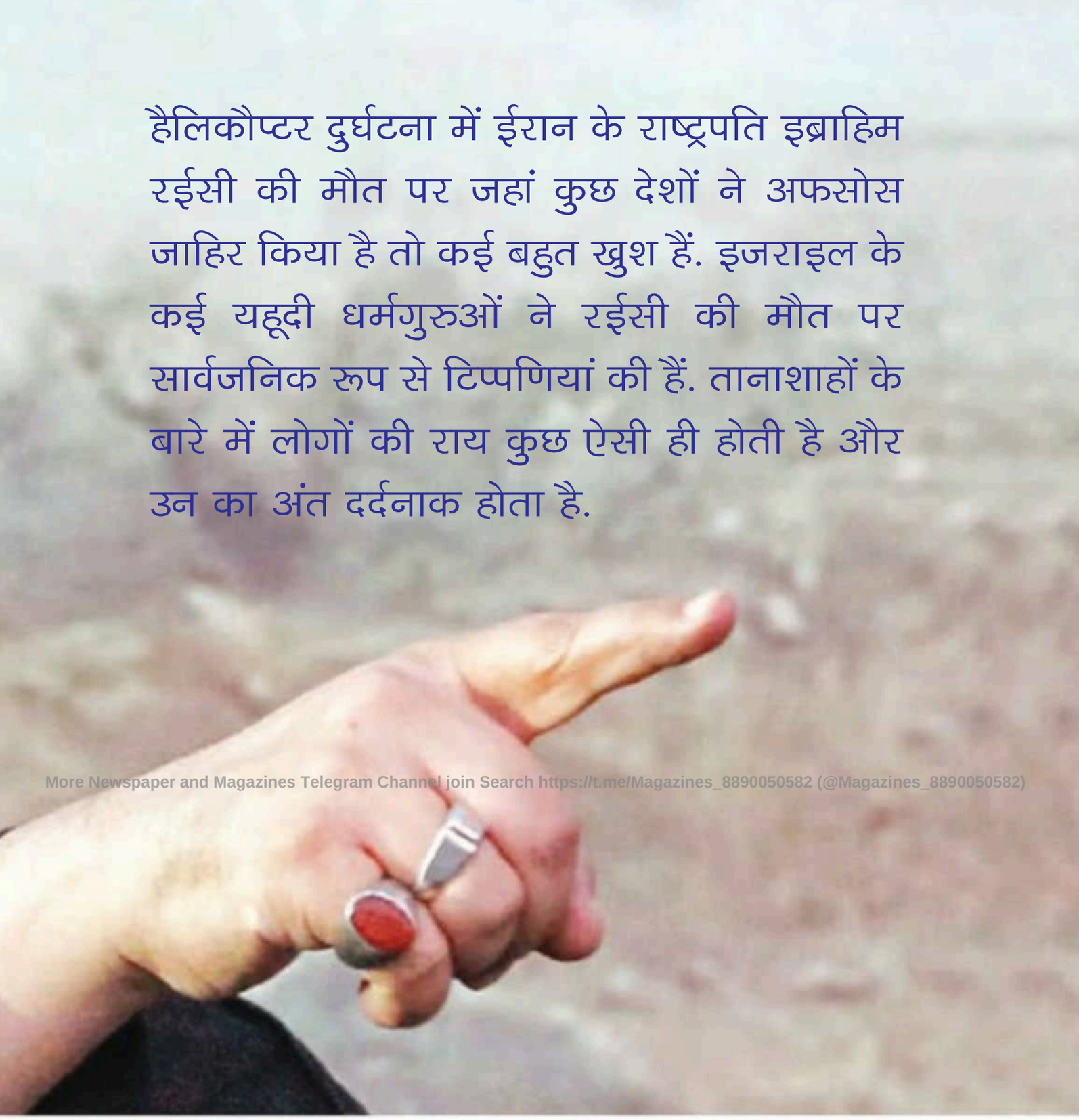

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी का हैलिकौप्टर क्रैश में निधन हो गया. वे 63 साल के थे. अजरबैजान से सटी सीमा पर एक डैम का उद्घाटन करने के बाद लौटते समय उन का हैलिकौप्टर 19 मई की शाम करीब 7 बजे खराब मौसम के चलते लापता हो गया था. हैलिकौप्टर में इब्राहिम रईसी, विदेश मंत्री होसैन अमीर अब्दुल्लाहियान समेत पायलट और को-पायलट के साथ क्रू चीफ, हैड औफ सिक्योरिटी और बौडीगार्ड भी सवार थे. हैलिकौप्टर में मौजूद सभी 9 लोग मारे गए.

राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की मौत पर



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

जहां कुछ देशों ने अफसोस जाहिर किया तो कई बहुत खुश हैं. इजराइल के कई यहूदी धर्मगुरुओं ने रईसी की मौत पर सार्वजनिक रूप से टिप्पणी की है. उन में से एक यहूदी धर्मगुरु मीर अबूतबुल ने राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी को 'तेहरान का जल्लाद' कहते हुए अपनी फेसबुक पोस्ट में आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया. अबूतबुल लिखते हैं, 'वह यहूदियों को सूली पर लटकाना चाहता था, इसलिए ईश्वर ने एक

हिजाब के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का चेहरा बनी महसा अमीनी का ईरान में गुनाह बस यह था कि वह सिर से पांव तक लबादे में ढक कर नहीं रहना चाहती थी.

हैलिकौप्टर क्रैश में उस के और इजराइल से नफरत करने वाले उस के सभी साथियों को सजा दी.' अबूतबुल ने लिखा कि रईसी को ईश्वर का दंड मिला है.

राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की हैलिकौप्टर हादसे में मौत पर सब से ज्यादा जश्न ईरान के कुर्दिस्तान इलाके में मनाया जा रहा है. वहां साकेज शहर में लोग आतिशबाजी कर के रईसी की मौत का जश्न मना रहे हैं. साकेज ईरान में हिजाब के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का चेहरा बनी महसा अमीनी का गृहनगर है. महसा अमीनी वह 22 साल की कुर्द लड़की जिस में जीवन जीने की चाह थी, मगर वह खुद को किसी के आदेश पर सिर से पांव तक लबादे में ढक कर नहीं रखना चाहती थी.

आजादखयाल की महसा अमीनी ईरान की रूढ़िवादी सोच का शिकार हुई और मार डाली गई. महसा ने ईरान में हिजाब के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों में हिस्सा लिया था, जिस के चलते वह ईरान की मोरल पुलिस के निशाने पर आ गई थी. बिना हिजाब के बाहर निकलने पर रईसी की मोरल पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया और बेरहमी से उस की पिटाई की. इतनी बेरहमी से की कि अमीनी ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया. सिर्फ 22 साल की महसा अमीनी के लिए ईरान ही नहीं, बल्कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी लोगों ने अपनी आवाज उठाई. महसा अमीनी के शहर में ईरान के राष्ट्रपति रईसी के खिलाफ लोगों में काफी गुस्सा है, जो अब रईसी की मौत के बाद सामने आ रहा है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## धार्मिक रूढ़िवाद से ग्रस्त

दरअसल धार्मिक रूढ़िवादिता से ग्रस्त, खुद को और खुद के धर्म को ही श्रेष्ठ समझने वाले लाखों इंसानों की मौत के जिम्मेदार तानाशाहों की मौतों पर मानवता अफसोस करने के बजाय संतोष का अनुभव करती है. बेनिटो मुसोलिनी, एडोल्फ हिटलर, जोसेफ स्टालिन, माओत्से तुंग, मुअम्मर गद्दाफी, सद्दाम हुसैन जैसे तानाशाहों का अंत दर्दनाक हुआ और दुनिया ने संतोष की सांस ली.

दुनिया में कई देश हैं जहां धर्म के अंधे तानाशाह लगातार मानवता का खून बहा रहे हैं और दुनिया उन के अंत का इंतजार कर रही है. उन्हें कभी भी किसी अच्छे काम के



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

लिए याद नहीं किया जाएगा. जब भी उन की तसवीर सामने आएगी, वे मासूमों की लाशों के ढेर पर अट्टास करते दिखाए जाएंगे. इस में शक नहीं कि इब्राहिम रईसी भी एक रूढ़िवादी अत्याचारी नेता था. उस का अति रूढ़िवादी इतिहास रहा है और वह अत्याचार के गंभीर आरोपों से घिरा रहा है. दुनिया उसे तेहरान के कसाई के नाम से जानती है.

## कट्टरपंथी नेता की छवि

इब्राहिम रईसी ने राष्ट्रपति बनने से पहले ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनाई के अधीन न्यायपालिका के अंदर विभिन्न पदों पर काम किया. 1988 में ईरानइराक युद्ध के अंत में वे उस समिति का हिस्सा थे जिस ने हजारों राजनीतिक कैदियों को मौत की सजा सुनाई.

साल 1988 में राजनीतिक विरोधियों को खत्म करने के लिए ईरान में 4 सदस्यीय कमेटी का गठन किया था. इन 4 सदस्यों में इब्राहिम रईसी भी शामिल थे. इस कमेटी को ईरान में अनौपचारिक रूप से 'डैथ कमेटी' भी कहा गया. इस समयावधि में राजनीतिक कैदियों को फांसी देने का सिलसिला चला, जिस में, एक अनुमान के मुताबिक, करीब 5,000 राजनीतिक विरोधियों को फांसी दी गई, इन में स्त्री, पुरुष और बच्चे तक शामिल थे.

मारे गए लोगों में अधिकांश लोग ईरान के पीपुल्स मुजाहिदीन संगठन के समर्थक थे. फांसी के बाद इन सभी को अज्ञात सामूहिक कब्रों में दफना दिया गया. मानवाधिकार कार्यकर्ता इस घटना को मानवता के विरुद्ध अपराध बताते हैं. हजारों की संख्या में लोगों को मौत के घाट उतारने के कारण इब्राहिम रईसी को 'तेहरान का कसाई' कहा जाने लगा. इब्राहिम रईसी की क्रूरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि हिटलर की तरह उन्होंने मासूम बच्चों तक को फांसी का हुक्म सुनाया और प्रमुख मानवाधिकार वकीलों को कैद की सजा दी, जिस के चलते अमेरिका ने रईसी पर 2019 से प्रतिबंध लगाया था.

हालांकि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति डा. सैयद इब्राहिम रईसी की मौत पर शोक जताया है. सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा है : "ईरान के राष्ट्रपति डा. सैयद इब्राहिम रईसी के दुखद निधन से गहरा दुख और सदमा लगा है. भारतईरान के द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में उन के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा. उन के परिवार और ईरान के लोगों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना. दुख की इस घड़ी में भारत ईरान के साथ खड़ा है."

इब्राहिम रईसी की छवि हमेशा एक कट्टरपंथी और तानाशाह नेता की रही है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भारत में भी बीते 10 सालों में धार्मिक कट्टरता बढ़ी है. यहां भी देश को तानाशाही की तरफ धकेलने के प्रयास बहुत तेजी से हो रहे हैं. इसलिए रईसी की मौत से भारत के शासक को झटका लगना स्वाभाविक है. मगर एकडेढ़ दशक पीछे चले जाएं तो तानाशाही की शुरुआत से पहले भारत और ईरान का रिश्ता काफी अच्छा रहा है. दोनों काफी सालों से बिजनैस करते रहे हैं. ईरान भारत को कच्चा तेल देता रहा है.

वित्त वर्ष 2014–15 के दौरान भारतईरान व्यापार 13.13 अरब डौलर का था, जिस में 8.95 अरब डौलर का भारतीय इंपोर्ट शामिल था और उस में 4 अरब डौलर से ज्यादा का कच्चे तेल का आयात था. हालांकि साल 2019–20 में ईरान के साथ भारत के व्यापार में तेज गिरावट देखने को मिली थी. विशेष रूप से क्रूड औयल का आयात 2018–19 में 13.53 अरब डौलर की तुलना में घट कर महज 1.4 अरब डौलर रह गया था. भारत ने 2018–19 में लगभग 23.5 मिलियन टन ईरानी कच्चे तेल का आयात किया था.

भारत ईरान से कच्चे तेल के अलावा सूखे मेवे, रसायन और कांच के बरतन भी खरीदता है. वहीं, भारत की ओर से ईरान को निर्यात किए जाने वाले प्रमुख सामान में बासमती चावल शामिल है. वित्त वर्ष 2014–15 से ईरान भारतीय बासमती चावल का दूसरा सब से बड़ा आयातक देश रहा है और वित्त वर्ष 2022–23 में 998,879 मीट्रिक टन भारतीय चावल खरीदा था. बासमती चावल के अलावा इंडिया ईरान को चाय, कौफी और चीनी का भी निर्यात करता है.

इब्राहिम रईसी की मौत से भारत और ईरान के ट्रेड बिजनैस पर कोई असर नहीं देखने को मिलेगा. उस का बड़ा कारण यह है कि भारत और ईरान का रिश्ता काफी पुराना है. हाल ही में रईसी के वक्त चाबहार डील भी हुई है. कहा जाता है कि ईरान काफी समय से भारत के साथ चाबहार डील करना चाह रहा था. इसलिए इस पर भी कोई खास असर नहीं देखने को मिलेगा. हालांकि अगर मिडिल ईस्ट में इस घटना को ले कर टैंशन होती है तब बिजनैस पर थोड़ा असर देखने को मिलेगा और चाबहार के मैनेजमैंट और औपरेशन का काम थोड़ा पिछड़ सकता है.

## तानाशाहों को मिलती हैं दर्दनाक मौतें

जरमन का तानाशाह एडोल्फ हिटलर अपनी जातिधर्म को दुनिया में सब से श्रेष्ठ समझता था. उस ने लिखा : "जरमन रेस सभी जातियों से श्रेष्ठ है, इसलिए उन्हें ही विश्व का नेतृत्व करना चाहिए." फासिस्ट विचारधारा, उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक हिटलर के मन में साम्यवादियों और यहूदियों के प्रति घृणा थी.

एडोल्फ हिटलर 20वीं सदी का सब से क्रूर तानाशाह था. 1933 में हिटलर जब जरमनी की सत्ता पर काबिज हुआ, उस ने 6 साल में करीब 60 लाख यहूदियों की हत्या गैस चैंबर्स में डाल कर बड़े क्रूर

नस्ल के आधार पर नफरत फैलाने वाले हिटलर ने दुनिया जीतनी चाही, पर आज उस का नाम इतिहास में काले अक्षरों में दर्ज है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

तरीके से की. इन में 15 लाख तो सिर्फ बच्चे थे. मगर पूरी दुनिया में मौत का तांडव कर चुका हिटलर सोवियत सेनाओं से घिरने के बाद अंत में अपनी हार से इतना टूटा कि बर्लिन में जमीन से 50 फुट नीचे बने बंकर में अपनी प्रेमिका के साथ कई दिनों तक छिप कर रहने के बाद एक दिन उस ने गोली मार कर अपनी प्रेमिका इवा ब्राउन के साथ आत्महत्या कर ली. आत्महत्या करने से कुछ घंटे पहले ही अपनी प्रेमिका इवा ब्राउन से शादी की थी.

## मुसोलिनी का बुरा हश्र

29 अप्रैल, 1945. रविवार की सुबह, 4 बजे थे. इटली के मिलान शहर में भारी सन्नाटा था. एक पीले रंग का लकड़ी का ट्रक शहर के सब से मशहूर चौक 'पियाजाले लोरेटो' पर आ कर रुका. खाकी वरदी में 10 सिपाही एक दूसरी वैन से निकल कर ट्रक के पीछे चढ़े. उन्होंने ट्रक से कुछ भारी सामान निकाल कर चौक पर बने गोल चक्कर के अंदर फेंका. आसपड़ोस के जो लोग वहां थे, उन्हें अंधेरे में कुछ समझ नहीं आया. जब सिपाही चले गए तो सामान को करीब से जा कर देखा. पता लगा ये 18 लाशें थीं.

इटली में उस समय लाशें देखना कोई बड़ी बात नहीं थी. होती भी कैसे, दूसरा विश्व युद्ध जो चल रहा था और इटली इस में सक्रिय भूमिका में था. लेकिन इन लोगों की आंखें तब खुलीं रह गईं जब इन की नजर इन में से एक लाश पर गई. लाश थी उस तानाशाह की जिस ने इन लोगों पर 21 वर्षों तक शासन किया था– तानाशाह बेनिटो मुसोलिनी. एक बौडी उस की प्रेमिका क्लारेटा पेटाची की भी थी. 16 अन्य लाशें मुसोलिनी के करीबी सैनिकों की थीं.

जिस तरह की मौत मुसोलिनी को मिली और मौत के बाद जो हश्र वहां की जनता ने उस का किया वह मिसाल बन गया.

सुबह 7 बजे तक चौक पर 5 हजार लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई. भीड़ गुस्से में थी, नारे लगा रही थी, देखते ही देखते लाशों को पत्थर मारे जाने लगे. भीड़ में से 2 लोग मुसोलिनी की लाश के पास गए और उस के जबड़े में जोर से लात मारी. एक महिला ने अपनी पिस्टल को लोड किया और मुसोलिनी के शव पर एक के बाद एक 5 गोलियां मार दीं और बोली, 'बेटों की मौत का बदला आज पूरा हुआ.' 1935 में मुसोलिनी ने उस के 5 बेटों को विद्रोही करार दे कर मरवा दिया था.

अमेरिकी इतिहासकार ब्लेन टेलर लिखते हैं कि इस के बाद नारे लगाती भीड़ में से एक महिला चाबुक ले कर मुसोलिनी के पास जाती है. उस पर तड़ातड़ चाबुक चलाती है. इतनी तेज कि मुसोलिनी की एक आंख बाहर निकल आती है. एक आदमी मुसोलिनी के मुंह में मरा हुआ चूहा डालता है और बारबार चीखता है, 'डूचे तुझे लैक्चर देने का बहुत शौक है, अब दे लैक्चर.' बता दें कि इटली के लोग बेनिटो मुसोलिनी को डूचे भी कहा करते थे.

तभी एक 6 फुट का आदमी मुसोलिनी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

की लाश को पकड़ कर हवा में उठाता है. तभी भीड़ से आवाज आती है– और ऊंचा, और ऊंचा. फिर कुछ लोग आगे आते हैं और मुसोलिनी को सड़क के किनारे लगे एक स्टैंड पर उलटा लटका देते हैं. उस की प्रेमिका क्लारेटा के शव को भी उलटा लटकाया जाता है. लोगों ने उस की लाश पर अपना गुस्सा उतारा. उन पर पत्थर मारे, जूते और कोड़े मारे. तानाशाहों का अंत भयावह तरीके से ही होता है.

इराक के राष्ट्रपति रहे सद्दाम हुसैन को भी दुनिया 'तानाशाह' कह कर बुलाती है. ऐसा तानाशाह जिस ने जम कर कत्लेआम मचाया. 1980 का समय था,

इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को उन की काली करतूतों के चलते तानाशाह कह कर संबोधित किया जाता है.

ईरान में इसलामिक क्रांति शुरू हो गई थी. इस क्रांति को कमजोर करने के लिए इराक ने पश्चिमी ईरान में सेना उतार दी और शुरू हुआ इराकईरान युद्ध. इसी बीच, जुलाई 1982 में सद्दाम हुसैन पर एक आत्मघाती हमला हुआ. इस में सद्दाम हुसैन बच तो गया लेकिन इस के बाद उस ने कत्लेआम मचा दिया. सद्दाम हुसैन ने शियाबहुल दुजैल गांव में 148 लोगों की हत्या करवा दी. ईरान के साथ इराक ने 8 वर्षों तक युद्ध लड़ा. इस युद्ध में लाखों लोगों की जानें गईं. 1988 में दोनों देशों के बीच युद्धविराम हुआ.

## कैमिकल हमले का दोषी

सद्दाम हुसैन की कहानी हलाब्जा नरसंहार का जिक्र किए बिना अधूरी है. ईरानइराक युद्ध के दौरान ही यह नरसंहार हुआ था. हलाब्जा इराकी शहर था जिस की सीमा ईरान से सटी हुई थी. यहां कुर्द लोग रहते थे. सद्दाम हुसैन को इन से नफरत थी. मार्च 1988 से ही हलाब्जा में इराकी सेना तबाही मचाने लगी थी. उसी दौरान हलाब्जा शहर पर कैमिकल अटैक हुआ. इस हमले में लोग बच न जाएं, इसलिए 2 दिन पहले से इराकी सेना ने इतने बम बरसाए कि लोगों के घरों के खिड़कीदरवाजे टूट जाएं. उन के पास ऐसा कुछ न बचे जिस की आड़ में वे अपनी जान बचा सकें.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

यह कैमिकल हमला इतना खतरनाक था कि यह शहर लाशों का शहर बन गया और जो बच गए वे बीमारियों की फैक्ट्री बन गए. कैमिकल अटैक के लिए हलाब्जा चुनने की 2 वजहें थीं. पहली यह कि यहां कुर्द लोग रहते थे, दूसरी यह कि जब ईरानी सेना इराक में घुसी तो हलाब्जा के कुर्दों ने उन का स्वागत किया. कैमिकल अटैक कर सद्दाम हुसैन को यह बताना था कि बगावत का अंजाम क्या होता है.

2003 में अमेरिका और ब्रिटेन की संयुक्त सेना ने इराक पर हमला कर सद्दाम को गिरफ्तार किया. उस वक्त वह एक बंकर में छिपा हुआ था और इसी के साथ इराक में तानाशाह सद्दाम के शासन का अंत हो गया. सद्दाम हुसैन को अमेरिका ने बगदाद में फांसी पर लटकाया.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

चीन का तानाशाह माओत्से तुंग लेनिन और कार्ल मार्क्स का प्रशंसक था. उस ने लेनिनवादी और मार्क्सवादी विचारधारा को सैनिक रणनीति में जोड़ कर एक नया सिद्धांत दिया, जिसे 'माओवाद' कहा जाता है. चीन की क्रांति को कामयाब बनाने के पीछे माओत्से तुंग का हाथ रहा. चीन में 'माओ' को क्रांतिकारी, राजनीतिक विचारक और कम्युनिस्ट दल का सब से बड़ा नेता माना गया. चीन का यह तानाशाह अपने विरोधियों को पसंद नहीं करता था. जो कोई भी उस का विरोध करता था उसे मौत के घाट उतार दिया जाता था. मानवाधिकारों के हनन और चीन के लोगों पर उस के विनाशकारी नतीजों के लिए उस की नीतियों की आलोचना होती है. हालांकि इस के बावजूद चीनी समाज और वहां की राजनीति पर माओ के प्रभाव को नजरअंदाज करना मुमकिन नहीं है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## माओ की तानाशाही

माओ 20वीं सदी के 100 सब से ज्यादा प्रभावशाली लोगों में शामिल था. उस ने जमीन और फसलों को ले कर कई तरह की योजनाएं शुरू कीं. छोटे कृषि समूहों का तेजी से बड़े सरमाएदार लोगों के समुदायों में विलय कर दिया. बहुत से किसानों को बड़े पैमाने पर इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के साथ ही लोहे और स्टील के उत्पादन पर काम करने का आदेश दिया. निजी खाद्यान उत्पादन पर पाबंदी लगा दी, जानवरों और खेती के उपकरणों को सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया.

माओ की योजनाएं चीन के लिए घातक साबित हुईं. साथ ही, प्राकृतिक आपदाओं का असर इतना बढ़ा कि चीन में इतिहास का सब से बड़ा अकाल पड़ा. इस में 1958 से 1962 के बीच 4 साल के दौरान एक करोड़ से ज्यादा लोग मौत के मुंह में समा गए. एक करोड़ से ज्यादा लोगों के मर जाने के बावजूद माओ के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत किसी में नहीं थी. वह इतना ताकतवर था कि जो कोई भी उस का विरोध करने की हिम्मत करता, उसे जीवनभर के लिए जेल में डाल दिया जाता था.

माओ ने मीडिया पर ऐसा शिकंजा कसा था कि चीन का मीडिया आज तक उस शिकंजे से बाहर नहीं निकल पाया है. बाद में चीन के मीडिया की हालत यह हो गई थी कि जब साल 1976 में माओ की मौत के बाद देंग शियाओ पिंग ने चीन की सत्ता संभाली तो किसी को कानोंकान खबर तक न हुई.

अरमान आनंद की एक कविता है– 'तानाशाह'. वे लिखते हैं–

*तानाशाह*
*आदतन अमर होना चाहता है*
*और यह तब तक चाहता है*
*जब तक वह मर नहीं जाता*
*तानाशाह को डर हथियारों से नहीं लगता*
*तानाशाह को सब से ज्यादा डर*
*भीड़ में खड़े उस आखिरी आदमी के विचारों से लगता है*
*जिस के मुंह में इंकलाब बंद है*
*वही आखिरी आदमी उस का पहला निशाना है*
*लो,*
*मेरी खोपड़ी से निकाल लो मेरा दिमाग*
*शहर की जिस भी गली से गुजरता दिखे तानाशाह का टैंक*
*उस टैंक के नीचे डाल देना*
*मेरा यकीन है :*
*तानाशाह के चीथड़े उड़ जाएंगे.* ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# राहुल गांधी से शादी का सवाल

• शैलेंद्र सिंह

लोकसभा के लिए देश में हो रहे चुनाव में राजनेता राहुल गांधी कांग्रेस पार्टी की तरफ से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी के तौर पर उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. इस से पहले सोनिया गांधी यहां से चुनाव लड़ती थीं. राहुल गांधी की बहन प्रियंका गांधी ने यहां चुनावप्रचार का पूरा जिम्मा उठा रखा है. वे अमेठी और रायबरेली का चुनाव प्रबंधन भी देख रही हैं.

रायबरेली में चुनावप्रचार के दौरान जब प्रियंका और राहुल गांधी प्रचार कर रहे थे तब वहां एक युवक ने राहुल गांधी से सवाल किया कि, 'शादी कब करोगे?' राहुल गांधी वह सवाल सही से सुन नहीं पाए तो प्रियंका गांधी ने हंसते हुए राहुल से कहा, 'पहले उस के सवाल का जवाब दो.' यानी, प्रियंका भी चाहती थीं कि राहुल शादी के बारे में कुछ मन बनाएं.

राहुल गांधी ने कौरेस्पौंडेंटों से पूछा, 'सवाल क्या है?' तो उक्त युवक ने

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

धर्मसत्ता को और औरतों को गुलाम बनाए रखने के लिए शादी सब से जरूरी होती है. सनातनी व्यवस्था बिना शादी के पारिवारिक समाज में रहना उचित नहीं मानती. ऐसे में हर कुंआरे से यह सवाल बारबार उठाया जाता है कि 'शादी कब करोगे.'

अपना सवाल दोहरा दिया. वहां खड़े प्रमोद तिवारी, प्रियंका गांधी व दूसरे कई नेताओं के साथ खुद राहुल भी हंसने लगे. हंसते हुए ही राहुल गांधी ने कहा, 'अब तो जल्दी ही करनी पड़ेगी.'

हमारे देश में शादी को ले कर सवाल बहुत पूछे जाते है. किसी भी लड़के या लड़की की शादी नहीं हुई तो लोग पूछते हैं कि शादी क्यों नहीं की? राहुल गांधी और सलमान खान की तरह से तमाम लोग ऐसे हैं जिन से यह सवाल अकसर पूछा जाता है. सिंगल वुमेन की तुलना में कुंआरी लड़की, जिस ने शादी नहीं की, से यह सवाल ज्यादा पूछा जाता है.

## शादी सफलता का पैमाना नहीं

जिस तरह से रैली में हिस्सा ले रहे युवक ने राहुल गांधी से उन की शादी को ले कर सवाल किया लेकिन उस तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कोई सवाल कर सकता है क्या कि अपनी पत्नी को साथ क्यों नहीं रखा? राहुल आम लोगों से अधिक कनैक्ट होने का प्रयास करते हैं, जनता के बीच सहज होते हैं, उन से एक परिवार का रिश्ता बनाने की बात करते हैं. ऐसे में उन से पर्सनल सवाल भी बिना हिचक के लोग पूछ लेते हैं. इस की वजह यह है कि पत्नी छोड़ देना समाज को स्वीकार है और कई देवताओं ने भी ऐसा किया जो नरेंद्र मोदी कर रहे हैं.

अब सवाल उठता है कि भारत में शादी का सवाल इतना गंभीर क्यों माना जाता है? क्या गैरशादीशुदा सफल नहीं होते या वे देश और समाज के लिए कमतर होते हैं? भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेई ने शादी नहीं की, वे भाजपा के पहले नेता थे जो देश के

> राहुल गांधी से शादी का सवाल क्यों किया गया क्योंकि शादी करना व्यक्तिगत जरूरत से ज्यादा औरतों को सामाजिक गुलाम बनाए रखना है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

प्रधानमंत्री बने. वैज्ञानिक और राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने भी शादी नहीं की थी.

रतन टाटा ने भी शादी नहीं की पर उन का योगदान देश के विकास में कम नहीं. केवल पुरुषों में ही नहीं, महिला नेताओं में भी जिन्होंने शादी नहीं की वे भी सफल रही हैं. जयललिता, ममता बनर्जी और मायावती किसी से कम नहीं हैं. इन की देश और समाज के विकास में खास भूमिकाएं रही हैं. शादी न करने से सफलता का कोई मतलब नहीं होता. असल में गैरशादीशुदा ज्यादा परिपक्वता के साथ काम कर सकते हैं.

## गुलाम बनाए रखने की साजिश

शादी औरतों को गुलाम और कमजोर



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बनाए रखने की साजिश होती है. चार्ल्स डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत के हिसाब से देखें तो यह बात पता चल सकती है कि औरतों को कमजोर रखने की साजिश हजारों साल पहले से शुरू हो गई थी. इस के पीछे धर्म एक बड़ा रोल रहा.

जिस समय आदमी और औरत पेड़ों से उतर कर होमो इरेक्टस या होमो सेपियंस बने उस समय इंसान के रूप में उन की कदकाठी करीबकरीब एकजैसी थी. पुरुष को यह बात पसंद नहीं थी कि औरत उस के जैसी ताकतवर, लंबी कदकाठी की रहे. ऐसे में पुरुषों ने सैक्स और बच्चा पैदा करने के लिए उन औरतों को ज्यादा पसंद किया जो कमनीय काया की होती थीं.

जो मर्द जैसी दिखती थीं उन को दरकिनार किया जाने लगा. उस का धीरेधीरे यह प्रभाव हुआ की औरतें कमनीय काया वाली होने लगीं. आदमियों जैसी औरतें कम होने लगीं. इस तरह से औरतों को कमजोर बनाया गया.

कमजोर बनाने के बाद अब जरूरत यह थी कि उन को गुलाम कैसे बनाया जाए? इस के लिए जरूरी था कि उन को परिवार और बच्चों तक सीमित रखा जाए. जीवों में स्तनधारी समूह की खासीयत यह होती है कि उन की मादा अपने बच्चे को अपना दूध पिला कर बड़ा करती है. इस में गाय, बकरी, भेड़, भैंस, ऊंट, चमगादड़, व्हेल मछली, कंगारू, बंदर और इंसान प्रमुख रूप से आते हैं.

## सैक्स और बच्चे पालने की जरूरत

स्तनधारियों में इंसान दो तरह से अलग होता है. पहले, उस का सैक्स जीवन दूसरे जीवों की तरह केवल प्रजनन के लिए नहीं होता. दूसरे, जीव सैक्स केवल प्रजनन के लिए करते हैं. उन के प्रजनन काल का एक खास समय होता है. एक बार मादा गर्भवती हो जाए तो पशु में नर उस के साथ सैक्स नहीं करता है. इंसान इस से अलग है. नर इंसान के लिए महिला के गर्भवती होने का कोई प्रभाव नहीं होता. महिला तब तक बच्चे को जन्म दे सकती है जब तक उस के गर्भ में अंडाणु बनते रहें.

नर के शुक्राणु बनने की प्रक्रिया में उम्र की कोई सीमा नहीं होती. किशोरावस्था

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

एपीजे अब्दुल कलाम, रतन टाटा, अटल बिहारी वाजपेयी जैसी शख्सियतों ने भी अपने जीवन में शादी नहीं की. समाज में उन का योगदान कम नहीं.

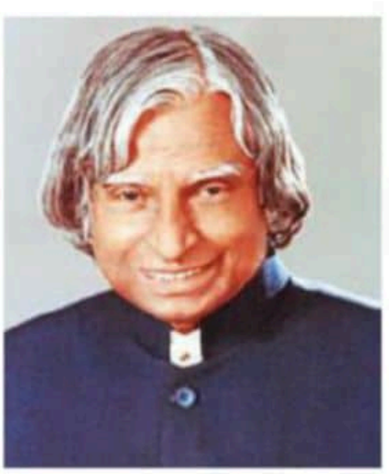
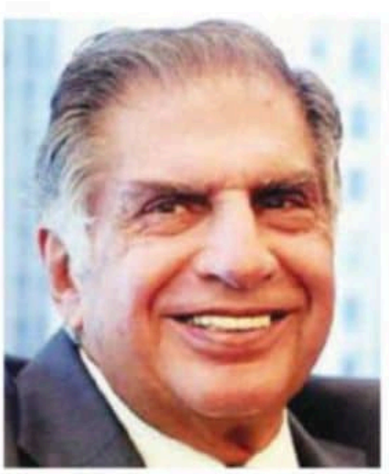
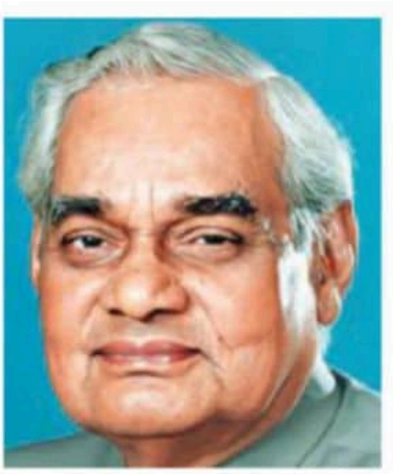



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मायावती, ममता बनर्जी और जयललिता ऐसी महिला नेता रही हैं जिन्होंने शादी नहीं की और वे शीर्ष पर पहुंचीं.

से यह बनना शुरू हो जाते हैं जो बुढ़ापे तक बनते रहते हैं. ऐसे में वह किसी भी उम्र में बच्चे पैदा कर सकता है. मादा मेनोपौज के बाद बच्चे नहीं पैदा कर सकती. इंसान में प्रजनन के अलावा भी सैक्स संबंधों की इच्छा होती है. ऐसे में नर के लिए मादा का साथ होना जरूरी होता है.

औरत को दूसरे जिस काम के लिए ज्यादा जरूरत होती है वह होता है बच्चे का पालना. सभी जीवों में इंसान का ही बच्चा ऐसा होता है जिस का बचपन सब से लंबा होता है. उसे पालनपोषण के लिए मां की जरूरत होती है.

औरत बच्चे पैदा करे और मर्द की सैक्स की जरूरत को पूरा करे, इस के लिए परिवार को साथ रहने की जरूरत थी. बच्चा पैदा करना इसलिए जरूरी था जिस से कि अलगअलग झुंड अपनी अहमियत बनाए रखें. यही भावना झुंड से होते हुए कबीलों में बदली, फिर देश और राज्य बनने लगे. सीमाओं का विस्तार हुआ. जिस के पास अधिक पुरुष होते थे वह लड़ाई जीत लेता था. अब व्यवस्था इस तरह की बनी कि औरत का काम बच्चे पैदा कर के उस की देखभाल करे. बूढ़े औरतआदमी घर में रहने लगे. आदमी कबीलों, राज्यों की ताकत बन कर युद्ध में जाने लगे.

ऐसे में मर्द का काम बच्चा पैदा कर के लड़ने वालों की फौज को तैयार करना था जो अपने देश, धर्म, जाति, कबीले और समाज के लिए लड़ सके. पहले औरत को कमजोर किया गया जिस से उस में शारीरिक क्षमता कम हो.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वह पुरुष के मुकाबले ताकत में कम हो. औरत की शारीरिक ताकत भले कम हो, उस में प्यार की एक अलग ताकत ने जन्म लिया. इस का मानसिक प्रभाव उस को ताकतवर बनाता है. इस प्यार के कारण ही वह दूसरे जीवों के मुकाबले सैक्स संबंधों में अपने पार्टनर को कम बदलती है.

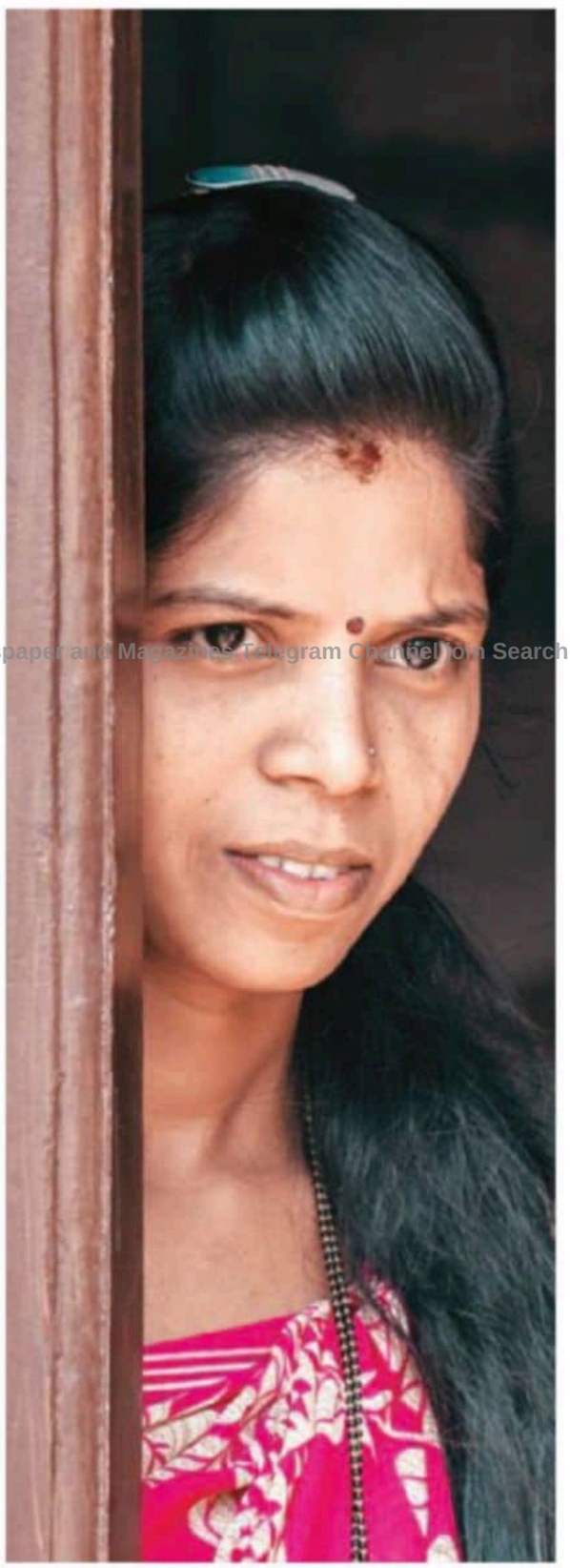

## शादी के बंधन में बंधी औरत की आजादी

औरत को क्रमिक रूप से कमजोर किया गया. इस के बाद उस को एहसास कराया गया कि उस की रक्षा के लिए पुरुष की बेहद जरूरत है. कभी पिता, कभी भाई, कभी पति के रूप में उसे एक पुरुष चाहिए. इन संबंधों को बांधने के लिए शादी की डोर बांधी गई. वहां भी भेदभाव किया गया. 1956 के पहले जो हिंदू विवाह कानून था उस में कई तरह के रीतिरिवाजों से शादियां की जाती थीं. एक से अधिक शादी करना भी पुरुष के लिए गलत नहीं था. औरतों के लिए बंधन था कि वह दूसरी शादी नहीं कर सकती. वह तलाक नहीं ले सकती. उसे पतिव्रता बन कर रहना है. वह पति के साथ चिता में जल सकती है. सतीप्रथा का सिद्धांत भी उस के लिए ही था.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

शादी एक तरह का ऐसा बंधन था जिस में प्यार और परिवार के नाम पर औरत को बांधने का काम किया जाता था. पुरुष कई शादियां करने के लिए आजाद था. देश आजाद हुआ तो 1956 में विवाह कानून बना जिस के तहत औरतों को उत्तराधिकार और तलाक का अधिकार दिया गया. इस के बाद भी सदियों से मानसिक गुलामी औरतों ने सही थी. उस के बाद वह उसी में रचबस गई है. वह आज भी पुरुषवादी सत्ता की गुलाम है. बिना किसी कानून के गुलाम है. इस की वजह यह है कि धर्म उस के जीवन के लिए ऐसे रीतिरिवाज बनाने में सफल रहा है जो कानून से भी अधिक ताकतवर हैं.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

शादी ऐसा बंधन बन गया है जिस में प्यार और परिवार के नाम पर औरतों को बांधने का काम किया जाता है.

## धर्मसत्ता के लिए शादी है जरूरी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

औरतों को सब से अधिक पुरुष के नाम पर डराया जाता है. औरत को उस के बेटे और पति के नाम पर डराया जाता है. इन के नाम पर उसे धर्म के बंधन में जकड़ कर रखा जाता है. वह इन रीतिरिवाजों को तोड़ने की सोच भी नहीं सकती. इस के लिए जरूरी है कि आदमी शादी जरूर करे. अगर वह शादी नहीं करेगा तो औरत उस की गुलाम कैसे बनेगी. यह वह मानसिकता है जिस में हर पुरुष यह चाहता है कि दूसरा पुरुष भी शादी करे.

औरत भी चाहती है कि दूसरी औरत भी शादी करे जिस से कि वे आपस में बराबर रह सकें. बिना शादी वाली औरत के फैसले अलग होंगे. समाज उस को अलग रूप से देखेगा.

आज पढ़ीलिखी औरतें भी गुलामी की मानसिकता के साथ पुरुषवादी सत्ता से बाहर नहीं आ सकी हैं. आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएं भी बिना पुरुष यानि पति से पूछे कोई बड़ा काम नहीं करती हैं. उन के लिए मेरा पति मेरा देवता होता है.

पतियों को देवता मानने वाली औरतों की संख्या कम न हो, लड़ने के लिए मर्द कम न हों, इस के लिए शादी जरूरी है. गैरशादीशुदा आदमी से इतने सवाल पूछो कि वह शादी करने को मजबूर हो जाए. शादी धर्मसत्ता को बनाए रखने का सब से प्रमुख हथियार है, जिस की गुलामी से औरतें न आजाद हो सकती हैं, न ही वे आजाद होना चाहती हैं.

देश की बड़ी पार्टी का बड़ा नेता राहुल गांधी इस सामाजिक गुलामी करने के षड्यंत्र का हिस्सा न बनें, यह लोगों को पच नहीं रहा. वे देवताओं वाले काम करने वाले, अपनी पत्नी को छोड़ने वाले से कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं रखते. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# धर्म

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# चारधाम यात्रा

## मोक्ष के चक्कर में बेमौत मर रहे श्रद्धालु

• भारत भूषण

कहते हैं देवता भी मानव योनि को तरसते हैं क्योंकि तमाम सुख और आनंद इसी योनि में हैं. लेकिन आदमी है कि मोक्ष के लिए मरा जाता है और इस के लिए उस की पसंदीदा जगह केदारनाथ और बद्रीनाथ हो चले हैं. 15 मई तक घोषित तौर पर 11 को 'मोक्ष' मिल चुका है और हर साल की तरह यह आंकड़ा अभी और बढ़ेगा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

शादाब शम्स एक बेहद वफादार भाजपाई नेता और विकट के मोदीभक्त हैं. उत्तराखंड भाजपा के प्रवक्ता रहे शादाब को 2 साल पहले उत्तराखंड वक्फ बोर्ड का चेयरमैन बनाया गया है. 15 मई को वे रुड़की स्थित पिरान कलियर दरगाह साबिर पाक में खासतौर से गए थे जहां उन्होंने चादरपोशी के बाद लंगर भी खिलाया और अपने अल्लाहतआला से दुआ मांगी कि नरेंद्र मोदी ही तीसरी बार प्रधानमंत्री बनें क्योंकि न केवल देश को, बल्कि दुनिया को भी उन की जरूरत है जो हर लिहाज से बुरे दौर, जंग और अस्थिरता से गुजर रही है.

इस मौके पर नरेंद्र मोदी की तारीफों में कसीदे गढ़ती जम कर कव्वालियां भी हुईं. शादाब उन इनेगिने मुसलिम नेताओं में से एक हैं जो नरेंद्र मोदी को मुसलमानों का सच्चा हमदर्द मानते हैं. वे मानते हैं कि मोदी के राज में मुसलमान खतरे में नहीं हैं.

लेकिन उन्हीं के राज्य उत्तराखंड में हिंदू खतरे में हैं, यह बात उन्होंने ठीक 2 साल पहले खुल कर इन शब्दों में बयां की थी–

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के आव्हान पर चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है. जिन लोगों की यात्रा मार्ग में मौत हो जाती है तो उन के मुताबिक, उन्हें मोक्ष मिलेगा. लोगों की चारधाम के प्रति सच्ची आस्था है.

इस पर कांग्रेस क्यों खामोश रहती, लिहाजा, पलटवार में उस की प्रवक्ता प्रतिमा सिंह ने कहा, 'चारधाम यात्रा में मोक्ष का मतलब मृत्यु नहीं है बल्कि



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

श्रद्धालु धाम में पहुंच कर अपनी गलतियों का प्रायश्चित्त कर सुखद जीवन की कामना करता है.'

2022 और 2023 में भी सैकड़ों श्रद्धालु चारधाम यात्रा के दौरान मारे गए थे. इस साल 14 मई को ही यह आंकड़ा दहाई अंक में पहुंच गया है. 10 मई को यह यात्रा शुरू हुई थी और 4 दिनों में ही 11 श्रद्धालु मोक्ष या मृत्यु कुछ भी कह लें को प्राप्त हो चुके थे. अगर हालत यही रही, जिस की उम्मीद ज्यादा है तो मरने वालों की तादाद कितने सौ पार करेगी, गारंटी से इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यहां मामला राजनीति का नहीं, बल्कि धर्म का है.

## असुविधा ढोते श्रद्धालु

15 मई तक ही 27 लाख से भी ज्यादा श्रद्धालु चारधाम यात्रा का रजिस्ट्रेशन करा चुके थे. इस संख्या के इस साल 80 लाख तक पहुंचने की संभावना है. यह अपनेआप में एक रिकौर्ड होगा. 15 मई तक ही कोई 2 लाख 76 हजार श्रद्धालु धामों के दर्शन भी कर चुके थे. रोज हजारों नए भक्त पहाड़ों पर पहुंच रहे हैं, वहां गंद और प्रदूषण फैला रहे हैं. इन्हें संभाल पाना किसी सरकार तो दूर की बात है अब भगवान के बस की भी बात नहीं. 11 श्रद्धालु मर चुके थे तो सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि कितने इन पहाड़ों और उन की दुर्गम यात्रा में बेहाल होंगे.

15 मई को उमड़ी भीड़ से यमुनोत्री धाम के रास्ते पर 4 किलोमीटर लंबा जाम लगा था जिस के चलते श्रद्धालु खानेपीने और मलमूत्र त्यागने तक को तरस गए थे. जैसे ही यमुनोत्री धाम के कपाट खुले, आदत के मुताबिक, लोग मंदिर की तरफ दौड़ पड़े मानो ट्रेन छूटी जा रही हो या हाट लुटी जा रही हो. जगहजगह जाम और बदइंतजामी के चलते प्रशासन ने औफलाइन रजिस्ट्रेशन पर रोक लगा दी जो हरिद्वार और ऋषिकेश में हो रहे थे. लेकिन इस से रास्ते में फंसे यात्रियों को कोई राहत नहीं मिली जिन्हें पैदल चलने भी जगह नहीं मिल रही थी.

यह स्थिति अभी भी सुधरी नहीं है. अफरातफरी और भगदड़ न मचे, इस बाबत श्रद्धालुओं को जगहजगह रोक दिया गया. इस वक्त तक अकेले यमुनोत्री के रास्ते पर 6 भक्त मर चुके थे.

पिछले साल, सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, चारधाम यात्रा में 200 श्रद्धालुओं की मौत हुई थी जिन में सब से ज्यादा 96 केदारनाथ में मरे थे. यमुनोत्री धाम में 34, गंगोत्री धाम में 29 और बद्रीनाथ धाम में 33 श्रद्धालु मारे गए थे जबकि हेमकुंड साहिब में 7 और गोमुख ट्रैक पर एक मौत हुई थी. इस के पहले 2022 में 232 श्रद्धालुओं की मौत हुई थी जबकि 2021 में

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

300 लोग मरे थे. यानी हर साल सैकड़ों लोग, बकौल शादाब शम्स, मोक्ष को प्राप्त होते हैं और सरकार खामोशी से इस मुक्ति को देखती रहती है.

## हवाई दावे

मीडिया के जरिए वह दावा जरूर करती है कि सबकुछ चाक चौबंद है लेकिन हकीकत इस से कोसों दूर होती है. 14-15 मई को हजारों यात्रियों ने अपने व्हीकल्स में रात गुजारी. पार्किंग इंतजाम के क्या ही कहने. खानेपीने का कोई ठौरठिकाना नहीं था लेकिन इस का जिम्मेदार अकेले सरकार को नहीं ठहराया जा सकता. उस से ज्यादा तो वे भक्त दोषी हैं जो पाप, मुक्ति और मोक्ष की चाहत में मुंह उठा कर चारधाम यात्रा पर निकल पड़ते हैं, जो कइयों के लिए आखिरी यात्रा साबित होती है.

पहाड़ों पर मौसम का बदलना बहुत आम है. कभी भी तेज बारिश होने लगती है, लैंड स्लाइडिंग के नजारे भी आम हैं. बर्फबारी होने से पूरा ट्रैफिक जाम हो जाता है. 2013 में आफत बाढ़ की शक्ल में आई थी और चारों धामों में बैठा भगवान भी कुछ नहीं कर पाया था. तब मोक्ष फुटकर में नहीं, बल्कि थोक में मिला था. ऐसे हादसों से धर्म के अंधे कुछ सीखते होते तो आज जान जोखिम में डाल कर यह आत्मघाती यात्रा न करते.

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के कहने पर चारधाम यात्रा में भीड़ उमड़ रही है पर जैसी सुविधाएं श्रद्धालुओं को मिलनी चाहिए वैसी उन्हें मिल नहीं रहीं.

गंगोत्री मार्ग पर 6 दिनों से फंसे कोई 7 हजार भक्त खून के आंसू रो दिए थे. जिन्हें पानी की बोतल 50 रुपए में खरीदना पड़ा था और एक बार शौच जाने के सौ रुपए अदा करने पड़े थे. टैक्सी वाले इन दिनों और इन हालात में मनमाना किराया वसूलते हैं, जिन पर किसी का कोई जोर नहीं चलता. लेकिन उन की कोई खास गलती नहीं जब लोग अपनी मरजी से लुटने आते हैं तो वे क्यों कोई रहम करेंगे, वे तो पैसे ले कर मदद ही करते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

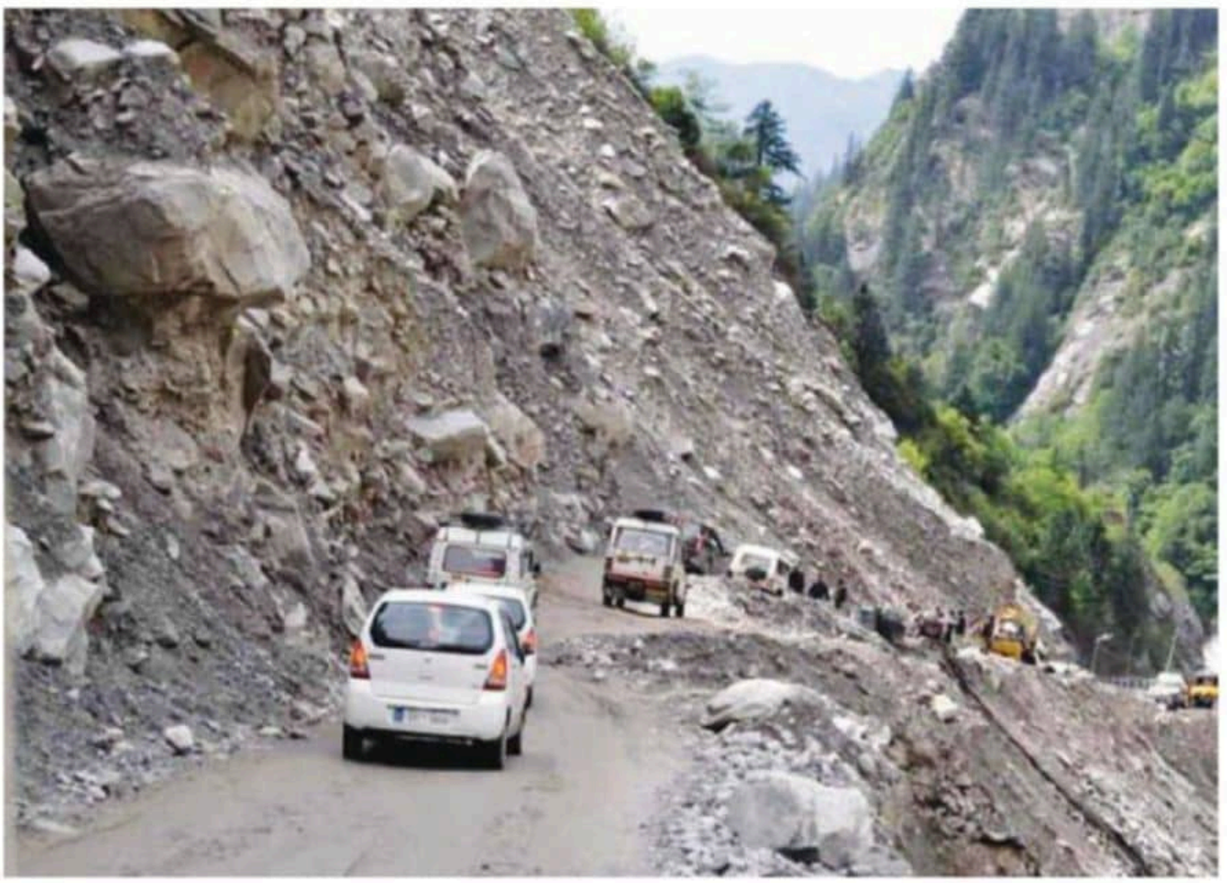

पहाड़ी क्षेत्रों में खतरनाक दुर्गम रास्ते हैं. एक तरह से श्रद्धालु अपनी जान जोखिम में डाल कर तीर्थयात्राओं पर निकलते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ये तमाम परेशानियां अभी शुरुआती दौर में हैं जिन्हें भांपते कुछ ही समझदार श्रद्धालु वापस लौट रहे हैं. मीडिया भी गागा कर यह बता रहा है कि चारधाम यात्रा के वक्त क्याक्या सावधानियां रखें, मसलन बीमार लोग दवाइयां साथ रखें, हार्ट, शुगर और बीपी के मरीज ये और वे एहतियात रखें वगैरहवगैरह ताकि परेशानी न हो.

यह कोई नहीं कह रहा कि पाप, मुक्ति और मोक्ष तो काल्पनिक बातें हैं, धर्म के दुकानदारों के गढ़े हुए कहानीकिस्से हैं ये. मौत एक वास्तविकता ही सही लेकिन जान जोखिम में डालना खुदकुशी करने जैसा ही काम है, जिस से एक ही सूरत में बचा जा सकता है कि आप वहां न जाएं.

## जड़ में मोक्ष और पापमुक्ति

खतरों से वाकिफ होने के बाद भी लोग क्यों मौत के मुंह में जाते हैं, यह सच खुलेतौर पर दरगाह पर चादर चढ़ा कर नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने की मन्नत मांगने वाले धर्मभीरु शादाब शम्स बता चुके हैं. लेकिन हिंदू धर्मग्रंथ, धार्मिक मान्यताएं और गढ़े गए पौराणिक किस्सेकहानियों में मोक्ष और पापमुक्ति के लिए चारधाम यात्रा करने के लिए इफरात से उकसाया गया है.

यह आम मान्यता है कि चारधाम की यात्रा करने से मोक्ष मिलता है और पापों से मुक्ति भी मिलती है. शिवपुराण के मुताबिक, केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन और पूजन के बाद जो भी व्यक्ति जल



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ग्रहण करता है उस का पृथ्वी पर दोबारा जन्म नहीं होता. लोग कहीं केदारनाथ के ही दर्शनपूजन कर न खिसक लें, इसलिए यह गप भी जोड़ दी गई है कि केदारनाथ के बाद अगर बद्रीनाथ के दर्शनपूजन नहीं किए तो फल नहीं मिलता. इसलिए जो लोग केदारनाथ जाते हैं वे आठवां वैकुण्ठ कहे जाने वाले बद्रीनाथ की यात्रा भी करते हैं. यानी वहां के पंडेपुजारियों को भी दानदक्षिणा देते हैं. रोजीरोटी के मुफ्त के इंतजाम की यह एक और बेहतर मिसाल है.

## पापमुक्ति का विधान

इन मंदिरों में मुख्य शिवलिंग है लेकिन वैष्णवों को लुभाने के भी किस्से हैं. मसलन, भगवान विष्णु बद्रीनाथ धाम में विश्राम करते हैं. इस की स्थापना उन्होंने सतयुग में ही कर दी थी. यहां वे नरनारायण रूप में हैं. सारे पापों के नष्ट हो जाने और मोक्ष की गारंटी का शिवपुराण के कोटि रूद्र संहिता में भी जिक्र है.

एक और किस्से के मुताबिक पांडवों ने इन्हीं पहाड़ों में शिव की आराधना की थी क्योंकि उन्हें अपने ही भाइयों यानी कौरवों को मारने का गिल्ट मन में था. यह कहानी पुराने जासूसी उपन्यासों सरीखी रोमांचक है कि शिव पांडवों को आता देख छिप गए लेकिन पांडवों ने उन्हें देख लिया और उन के पीछेपीछे चलने लगे. यह देख शिव ने भैंसे का रूप रख लिया. भीम ने उन्हें अपनी एक खास ट्रिक से पहचान लिया. आखिर में शिव पांडवों की भक्ति से प्रसन्न हुए और उन्हें पापमुक्ति का वरदान दे दिया. दूसरी कहानियों की तरह यह कहानी भी कम दिलचस्प नहीं जिस के तहत भैंसा बने शिव का मुंह नेपाल में निकला जिसे पशुपति नाथ मंदिर कहा जाता है.

और एक कहानी के मुताबिक, आदि शंकराचार्य यहीं कहीं धरती में समाए थे लेकिन समातेसमाते अपने भक्तों के लिए गरम पानी का एक कुंड बना गए थे.

अब भला ऐसे दर्जनों किस्सेकहानियों को सुन कर किस भक्त का जी पापमुक्ति के लिए नहीं मचलेगा कि पहले तो भाइयों की हत्या करने जैसा जघन्य अपराध करो और फिर केदारनाथ जा कर पापमुक्त हो जाओ. यहां यह तर्क कोई नहीं करता कि विष्णु के अवतार कृष्ण ने महाभारत के युद्ध के दौरान ही अर्जुन को गीता का उपदेश देते कहा था कि दुश्मन अगर भाई हो तो उसे टपका देने से पाप नहीं लगेगा बल्कि यश मिलेगा.

मजेदार बात तो यह भी है कि हरेक तीर्थस्थल पर मोक्ष और पापमुक्ति का विधान है. काशी में तो जगहजगह लिखा है कि यहां जो मरता है उसे मोक्ष मिलता ही मिलता है. जब यह सहूलियत हर जगह है तो चारधाम ही क्यों, इस सवाल का जवाब बेहद साफ है कि खुद श्रद्धालुओं के दिलोदिमाग में इन कहानियों को सुन शंका रहती है कि वाकई में असल मोक्ष कहां मिलेगा, इसलिए मोक्ष के मारे वे यहां से वहां भटकते व दानदक्षिणा देते रहते हैं.

ये भक्त इतने अंधविश्वासी होते हैं कि मुमकिन है कि मन में यह मन्नत ले कर जाते हों कि हे प्रभु, चारधाम की यात्रा में ही कहीं हमें उठा लेना जिस से जन्ममरण के चक्र से मुक्ति मिले. ऊपर वाला अभी तक 11 की सुन चुका है, पिछले सालों में कितनों की सुनी थी, यह ऊपर बताया ही जा चुका है. ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# बालिका गृहों में यौन शोषण

• नसीम अंसारी कोचर



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

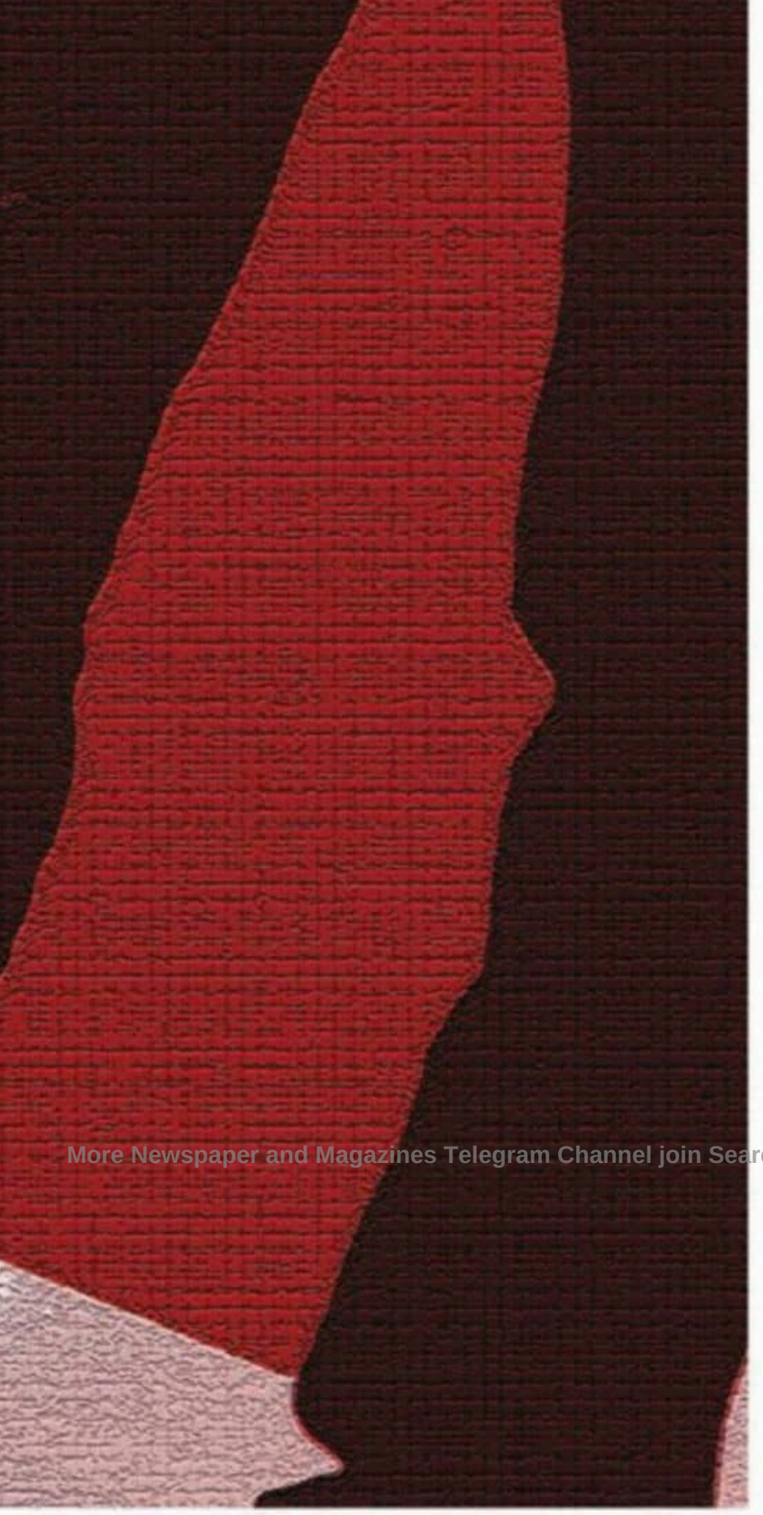

किशोर गृहों, बालिका गृहों और अनाथाश्रमों से बच्चों के भाग जाने की खबरें लगभग हर दिन अखबारों के किसी न किसी कोने में होती हैं क्योंकि इन गृहों में तैनात रक्षक ही भक्षक बन चुके हैं. नन्हीनन्ही बच्चियां यहां दुराचार का शिकार हो रही हैं और उन की चीखें सुनने वाला कोई नहीं है.

पूर्वी चंपारण में जिला मुख्यालय मोतिहारी शहर के बरियारपुर स्थित एक बालिका गृह से 28 अप्रैल को 9 लड़कियां फरार हो गईं. घटना का खुलासा हुआ तो हड़कंप मच गया. एसपी कांतेश कुमार मिश्र के निर्देश पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने 2 बच्चियों को बरामद कर लिया मगर 7 अभी भी लापता हैं, जिन की तलाश जारी है. एकसाथ 9 बच्चियों के बालिका गृह से फरार होने के बाद बालिका गृह की सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है. निश्चित ही ये बच्चियां उत्पीड़न से परेशान हो कर यहां से भागीं.

पिछले साल दिसंबर में छपरा में बालिका गृह की खिड़की तोड़ कर 5 लड़कियां भाग गई थीं. उस से पहले नवंबर में मुरादाबाद के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के एक बालिका गृह से 3 किशोरियां भाग निकली थीं. 9 महीने पहले बोधगया में बालिका गृह से एक नाबालिग लड़की फरार हो गई थी. वह करीब 13 दिनों से इस बालिका गृह में रह रही थी. किशोर गृहों, बालिका गृहों और अनाथाश्रमों से बच्चों के भाग जाने की खबरें लगभग हर दिन अखबारों के किसी न किसी कोने में होती हैं जिन पर सरसरी निगाह डाल कर हम पन्ना पलट देते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## कहां सुरक्षित बालिकाएं

बात 2012 की है. इलाहाबाद, जिसे योगी सरकार में अब प्रयागराज कहा जाता है, के सरकारी शिशु गृह शिवकुटी से 7 साल की बच्ची को एक युगल ने गोद लिया था. यह बच्ची जब उस युगल के साथ उन के घर जाने के लिए तैयार



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हुई तो उस के चंद कपड़े भी युगल के सुपुर्द कर दिए गए.

घर पहुंच कर जब मांबाप ने बच्ची के कपड़े खोल कर देखे तो उन्हें उन पर खून के धब्बे दिखाई दिए. शक होने पर उन्होंने बच्ची से प्यार से पूछताछ की कि उस के साथ आश्रम में क्या होता था? थोड़ा सा प्यार पा कर बच्ची हिलकने लगी और उस ने रोरो कर एक भयावह कहानी बयां की, जिसे सुन कर उस को गोद लेने वाले मांबाप अवाक रह गए. इस बच्ची से शिशु गृह का चौकीदार विद्याभूषण ओझा अकसर बलात्कार करता था.

वह युगल सीधे शिशु गृह की सुपरिंटेंडैंट उर्मिला गुप्ता के पास पहुंचा. उर्मिला गुप्ता को जब उन्होंने सारी बात बताई तो उस का रिऐक्शन कुछ खास नहीं था. जाहिर था कि वहां क्या चल रहा है, इस बात की उसे पूरी जानकारी थी. मगर वह इतना समझ गई कि यदि उस ने खुद कोई कदम नहीं उठाया तो वह दंपती पुलिस और मीडिया तक जा सकता है.

लिहाजा, उर्मिला गुप्ता को मजबूरीवश पूरी बात इलाहाबाद के पुलिस अधीक्षक और जिलाधिकारी के संज्ञान में लानी पड़ी, जिस के बाद हुई कार्रवाई में चौकीदार विद्याभूषण ओझा को गिरफ्तार कर पूछताछ की गई. पूछताछ में उजागर हुआ कि वह उस गृह की कई बच्चियों के साथ बलात्कार करता है. उस के साथ रसोइया भी इस कुकर्म में शामिल रहता है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हैरत की बात यह कि 50 वर्षीय वह चौकीदार उस शिशुगृह में पिछले 6 सालों से तैनात था. सुपरिंटेंडैंट उर्मिला गुप्ता अकसर उस के साथ अनेक बच्चियों को इलाज आदि के लिए सरकारी अस्पताल भी भेजती थी. यह घटना थर्रा देने वाली थी.

चौकीदार विद्याभूषण ओझा ने 7 से 9 वर्ष आयुवर्ग की जिन बच्चियों का बलात्कार किया उन में से 2 बच्चियां मानसिक रोगी थीं. इस मामले में 11 अप्रैल, 2012 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इलाहाबाद के पुलिस अधीक्षक और जिलाधिकारी को तलब किया और पूरे कांड की जांच के लिए एक कमेटी गठित की. उस कमेटी ने जब शिशु गृह में जा कर बच्चों से बात की तो चौकीदार और रसोइए की घिनौनी हरकतों की परतें उधड़ती चली गईं.






More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हैरत की बात है कि इस शिशु गृह में इस चौकीदार की ड्यूटी सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक होती थी. उस की हिम्मत की इंतहा यह थी कि वह दिन के उजाले में बच्चियों के साथ बलात्कार करता रहा और बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदार सुपरिटैंडैंट से ले कर पूरा स्टाफ आंखें मूंदे रहा.

बच्चों के लिए बनाए गए किसी भी 'होम' का जुवेनाइल जस्टिस एक्ट के तहत पंजीकृत होना जरूरी है लेकिन रिपोर्ट के मुताबिक अधिकतर पंजीकृत नहीं.

घटना के खुलासे के बाद शिशु गृह में तैनात सभी कर्मचारियों को निलंबित किया गया और सुपरिटैंडैंट उर्मिला गुप्ता को गिरफ्तार कर चौकीदार व रसोइए के साथ नैनी जेल भेजा गया. इन के साथ बाल गृह की एक आया रमापति को भी जेल भेजा गया, जिस को चौकीदार और रसोइए के कुकृत्यों की पूरी जानकारी थी. चौकीदार ओझा की ड्यूटी इस आया और रसोइए के साथ दोपहर का खाना तैयार करने के लिए किचन में लगाई जाती थी, जहां एक कोने में ये बच्चियों को ले जा कर उन से दुराचार करता था.

## सुनने वाला कौन

मासूम बच्चियों के साथ शिशु गृहों और किशोर गृहों के कर्मचारियों द्वारा बलात्कार किए जाने की घटना दिल दहला देने वाली है. अधिकांश जगहों पर कमोबेश यही हालत है. इस से इनकार नहीं किया जा सकता है. देश में शिशु गृहों और किशोर गृहों से लड़कियों के भाग निकलने की घटनाएं आएदिन घटित होती हैं. जाहिर है कि बच्चियां न तो इन शिशु गृहों और किशोर गृहों में सुरक्षित हैं और न खुश हैं.

जुवेनाइल जस्टिस एक्ट के तहत दर्ज नीतिनियमों का कोई पालन किसी राजकीय गृह में नहीं हो रहा है. न तो बच्चों को कोई उचित शिक्षा दी जा रही

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बालिका गृह में रह रही बच्चियां पहले ही सामाजिक यातनाओं से जूझ रही होती हैं. यदि वे इन गृहों में भी सुरक्षित नहीं तो यह सब के लिए शर्म की बात है.

है, न उन की काउंसलिंग. यही वजहें हैं कि बहुत सारे अपराधी बच्चे भी जो सजा काट कर समाज में वापस जाते हैं, फिर अपराध के दलदल में समा जाते हैं.

काउंसलिंग और पुनर्वास के अभाव में वेश्यालय, कारखानों, खदानों, मिलों आदि से छुड़ाए गए बच्चे, इन राजकीय गृहों की यातनाओं से तंग आ कर मौका पाते ही यहां से भाग निकलते हैं और फिर उन्हीं जगहों पर जा कर काम करने लगते हैं. वजह एक ही है. इन गृहों में रक्षक ही भक्षक बन चुके हैं. नन्हीनन्ही बच्चियां यहां दुराचार की शिकार हो रही हैं. उन की चीखें सुनने वाला कोई नहीं है.

बच्चे मिट्टी का लोंदा होते हैं. उन्हें जिस सांचे में ढालें, उसी में ढलते चले जाते हैं. बड़े खुशनसीब होते हैं वे बच्चे जिन्हें मांबाप का भरपूर लाड़प्यार, अच्छी शिक्षा और स्वस्थ माहौल मिलता है. लेकिन बड़े ही अभागे हैं वे बच्चे जिन के बचपन को किसी श्राप ने डस लिया है, जो यतीम हैं, लावारिस हैं, अपने परिवार से बिछड़ गए हैं या अपराध की दलदल से निकाले गए हैं और सरकारी बालगृहों, यतीम गृहों या सम्प्रेक्षण गृहों में यातनापूर्ण जीवन जी रहे हैं, छटपटा रहे हैं, तिलतिल मर रहे हैं. जहां न मां की गोद है, न बाप का प्यार, न सुरक्षा न अपनापन. अगर कुछ है तो बस सरकारी कर्मचारियों का गुस्सा, आतंक, पिटाई, भूख, नशा, बीमारी, बलात्कार और मौत.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## गृहों का संचालन

गौरतलब है कि भिन्नभिन्न आयुवर्ग और भिन्न परिस्थितियों से आए बच्चों के लिए हर राज्य सरकार 4 प्रकार के गृहों का संचालन करती है–

1. औब्जरवेशन होम्स.
2. स्पैशल होम्स.
3. बालगृह.
4. शेल्टर होम्स.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

औब्जरवेशन होम्स में उन बच्चों को रखा जाता है जिन्हें किसी अपराध में लिप्त पाया जाता है. अदालत में जितने साल तक उन के केस की सुनवाई चलती है उतने साल ये बच्चे औब्जरवेशन होम में रहते हैं.

अदालत से उन के अपराध की सजा तय हो जाने के बाद बच्चों को औब्जरवेशन होम से स्पैशल होम में भेज दिया जाता है. जहां उन के जीवन में सुधार लाने के लिए बेहतर खानपान, व्यायाम, काउंसलिंग, शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा दिए जाने का प्रावधान जुवेनाइल एक्ट में दिया गया है.

बाल गृहों में वे बच्चे रखे जाते हैं जिन्हें बंधुआ मजदूरी, वेश्यावृत्ति के अड्डों, मिलों, कारखानों, खदानों इत्यादि से छुड़ाया जाता है. इन में शिशु और किशोर बालकबालिकाएं आती हैं.

शेल्टर होम्स वे जगहें हैं जहां बच्चे सर्वप्रथम ला कर कुछ दिनों के लिए रखे जाते हैं.

## नारकीय और यातनापूर्ण जीवन

इन चारों प्रकार के गृहों में सरकार की तरफ से उन सारी सुविधाओं का होना आवश्यक है जिन से बच्चे का पूर्ण विकास हो सके, उन को बेहतर शिक्षा दी जा सके और पर्याप्त काउंसलिंग के जरिए उन के जीवन में ऐसा सुधार लाया जाए ताकि जब वे अपना वक्त बिता कर यहां से वापस अपने समाज और परिवार में जाएं तो एक अच्छे नागरिक के रूप में आगे का सफर तय कर सकें, लेकिन अफसोस, कि 'सुधार गृहों' के नाम पर चल रहे देश के तमाम सरकारी गृहों में जीवन काट रहे बच्चों के जीवन में सुधार लाने जैसी कोई गतिविधि कहीं नहीं हो रही है, अलबत्ता इन सरकारी गृहों का निरीक्षण करने पर पता चलता है कि यहां बच्चों का जीवन कितना नारकीय और यातनापूर्ण है.

सरकारी घरों में बच्चों को भरपेट भोजन न मिलना, कोई गलती हो जाने पर उन्हें भूखा रखना, उन की बीमारी में उन्हें उचित इलाज न मिलना, उन्हें खेलकूद की सुविधाएं उपलब्ध न होना, छोटीछोटी बातों पर उन को बुरी तरह पीटा जाना जैसे तमाम अमानवीय और क्रूर व्यवहार बहुत आम हैं.

सरकारी अनाथाश्रमों एवं किशोर गृहों में नन्हे मासूम बच्चों की दयनीय दशा और उन के साथ सरकारी कर्मचारियों का बर्बर सलूक बताता है कि 'सुधार गृहों' का बोर्ड लगा कर चल रहे इन जेल सरीखे आश्रम 'यातना गृहों' में तबदील हो चुके हैं जहां बच्चों के साथ मारपीट से ले कर बलात्कार तक हो रहे हैं, लेकिन मासूमों की चीखें इन चारदीवारियों से बाहर नहीं आ पातीं. यही वजह है कि सुधार गृहों की यातनाओं से तंग आ कर बच्चों के वहां से भाग निकलने की खबरें आएदिन अखबारों की सुर्खियां बनती हैं.

राजकीय गृहों में रहने वाले बच्चों के शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न की तरफ सर्वप्रथम शीला वारसे नामक एक सामाजिक कार्यकर्ता का ध्यान गया था. पश्चिम बंगाल और खासतौर पर कोलकाता की जेलों में बने बाल सुधार गृहों में बच्चों की दयनीय हालत देख कर वे हैरान थीं. यहां उन बच्चों की हालत बेहद नाजुक थी जो मानसिक रूप से अस्वस्थ थे अथवा मिर्गी के रोगी थे. इन सभी बच्चों को स्वस्थ बच्चों के साथ ही

More Newspaper and Magazines Telegram channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रखा जाता था. इन की देखभाल के लिए किसी भी मानसिक चिकित्सक की कोई व्यवस्था नहीं थी. नतीजतन, वार्ड के स्वस्थ बच्चे और कभीकभी जेलकर्मी इन मानसिक रोगी बच्चों की हरकतों से खीझ कर उन्हें बुरी तरह मारतेपीटते थे और उन्हें बांध कर भूखा रखते थे.

शीला वारसे ने 27 जनवरी, 1989 को तत्कालीन चीफ जस्टिस औफ इंडिया आर एस पाठक को एक संवेदनशील पत्र लिख कर उन का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था.

शीला वारसे के पत्र को चीफ जस्टिस औफ इंडिया ने एक जनहित याचिका के रूप में लिया और मामला सुनवाई के लिए उच्चतम न्यायालय में आया. लंबी चली सुनवाई के बाद उच्चतम न्यायालय में जस्टिस बी पी जीवन रेड्डी एवं जस्टिस एन के मुखर्जी की बैंच ने 5 सितंबर, 1995 को देश के तमाम उच्च न्यायालयों को आदेशित किया कि वे सरकारी अनाथाश्रमों, बाल एवं किशोर सुधार गृहों में रह रहे बच्चों और किशोरों के उचित संरक्षण व उचित सुविधाएं देने के लिए राज्य सरकारों को आदेश पारित करें.

बालिका गृह में रहने वाली अधिकतर बच्चियां या तो अनाथ होती हैं या उन के मांबाप उन्हें लावारिस जीवन जीने के लिए छोड़ देते हैं.

## क्या कहते हैं नियम

बच्चों की स्थिति को कैसे सुधारा जाए, उन की देखभाल, पोषण, शिक्षा और सुरक्षा कैसे की जाए, उन की काउंसलिंग किस प्रकार हो तथा उन का पुनर्वास कैसे कराया जाए आदि को देखने और आदेश पारित करने की जिम्मेदारी उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालयों को सौंपी है. उच्च न्यायालयों में यह मामला क्रिमिनल मिसलेनियस पिटीशन नंबर 505/1994 इन रिट पिटीशन (क्रिमिनल न. 237/1989 शीला वारसे बनाम यूनियन औफ इंडिया) के तौर पर दर्ज है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अदालतों के संज्ञान में आने के बाद कई राज्यों ने सुधार गृहों के संबंध में नए कानून भी बनाए, लेकिन वर्तमान समय में जुवेनाइल जस्टिस एक्ट 2000 ही सब से ज्यादा मान्य है, जिस में अनाथ या अपराधी बच्चों की देखभाल, सुरक्षा, पुनर्वास इत्यादि के विषय में कुछ नियम तय हैं, जैसे–

प्रत्येक बच्चे के विकास के लिए 40 वर्ग फुट स्पेस का होना सुनिश्चित किया गया है. इस के अतिरिक्त सरकारी गृहों में प्रति 25 बच्चों के पीछे 2 डोरमेट्रीज, 2 कक्षाएं, एक चिकित्सा कक्ष, एक किचन, एक खाने का कमरा, एक स्टोररूम, एक



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मनोरंजन कक्ष, एक लाइब्रेरी, 5 बाथरूम, 8 शौचालय, एक सुपरिटैंडैंट का औफिस, एक काउंसलिंग रूम, एक वर्कशौप रूम, सुपरिटैंडैंट का आवास, जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड या वैलफेयर कमेटी के लिए एक औफिस एवं एक खेल का मैदान होना आवश्यक है.

इन सभी जरूरतों के लिए एक सरकारी गृह के पास कम से कम 8,495 वर्ग फुट की जगह होनी जरूरी है. लेकिन अधिकांश राज्य सरकारों के पास और खासतौर पर उत्तर प्रदेश सरकार के पास इन बच्चों को रखने के लिए अपनी इमारतें तक नहीं हैं. तमाम राजकीय गृह किराए के छोटेछोटे घरों में चलाए जा रहे हैं. राज्य में ऐसे सुधार गृह गिनती के हैं जिन में बच्चों के खेलने के लिए खेल के मैदान हों. हालत इतनी बदत्तर है कि छोटेछोटे चारपांच कमरों में 40-40 से 50-50 और कहींकहीं तो 100-100 बच्चे भेड़बकरियों की तरह रहने के लिए मजबूर हैं.

देश के विभिन्न राज्यों के उच्च न्यायालयों ने अनाथाश्रमों एवं सुधार गृहों में रह रहे बच्चों के संबंध में समयसमय पर राज्य सरकारों को दिशानिर्देश भी दिए हैं लेकिन सरकार द्वारा बच्चों के उद्धार के लिए कोई खास कदम नहीं उठाए गए हैं. उलटे, सरकारों ने इन बच्चों को संभालने की अपनी जिम्मेदारियों को स्वयंसेवी संस्थाओं की तरफ खिसका दिया है, जो अब धन कमाने और बच्चों के उत्पीड़न के बड़ेबड़े अड्डे बन चुके हैं.

प्रयागराज में शिवकुटी का शिशु गृह हो या मम्फोर्डगंज का बालिका आश्रम, सभी जगह एकजैसा हाल है. 11 से 18 वर्ष तक की बालिकाओं के लिए चल रहे राजकीय बाल गृह में 40 बालिकाओं के रहने के लिए मात्र 4 छोटेछोटे कमरे हैं. एक किचन, 2 शौचालय, 2 स्नानागार, एक छोटा बरामदा जिस में सुपरिटैंडैंट का औफिस चलता है. शौचालयों की साफसफाई इन्हीं बच्चियों से करवाई जाती है. दोदो, तीनतीन बच्चियां एक ही तख्त पर सोती हैं. न तो यहां खेलने का मैदान था और न मनोरंजन का कोई साधन.

## बदतर स्थिति में सुधार गृह

सुप्रीम कोर्ट द्वारा पूरे देश के बाल सुधार गृहों की स्थिति के अध्ययन के लिए न्यायाधीश मदन बी लोकुर की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की थी. इस न्यायिक रिपोर्ट के अनुसार, हमारे देश के सरकारी बाल सुधार गृहों में रह रहे 40 प्रतिशत 'विधि विवादित बच्चे' बहुत चिंताजनक स्थिति में रहते हैं. यहां उन्हें रखने का मकसद उन में सुधार लाना है, लेकिन हमारे बाल सुधार गृहों की हालत वयस्कों के कारागारों से भी बदतर है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

किशोर न्याय अधिनियम के कई सारे प्रावधान, जैसे सामुदायिक सेवा, परामर्श केंद्र और किशोरों की सजा से संबंधित अन्य प्रावधान जमीन पर लागू होने के बजाय अभी भी कागजों पर ही हैं. सुधार और आश्रय गृहों में रहने वाले बच्चे, खासकर लड़कियां, बिलकुल सुरक्षित नही हैं. सब से चिंताजनक बात यह है कि गृहों में बच्चियों के साथ बलात्कार, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार के ज्यादातर मामलों में वहां के कर्मचारी और अधिकारी ही शामिल होते हैं. और क्या खबर कि पैसे की हवस में इन बच्चियों को रात के अंधेरे में देह के भूखे भेड़ियों के पास भी भेजा जाता हो. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# सरकारी स्कूलों के बच्चे भी ला सकते हैं अच्छे नंबर

• गरिमा पंकज

अगर एक्स्ट्रा करिकुलम एक्टिविटी को हटा दिया जाए तो प्राइवेट और सरकारी स्कूलों के बीच बुनियादी सुविधाओं का अंतर धीरेधीरे खत्म होता जा रहा है. ऐसे में यदि मेहनत और लगन से पढ़ाई करवाई जाए तो सरकारी स्कूलों के बच्चे भी अच्छे अंक ला सकते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

यह एक आम धारणा है कि प्राइवेट स्कूलों के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों से अधिक होशियार होते हैं. इस के समर्थन में कई लोग बोर्ड परीक्षाओं के नतीजे भी दिखा सकते हैं. लेकिन हकीकत कुछ और है. पहली बात तो यह है कि प्राइवेट स्कूलों में बच्चों को दाखिला देने के पहले ही चुना जाता है. कई बार उन्हें चुनने के लिए कठिन परीक्षा भी आयोजित कराई जाती है. जाहिर है कठिन परीक्षाओं को पास कर के आने वाले बच्चे अपेक्षाकृत अधिक होशियार हो सकते हैं. वैसे भी प्राइवेट स्कूलों में उन अमीर बच्चों को ही लिया जाता है जिन के परिजन अपने बच्चों के लिए महंगेमहंगे ट्यूशन जरूर लगवाते हैं.

ऐसा कतई नहीं है कि सरकारी स्कूलों की क्वालिटी खराब होती है या वहां पढ़ने वाले बच्चे अच्छे नंबर नहीं ला सकते. दरअसल स्कूल की क्वालिटी का मतलब महंगी बिल्डिंग, इंग्लिश माध्यम और बच्चों को मिलने वाली बेहतर सुविधाओं की चीजों से ही नहीं लगाया जा सकता.

यह सच है कि सरकारी स्कूलों में सुविधाएं बहुत कम होती हैं. साथ ही, सरकारी शिक्षक सही ढंग से अपनी ड्यूटी भी नहीं निभा पाते क्योंकि उन के हिस्से में बच्चों को पढ़ाने के अलावा भी बहुत सी 'नैशनल ड्यूटीज' भी होती हैं. सरकारी स्कूल के शिक्षक चुनाव, जनगणना, पशुओं की गणना, हैल्थ सर्वे या ऐसे ही दूसरे कई कामों में व्यस्त रहते हैं. उस पर सरकारी स्कूलों में बच्चों की भारी संख्या के मुकाबले शिक्षकों की संख्या बहुत कम रहती है. फिर भी बच्चे मेहनत करें और साथ में ट्यूशन लें तो सरकारी स्कूलों के बच्चे किसी से कम नहीं.

आज का ट्रैंड हम यह देखते हैं कि अमीर परिवार तो अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाते ही हैं, मध्यवर्गीय परिवार भी खींचतान कर के अपने बच्चों को किसी भी तरह प्राइवेट स्कूलों में ही पढ़ाता है. भले ही उन स्कूलों की फीस चुकाने में उन्हें अपने मंथली बजट में काफी कंजूसी करनी पड़ती है लेकिन उन स्कूलों में पढ़ा कर वे अपनी शान समझते हैं. सब जानते हैं कि प्राइवेट स्कूल फीस और दूसरे चार्जेज के नाम पर हमें लूटते हैं, फिर भी हम अपना स्टैंडर्ड दिखाने के लिए बच्चों को वहीं भेजते हैं.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

सरकारी स्कूलों में यदि सरकार ध्यान व सुविधाएं दे तो यहां से पढ़े छात्र भी अच्छा परिणाम दे सकते हैं.

एक अनुमान के मुताबिक सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले करीब 90 प्रतिशत शिक्षकों के बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते हैं. केवल गरीब परिवार के बच्चे ही मजबूरी में सरकारी स्कूलों में दाखिला लेते हैं. अब यहां सवाल यह भी है कि एक गरीब का बच्चा अपनी गरीबी की वजह से बराबरी और बेहतर शिक्षा से बेदखल क्यों रहे? क्या जरूरी नहीं कि हम सरकारी स्कूलों में इतने सुधार लाएं और सुविधाएं दें कि इन स्कूलों में भी बेहतर शैक्षणिक माहौल बने और वहां गरीबों के अलावा अच्छे परिवार के बच्चे भी दाखिला लेने लगें.

कई देशों, जैसे अमेरिका या इंगलैंड में अलगअलग वर्गों से आने वाले बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं. वहां अलगअलग आर्थिक स्तर और योग्यता रखने वाले बच्चे एकसाथ बैठतेउठते और पढ़तेलिखते हैं. सभी बराबरी के साथ बेहतर मौके तलाशते हैं. वहां की शिक्षा पब्लिक के हाथों में है. वहां के स्कूलों से ऊंचनीच की सारी असमानताओं को हटा दिया गया है. वहां के स्कूलों में प्रवेश के पहले चुना जाना जरूरी नहीं है, जबकि भारत में प्राइवेट स्कूलों पर ज्यादा भरोसा किया जाता है. इस से प्राइवेट सैक्टर से जुड़े लोगों को मनमाने तरीके से मुनाफा कमाने का मौका मिलता है.

जरूरी है कि पूरे देश के हर हिस्से में शिक्षा का एकजैसा ढांचा, एकजैसा पाठ्यक्रम, एकजैसी योजना और एकजैसी नियमावली बनाई जाए. इस से मापदंड, नीति और सुविधाओं में होने वाले भेदभाव बंद होंगे. प्राइवेट स्कूल जिस तरह मनमानी फीस वसूलते हैं, वह बंद होगा. शिक्षा के दायरे से सभी परतों को मिटा कर एक ही परत बनाई जाए. इस से हर बच्चे को अपनी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भागीदारी निभाने का एकसमान मौका मिलेगा. सरकार को ऐसे स्कूलों की योजना बनानी चाहिए जो सारे भेदभावों का लिहाज किए बगैर सारे बच्चों के लिए खुली हो.

## ट्यूशन कल्चर पर जोर

भारत के 'ट्यूशन कल्चर' को अकसर काफी बुराभला कहा जाता है लेकिन कम आय वाले कई ऐसे अभिभावकों के लिए उन के पड़ोस की 'ट्यूशन आंटी' या 'मैथ्स सर' एक जीवनदान की तरह हैं जो बच्चों को वे ज्ञान दे सकते हैं जो उन्हें सरकारी स्कूलों में नहीं मिल पाता.

महंगी लागत के कारण अपने बच्चों को निजी से सरकारी स्कूलों में स्थानांतरित करने वाले मातापिता निजी कोचिंग के लिए अतिरिक्त भुगतान करने को तैयार रहते हैं. इस तरह बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ कर भी पूरा ज्ञान मिल जाता है.

एनजीओ 'प्रथम' द्वारा 25 राज्यों और 3 केंद्रशासित प्रदेशों में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर प्रकाशित 2021 की वार्षिक शिक्षा रिपोर्ट (ऐनुअल स्टेटस औफ़ एजुकेशन रिपोर्ट : एएसईआर या असर) के अनुसार लगभग 40 प्रतिशत स्कूली छात्रों को ट्यूशन कक्षाओं में भी नामांकित कराया गया था.

साल 2018 और 2021 के बीच उन बच्चों में ट्यूशन लेने के अनुपात में 12.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिन के मातापिता 'निम्न शिक्षा श्रेणी' से आते हैं. हालांकि 'उच्च शिक्षा श्रेणी' से आने वाले अभिभावकों के मामले में बच्चों की निजी ट्यूशन में हिस्सेदारी में केवल 7.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी.

शिक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार सरकारी स्कूलों में छात्रों का नामांकन 2019–20 के 13,09,31,634 से बढ़ कर 2021–2022 में 14,32,40,480 हो गया. इस का मतलब है कि इस अवधि के दौरान 1.23 करोड़ अतिरिक्त छात्रों ने सरकारी स्कूलों में दाखिला लिया. इसी अवधि के दौरान निजी गैरसहायता प्राप्त स्कूलों में हुए नामांकन में 1.81 करोड़ से अधिक की गिरावट आई है. अकेले दिल्ली में इस साल कथित तौर पर 4 लाख बच्चों को उन के अभिभावकों द्वारा सरकारी स्कूलों में स्थानांतरित किया गया.

## बुनियादी ढांचे का विकास जरूरी

स्कूलों के बुनियादी ढांचे का विकास जरूरी है. वर्तमान में सरकारी स्कूलों में ज्यादातर मजदूर और कृषि श्रमिकों के बच्चे ही अध्ययन करते हैं. ओबीसी कैटेगरी के 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे सरकारी स्कूलों में नामांकित हैं. सामान्य वर्ग के कम ही लोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ा रहे हैं. इस से कुछ लोगों को यह लगता है कि सरकारी स्कूलों में नीची जाति के बच्चों के साथ उन के बच्चों को पढ़ना पड़ेगा. ऐसी सोच बदलनी जरूरी है.

समाज में जो भेदभाव है वही स्कूल की चारदीवारी में है. यदि समाज में समानता लानी ही है तो सब से अच्छा तो यही रहेगा कि इस की शुरुआत शिक्षा और बच्चों से ही की जाए. इस के लिए सभी स्कूलों को समान महत्त्व देना होगा.

जो भी प्रशासनिक अधिकारी हैं वे

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

समस्या स्कूलों के अध्यापकों और पेरेंट्स की है. टीचर स्कूलों में पढ़ाते नहीं और पेरेंट्स उन की शिकायत करने की जगह बच्चों को कोचिंग में भेज देते हैं.

अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ाते हैं. इसलिए इन स्कूलों की तरफ सरकार का ध्यान भी नहीं है. सत्ता में बैठे ज्यादातर जिम्मेदार व्यक्ति यह नहीं चाहते कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर सुधरे. यही वजह है कि शिक्षकों को गैरशैक्षणिक कार्यों में झोंका जा रहा है.

अच्छे वेतन के बावजूद सरकारी स्कूलों के कुछ शिक्षक ठीक से काम नहीं कर रहे. जर्जर स्कूलों की वजह से भी विद्यार्थी इन से दूर हो रहे हैं. इस से सरकारी स्कूलों की हालत दिनोंदिन बद से बदतर होती जा रही है. कहीं पर बच्चों की तुलना में शिक्षकों की संख्या ज्यादा है तो कहीं शिक्षकों का नितांत अभाव है.

इस प्रकार की विसंगतियों के चलते सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधरनी कठिन है. सरकारी स्कूलों की हालत सुधारने के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं लेकिन उन का क्रियान्वयन ठीक तरह से नहीं हुआ है. ग्रामीणों की बड़ी आबादी तो मिड डे मील और फ्री ड्रैस के लिए अपने बच्चों को स्कूल भेजती है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

जरूरी है कि सरकार सरकारी स्कूलों में सुधार पर ध्यान देना शुरू करे. पर्याप्त धन, वेल एजुकेटेड स्टाफ और बुनियादी ढांचे में इन्वैस्टमैंट के माध्यम से यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है. साथ ही, महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि अधिक से अधिक लोगों को इन स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

सरकारी स्कूलों की उपेक्षा से निजी स्कूलों की पौ बारह हो रही है. समय आ गया है सरकारी स्कूलों की दयनीय हालत में सुधार करने का. सरकार सरकारी स्कूलों की सही मौनिटरिंग करे. लोग इन स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाने से हिचकिचाएं नहीं. इन स्कूलों में पढ़ कर भी आप के बच्चे अच्छे नंबर ला सकते हैं और जीवन में नाम कमा सकते हैं. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# एंटीबायोटिक क्यों है खतरनाक

• उग्रसेन मिश्रा

अकसर लोग छोटीछोटी बीमारियों के लिए एंटीबायोटिक खाते हैं, लेकिन क्या आप को पता है कि एंटीबायोटिक दवा के अनावश्यक और अत्यधिक उपयोग सेहत पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है?



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

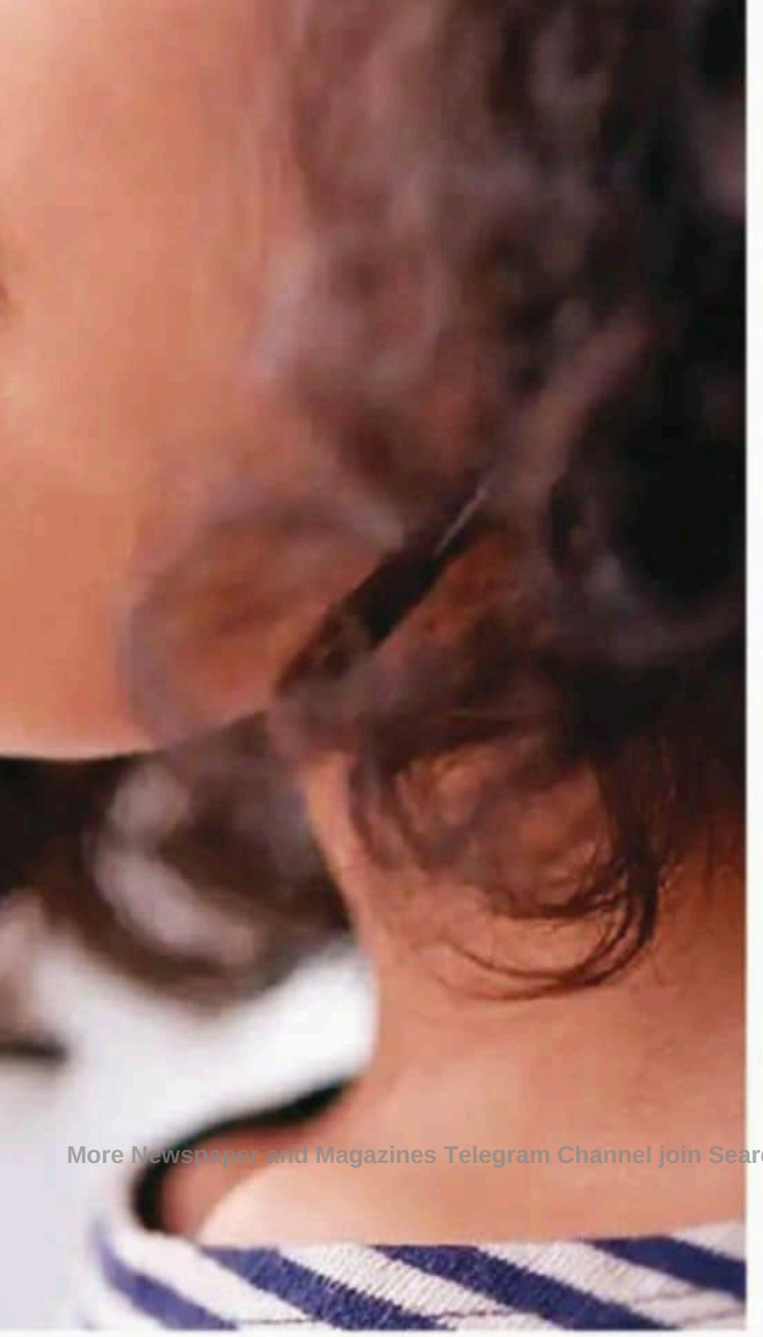

खराब जीवनशैली से कमजोर पड़ रहे इम्यून सिस्टम की वजह से आज छोटीछोटी बीमारियां भी बड़ा रूप लेने लगी हैं और इन से निबटने का जो आसान विकल्प नजर आता है वह है एंटीबोयोटिक. मगर क्या आप को पता है कि यह सेहत पर कितना बुरा असर डाल सकती हैं. डाक्टरों का कहना है कि एंटीबायोटिक दवाएं हमारी सेहत के लिए खतरनाक हैं और दुनियाभर में इन दवाओं का दुरुपयोग हो रहा है.

एंटीबायोटिक सिर्फ बैक्टीरियल इंफैक्शन से होने वाली बीमारियों पर असर करता है, लेकिन देखा यह गया है कि सर्दीजुकाम, फ्लू, ब्रौंकाइटिस या गला खराब होने पर कई डाक्टर भी एंटीबायोटिक दवा दे देते हैं या फिर लोग खुद मैडिकल स्टोर से खरीद लेते हैं. कैमिस्ट भी 20–25 रुपए की पुड़िया बना कर अपने हिसाब से एंटीबायोटिक दे देता है. आज लोग हैल्दी फूड और ऐक्सरसाइज पर निर्भर न हो कर पूरी तरह दवाइयों पर निर्भर हो गए हैं. छोटीछोटी बीमारियों के इलाज के लिए सब से ज्यादा एंटीबायोटिक का इस्तेमाल हो रहा है.

लोग भी सोचते हैं कि अगर हम डाक्टरों को दिखाते तो वे हमें एकडेढ़ हजार रुपए का चूना लगा देते. लेकिन हमारी यह सोच एकदम गलत है. आप यदि डाक्टर को नहीं दिखाना चाहते हैं तो कम से कम कैमिस्ट शौप से तो एंटीबायोटिक दवा न लें. दुनियाभर में हर वर्ष एंटीबायोटिक दवाइयों के बेअसर होने की वजह से लगभग 6 से 7 लाख से अधिक लोग अपनी जान गंवा देते हैं. अगर यही हाल रहा तो 2050 तक यह संख्या बढ़ कर एक करोड़ तक हो सकती है.

अगर आप छोटीछोटी बीमारियों के लिए इसी तरह मैडिकल स्टोर से एंटीबायोटिक का सेवन करते रहेंगे तो एक दिन ऐसा आएगा जब आप के शरीर को एंटीबायोटिक की जरूरत होगी लेकिन वह बेअसर होगी और आप जान से भी हाथ धो बैठेंगे.

सर्दीजुकाम का इलाज घरेलू नुसखे से करें. स्टीम लें, नमकपानी के गरारे करें, ठंडी चीजें खाने से बचें, खाने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोपोंछ लें.

बीमारियों से बचने के लिए

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

साफसफाई जरूरी है. रसोईघर को साफसुथरा रखें. सब्जियां व फल हमेशा अच्छी तरह धो कर खाएं. बच्चों को जरूरी वैक्सीन लगवाना न भूलें. यदि आप ऐसा करेंगे तो निश्चित रूप से ठीक हो सकते हैं. लेकिन इस से भी ठीक नहीं हो रहे हैं तो डाक्टर को दिखाएं और डाक्टर से परामर्श ले कर ही एंटीबायोटिक दवा लें.

डाक्टर चिंता कर रहे हैं कि एंटीबायोटिक का दुरुपयोग किया जा रहा है और बैक्टीरिया इन दवाओं के प्रति

डाक्टर मरीज की शारीरिक स्थिति को देख कर एंटीबायोटिक दवा लिखते हैं जो सीधे बैक्टीरिया पर असर करती है.

इतने रेजिस्टैंट हो रहे हैं कि इन एंटीबोयोटिक का उन पर कोई असर नहीं हो रहा है यानी कि एंटीबायोटिक से ज्यादा ताकतवर बैक्टीरिया हो गया है.

एंटीबायोटिक 2 तरह के होते हैं. एक अंटीबायोटिक और दूसरा एंटीबायोटिक. जो बिना डाक्टरी परामर्श के खरीद कर खा रहा है वह अंटीबायोटिक है यानी असुरक्षित दवाएं और डाक्टर द्वारा प्रिस्क्राइब किया हुआ एंटीबायोटिक है.

एंटीबायोटिक दवाओं से किडनी, कान, डायरिया, लिवर खराब हो सकता है. एलर्जिक रिऐक्शन के साथ महिलाओं में वैजाइनल इन्फैक्शन होने के चांसेज बढ़ जाते हैं और एंटीबायोटिक रेजिस्टैंट से मौत भी हो सकती है.

## इनडोर पौल्यूशन का कैसे करें सौल्यूशन

एंटीबायोटिक के अलावा वायु प्रदूषण से हमारी रोजमर्रा की जिंदगी पर असर पड़ रहा है. इनडोर पौल्यूशन दूसरा सब से बड़ा हत्यारा है. भारत में हर वर्ष लगभग 13 लाख मौतें इनडोर पौल्यूशन के कारण होती हैं. भारत में घर के अंदर हवा की गुणवत्ता पर कोई पुख्ता नीति नहीं है. राजधानी दिल्ली का हाल इतना खराब हो चुका है कि यहां सांस लेना दूभर हो गया है. वायु प्रदूषण से लोग बाहर तो परेशान हैं ही, अब घर के अंदर भी महफूज नहीं हैं.

घर के अंदर बहुत से कारण ऐसे हैं जो हमें दिखाई नहीं देते. धूल, मिट्टी के कण, पराग के कण, कचरे के कण हमें खुली आंखों से नहीं दिखाई देते. ये सभी इनडोर पौल्यूशन बढ़ाते हैं.

चूल्हे से निकलने वाला धुआं यानी कालिख, अगरबत्ती, कपूर, दीया आदि पूजापाठ के समय जलाए जाते हैं, जिन से लोगों को लगता है कि इस से कुछ भी नहीं होता पर वे लोग मुगालते में रहते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

इन सब चीजों से घर के अंदर का वातावरण अशुद्ध होता है.

यहां डाक्टरों की बात से यह तो समझ आया कि घर के अंदर की आबोहवा को ठीक रखना है तो यह सब न करें पर इस देश में अंधविश्वासों की कमी नहीं है जो हर रोज घरों में सुबहशाम दीया, अगरबत्ती या कपूर जला कर भगवान को खुश करने में लगे रहते हैं. तथाकथित भगवान खुश होते हैं कि नहीं, यह तो मालूम नहीं पर ऐसे लोग अपने घर के वातावरण को जरूर अशुद्ध कर देते हैं जिस का

सभी की समयसमय पर साफसफाई करते रहें.

घर के अंदर वैंटिलेशन का होना बहुत जरूरी है, खासकर लिविंग व किचन एरिया में बेहतर वैंटिलेशन की जरूरत है जिस से घर में हवा का आनाजाना बना रहे.

लकड़ी व कोयले की जगह वैकल्पिक ईंधन का इस्तेमाल करें. घर के अंदर धूम्रपान न करें, अधिक से अधिक पौधे लगाएं. अरेका पाम, मदर इन लौज टंग और मनीप्लांट जैसे पौधे

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

साफसफाई रहेगी तो व्यक्ति अपने शरीर को कीटाणु, बैक्टीरिया और वायरस से बचा सकता है. सफाई से संक्रमण का खतरा कम होता है.

---

खमियाजा किसी न किसी बीमारी के रूप में उन्हें दिखाई पड़ता होगा, लेकिन उन्हें यह पता तक नहीं चलता होगा.

लोग अपने घर को सुंदर व आकर्षक बनाने के लिए प्लास्टिक के पौधे व झालर लगाते हैं जिन में धूलमिट्टी जम जाती है. इस के अलावा सोफे, गद्दे, तकिए, कारपेट आदि में भी प्रदूषण मौजूद रहता है. इसलिए इन

लगाएं. घर के अंदर रखे रैफ्रिजरेटर, ओवन व एसी की नियमित अंतराल पर सर्विस करवाएं ताकि हानिकारक गैसों से बच सकें.

घर के अंदर रखे सामान की समयसमय पर साफसफाई करते रहें. फर्नीचर के नीचे धूल व डस्ट को अच्छी तरह से साफ करें ताकि इंडोर पौल्यूशन से कुछ हद तक बचा जा सके. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# क्या आसान हो गया है जैंडर चेंज कराना

• वेणी शंकर पटेल 'ब्रज'



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

आजकल जैंडर चेंज कराने की खबरें देश के हर छोटेबड़े शहर से आ रही हैं. जैंडर चेंज कराने को समाज अलग ही नजर से देख रहा है. लोगों को लगता है कि कुछ लोग शौकिया तौर पर अपना जैंडर बदल रहे हैं, हालांकि वास्तविकता कुछ और है.

दरअसल जैंडर चेंज कराने के पीछे जैंडर आइडैंटिटी डिसऔर्डर या जैंडर डायसोफोरिया है. इस के पीछे हार्मोनल बदलाव के साथसाथ कुछ मानसिक परेशानियां भी हैं. जैंडर डायसोफोरिया होने पर एक लड़का लड़की की तरह और एक लड़की लड़के की तरह जीना चाहती है. यानी वे अपोजिट सैक्स में खुद को ज्यादा सहज पाते हैं.

कई पुरुषों में बचपन से ही महिलाओं जैसी और कई महिलाओं में पुरुषों जैसी आदतें होती हैं. ये लक्षण 10-12 साल की उम्र से दिखने शुरू हो जाते हैं. जैसे कोई पुरुष है तो वह महिलाओं जैसे कपड़े पहनना पसंद करने लगेगा, महिलाओं की तरह चलने की कोशिश करेगा, उन्हीं की तरह इशारे करेगा. ऐसा ही महिलाओं के साथ होता है, जिस में वे पुरुष की तरह जीना चाहती हैं. लड़केलड़कियां जब अपने मन की इस बात को अपने पेरैंट्स को बताते हैं तो कई दफा पेरैंट्स बच्चों की इस प्रौब्लम पर ध्यान नहीं देते. इस का नतीजा सुसाइड के रूप में देखने को मिलता है.

दिसंबर 2023 में मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में एक अनोखी शादी चर्चा का विषय रही. इंदौर के रहने वाले अस्तित्व सोनी जन्म से तो लड़की थे और उन के मातापिता ने इसी के अनुसार उन का नाम अलका रखा था. युवावस्था आने पर

जैंडर चेंज कराने के पीछे जैंडर आइडैंटिटी डिसऔर्डर या जैंडर डायसोफोरिया है. इस के पीछे हार्मोनल बदलाव का होना है. जैंडर चेंज कराने वालों या इस की इच्छा रखने वालों का लोग अकसर मजाक उड़ाते हैं, पर समझने की बात यह है कि इसे कराने वाले ही जानसमझ सकते हैं कि वे अपनी लाइफ में क्या कुछ नहीं झेल रहे होते.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अलका को यह महसूस हुआ कि वह लड़कियों जैसा नहीं बल्कि लड़कों जैसा महसूस करती हैं. इस के बाद उन्होंने निजी स्तर पर अपनी पहचान बदल ली. इस काम में उन्हें काफी दिक्कतें आईं. उन के परिवार ने भी शुरुआत में बदनामी के डर से उन का साथ नहीं दिया. मगर अलका ने अपने मन की सुनते हुए लड़का बन जाने की ठान ली. इस के लिए उन्होंने पुरुषों जैसे ही कपड़े पहनने चालू कर दिए. इस के बाद वर्ष 2023 के आखिर में उन्होंने अपना लिंग परिवर्तन करवाने का फैसला किया.

दिसंबर 2023 में मध्य प्रदेश के इंदौर में जैंडर चेंज करा कर अस्तित्व से अलका बनने वाली लड़की की शादी खासी चर्चा में रही.

इस के लिए उन्होंने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के पास आवेदन किया. मंत्रालय से मंजूरी मिलने के पश्चात वह एक मनोरोग विशेषज्ञ से मिली और इसी के साथ इंदौर जिला प्रशासन को उन्होंने आवेदन किया. सारी कागजी प्रक्रिया पूरी करने के बाद उन्होंने मुंबई में मार्च 2023 में अपना औपरेशन करवा लिया. औपरेशन करवाने के बाद अलका का नाम अस्तित्व हो गया और उन्होंने अपनी बहन की सहेली आस्था को शादी के लिए मना लिया. इस के लिए कुछ दिनों पूर्व इंदौर के कोर्ट में आवेदन दिया था जिस पर विचार करने के बाद अपर कलैक्टर ने उन्हें इस विवाह की अनुमति दे दी.

अस्तित्व और आस्था ने 7 दिसंबर, 2023 को यह शादी कोर्ट में कर ली जिस में कुछ परिवारजन भी शामिल हुए.

एक कहानी मध्य प्रदेश के बैतूल की स्वाति से शिवाय बने 35 साल के एक सौफ्टवेयर इंजीनियर की है जिन्होंने 3 साल की लंबी मशक्कत के बाद 2023 में अपना जैंडर फीमेल से बदल कर मेल करवा लिया है. ताप्ती नदी के किनारे बसे मध्य प्रदेश के बैतूल में संजय कालोनी में रहने वाले शिवाय की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## कहानी शिवाय की

शिवाय का शरीर तो लड़कियों वाला था लेकिन उस की आत्मा यही कहती थी कि मैं वह नहीं हूं जो दिखाई देती हूं. मेरा दिमाग और शरीर एकदूसरे से मेल नहीं खाते थे. कभीकभी मुझे अपने ही शरीर से चिढ़ सी होने लगी थी. उस का यह फ्रस्ट्रेशन तब और बढ़ गया जब 8वीं क्लास में आते ही पीरियड शुरू हो गए. वह अंदर ही अंदर घुटन महसूस करने लगा. उसे अपने शरीर से ही नफरत होने लगी थी.

2006 में गवर्नमैंट गर्ल्स स्कूल बैतूल से हायर सैकंडरी स्कूल परीक्षा पास करने के बाद स्वाति ने भोपाल के कालेज से 2010 में बीसीए पास कर लिया था.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

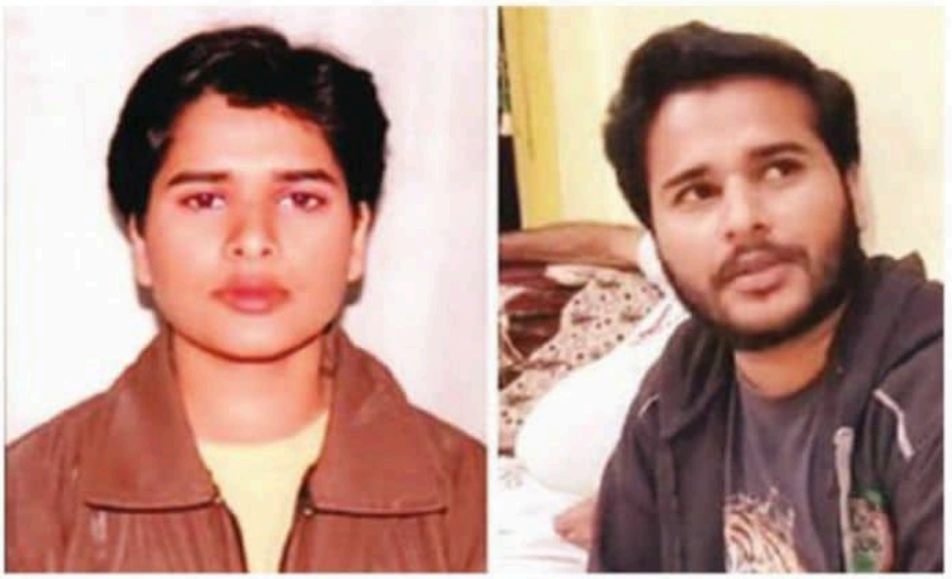

कई सर्जरियों से गुजरने के बाद आखिरकार स्वाति शिवाय में बदली. आज उसे देख कर कोई नहीं कह सकता कि वह कभी लड़की रही होगी.

बीसीए की पढ़ाई के दौरान उसे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा. उस समय स्वाति से यह सब सहन नहीं हो रहा था. इसलिए उस ने फैसला किया कि वह अपना जैंडर जरूर चेंज कराएगी. उस ने इस के लिए इंटरनैट और सोशल मीडिया का सहारा लिया. इंटरनैट पर उस ने खूब सर्च किया और बहुत सारी जानकारी हासिल की.

घरवालों ने उस की शादी के लिए लड़का भी देखना शुरू कर दिया. एकदो रिश्ते आए भी मगर उस की हेयरस्टाइल और कपड़े देख कर वे हैरान रह जाते. एक दिन उस की मम्मी उर्मिला ने उसे पास बिठाया और उस के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "देख स्वाति, अब तो तू बड़ी हो रही है. अपने बाल बढ़ा ले और लड़के वाले कपड़े पहनना छोड़ दे." मगर स्वाति कतई इस के लिए तैयार न थी.

उस ने मम्मी से दोटूक कह दिया, 'देखो मम्मी, मुझे बारबार टोका मत करो. मैं तो लड़के के रूप में ही अच्छी हूं.' घर में सब की लाड़ली होने के कारण कोई भी उस से कुछ भी कहने के बजाय खामोश रहता मगर आसपास रहने वाले लोग स्वाति के घर वालों को ताने देने लगे थे. इस से स्वाति का मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा था.

आखिरकार एक दिन खुद को मजबूत करते हुए स्वाति ने घरवालों से बात की. उस ने मम्मीपापा से साफ कह दिया, 'तुम मुझे भले ही लड़की समझते हो मगर मुझे फीलिंग लड़कों वाली आती है. मैं तो अपना जैंडर चेंज करा कर लड़का बनना चाहती हूं.' अभी कुछ महीने पहले ही शिवाय की चौथी सर्जरी हुई थी जिस में स्किन टाइट करवाई गई है. इस के बाद आराम किया और अब नवंबर 2023 से इंदौर में रह कर फिर से अपना जौब शुरू कर दिया है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## एक और किस्सा

इसी तरह 4 दिसंबर, 2022 को राजस्थान के भरतपुर जिले के डींग में राजकीय माध्यमिक विद्यालय नगला मोती में फिजिकल टीचर मीरा कुंतल ने लड़का बन अपने स्टूडैंट कल्पना के साथ शादी कर ली थी. मीरा कुंतल के जैंडर चेंज कराने के बाद अब लोग उन्हें मीरा नहीं बल्कि आरव कुंतल के नाम से जानते हैं.

मीरा पैदा तो लड़की के रूप में हुई थी लेकिन उस के हावभाव लड़कों जैसे थे. उस का पहनावा भी लड़कों जैसा ही था. मीरा ने भी अपनी पहचान बदलने का निश्चय किया और अपना जैंडर चेंज



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भरतपुर जिले के डींग में फिजिकल टीचर मीरा अपना जैंडर चेंज करा कर लड़का बन गई. उस ने अपनी स्टूडैंट कल्पना से शादी कर ली.

करवा लिया. आरव बनी मीरा ने कल्पना नाम की लड़की से शादी कर ली.

पेशे से फिजिकल टीचर आरव की जबानी, "मैं शुरू से ही जैंडर चेंज कराना चाहता था. 2012 में मैं ने एक न्यूज में पढ़ा था कि किसी ने जैंडर चेंज कराया है. तभी से मैं ने सोचा कि यह सब कहां और कैसे होगा. तभी यूट्यूब के जरिए मुझे पता लगा कि दिल्ली में एक डाक्टर हैं जो जैंडर चेंज करने की सर्जरी करते हैं. मैं वहां गया और अपना इलाज कराया. 2019 से इलाज शुरू हुआ और लास्ट सर्जरी 2021 में हुई. मैं लड़की के रूप में पैदा हुई मगर मुझे लगता था कि मैं लड़की न हो कर लड़का हूं. इसलिए मैं ने अपना जैंडर चेंज करा लिया और अपनी स्टूडैंट कल्पना से शादी कर ली. अब हमारे परिवार के लोग खुश हैं."

शादी करने वाली स्टूडैंट कल्पना का कहना था, "मेरे स्कूल में फिजिकल टीचर थी मीरा जिन्होंने मुझे 10वीं कक्षा से ही खेल खिलाया है. मेरा खेल कबड्डी है और आज मैं जो भी हूं मेरे पति बने आरव की वजह से ही हूं."

कल्पना का कहना है, "मैं शुरू से ही इन को चाहती थी और अगर ये अपनी सर्जरी न भी कराते तो भी मैं इन से शादी करने को तैयार थी. यह बात हमारे दिमाग में भी थी कि लोग क्या कहेंगे. हम गुरु और शिष्य थे, गुरु ने शिष्या से शादी कर ली. हम ने अपने परिवार वालों से बात की और परिवार वाले राजी हो गए. मेरे पति ने अपना जैंडर चेंज करा लिया, वह लड़का बन गई. हम दोनों में प्यार था, इसलिए हम दोनों ने शादी कर ली."

एक समय में कांग्रेस की महासचिव रहीं अप्सरा रेड्डी भी जैंडर चेंज कराने के बाद लड़के से लड़की बनी हैं. आंध्र प्रदेश के नेल्लोर में जन्मी अप्सरा रेड्डी का असल नाम अजय रेड्डी था. अप्सरा रेड्डी ने थाईलैंड के येन अस्पताल में अपना लिंग

एक समय कर्नाटक कांग्रेस की महासचिव रहीं अप्सरा रेड्डी ने भी अपना जैंडर चेंज करवाया था.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

परिवर्तन कराया. डाक्टर सोमभून थामरुन्गारांग ने उन का औपरेशन किया था. अप्सरा को पहले 3 महीनों तक देखरेख में रखा गया था. वे 8 महीने तक बैंकौक में रहीं और उस के बाद अप्सरा की सर्जरी हुई.

अप्सरा की सर्जरी 8 घंटे से भी ज्यादा चली और उस के बाद उन्हें 2 घंटे तक निगरानी में रखा गया. जब अप्सरा को होश आया तो उन्हें काफी दर्द हुआ हालांकि वह फिर भी बेहद खुश थी. अप्सरा के इस फैसले में उस की मां ने साथ दिया लेकिन उन के पिता औपरेशन से बेहद नाराज थे. सर्जरी के अगले 4 दिनों तक अप्सरा अस्पताल में रही जिस के बाद उसे डिस्चार्ज कर दिया गया. बता दें, हार्मोन थेरैपी के दौरान उन्हें कई बार खुदकुशी के खयाल भी आते थे.

जैंडर चेंज कराने में लंबा समय लगता है. इस में कई सर्जरी करवानी पड़ती हैं जिस के लिए धैर्य का होना जरूरी है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

देश में जिस तरह जैंडर चेंज कराने के मामले सामने आ रहे हैं उस से तो यही लगता है कि अब जैंडर बदलवाना आसान हो गया है. जैंडर चेंज कराने वाले लोग दूसरे लड़केलड़कियों के लिए राह आसान बना रहे हैं. समाज में लोग क्या कहेंगे, इस डर से अपनी जिंदगी घुटघुट कर बिताने के बजाय अपनी परेशानी घरपरिवार के लोगों को बता कर जैंडर चेंज कराने का फैसला कहीं गलत नहीं है.

## जैंडर बदलने में लगता है वक्त

जैंडर चेंज की सर्जरी कराने वाले शिवाय से जैंडर चेंज के बारे में जब हम ने बातचीत की तो वे खुशी और आत्मविश्वास से लबरेज नजर आए. लंबी बातचीत में शिवाय ने बताया, "एक बार यूट्यूब पर आर्यन पाशा को देखा था. आर्यन लड़की से लड़का बने और फिर बौडीबिल्डर बन गए. यह वीडियो मेरे लिए प्रेरणास्रोत रहा और इस के बाद मैं ने भी लड़का बनने का ठान लिया था.

"सर्जरी कराने के पहले मानसिक टैस्ट होता है. मेरी जैंडर चेंज सर्जरी की शुरुआत 2020 में हुई थी. दिल्ली के औलमेक हौस्पिटल में 3 स्टैप में मेरी सर्जरी हुई है. जानेमाने सर्जन डाक्टर नरेंद्र कौशिक ने मेरी यह सर्जरी की है. पहली सर्जरी 2020 में जब शुरू हुई तो साइकोलौजिस्ट डा. राजीव ने मानसिक टैस्ट किया और डा. अरविंद कुमार ने हार्मोंस थेरैपी की थी, जिस में हार्मोंस चेंज होते हैं. इस थेरैपी के कुछ दिनों बाद ही आवाज चेंज होने लगी थी और चेहरे पर दाढ़ीमूंछ आने लगती हैं.

"वहीं दूसरी टौप सर्जरी में दोनों ब्रैस्ट को बौडी से रिमूव किया जाता है. थर्ड सर्जरी में बौटम पार्ट की सर्जरी की गई थी. इस सर्जरी के दौरान यूट्रस निकाला गया और सब से लास्ट में पेनिस डैवलप किया गया था. हर सर्जरी के बाद 3 माह



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

का आराम करना होता है. मैं ने हर सर्जरी के बाद 5 से 6 महीने का गैप लिया. अभी कुछ महीने पहले ही चौथी सर्जरी हुई थी, जिस में स्किन टाइट करवाई है. इस के बाद आराम किया और अब नवंबर 2023 से इंदौर में रह कर फिर से अपना जौब शुरू कर दिया है." पूरी सर्जरी में लगभग 10 लाख रुपए खर्च हुए हैं. शिवाय ने बताया कि वे पहले ही सर्जरी कराना चाहते थे, लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक न होने से सर्जरी नहीं करा पाए.

## दस्तावेजों में कैसे बदलता है नाम व लिंग

जैंडर चेंज करवाने के बाद सब से चुनौतीपूर्ण काम पहचान दस्तावेजों में नाम व जैंडर बदलने का रहता है. इस संबंध में शिवाय सूर्यवंशी बताते हैं, इस के लिए सब से पहले अपने जिले के कलैक्टर औफिस में एप्लीकेशन देनी होती है. फिर कलैक्टर औफिस से लैटर मिलने के बाद एजुकेशनल इंस्टिट्यूट में आवश्यक दस्तावेजों के साथ एप्लाई कर अपने क्वालिफिकेशन डौक्यूमैंट्स में नाम व जैंडर में बदलाव हो जाता है.

उन्होंने सब से पहले बैतूल कलैक्टर के समक्ष उपस्थित हो कर आवेदन किया था. कलैक्टर औफिस से जारी किए गए पत्र के साथ शिवाय ने बोर्ड औफ सैकंडरी एजुकेशन भोपाल के साथ माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल जहां से बीसीए किया और अहल्या विश्वविद्यालय इंदौर जहां से एमबीए किया था, वहां आवेदन किया. आवेदन के साथ उन्होंने जैंडर चेंज सर्जरी के समस्त डौक्यूमैंट्स भी पेश किए. इस आधार पर हाईस्कूल और हायरसैकंडरी स्कूल परीक्षा की मार्कशीट जो स्वाति नाम से बनी है, वहीं अब स्वाति का नाम परिवर्तित हो कर शिवाय हो गया है. जैंडर फीमेल से मेल हो गया है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

इसी तरह आधार कार्ड, पैनकार्ड, बैंक पासबुक और वोटर कार्ड में भी आसानी से नाम व लिंग में परिवर्तन कराया जा सकता है. शिवाय के सभी दस्तावेज पहले स्वाति सूर्यवंशी नाम से थे लेकिन सर्जरी के बाद उन के सभी दस्तावेजों में भी नाम बदल चुका है. शिवाय ने बताया कि अब उन्होंने ऐसे लोगों, जो जैंडर चेंज सर्जरी करना चाहते हैं, को जागरूक करना शुरू कर दिया है. इस के लिए उन्होंने 'शिवाय एमपीवाला' चैनल बनाया है. इस चैनल के माध्यम से शिवाय जैंडर चेंज सर्जरी के साथ ही दस्तावेजों में नामपता बदलने व बदलवाने की जानकारी विस्तार से देते हैं.

उन के इस चैनल को बड़ी संख्या में युवा फौलो भी कर रहे

अपना जैंडर चेंज करवाने के लिए डौक्यूमैंटेशन प्रोसैस से गुजरना होता है जिस के लिए अर्जी देनी पड़ती है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हैं. शिवाय समाज को संदेश देना चाहते हैं कि इस तरह की समस्याओं से परेशान युवकयुवतियां घुटघुट कर जीते हैं. घर वाले उन की फीलिंग्स को नहीं समझते और निराश हो कर युवकयुवतियां आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं. इस तरह की समस्या का सामना करने वाले नौजवान युवकयुवतियां डरने के बजाय अपना आत्मविश्वास जगाएं और बिना संकोच किए अपने घर वालों से बातचीत कर अपना जैंडर चेंज करा सकते हैं. आजकल तो सरकार की आयुष्मान योजना का लाभ उठा कर भी जैंडर चेंज सर्जरी कराई जा सकती है.

## महज शौक नहीं है जैंडर बदलना

इस तरह के मामलों को पढ़ कर लोगों की धारणा यह बन जाती है कि लोग शौकिया तौर पर अपना जैंडर चेंज कराते हैं, जबकि सचाई इस के उलट है. जैंडर चेंज करने वाले माहिर डाक्टर बताते हैं कि जिन लोगों को जैंडर डायसोफोरिया होता है वे इस प्रकार का औपरेशन कराते हैं.

इस बीमारी में लड़का लड़की की तरह और लड़की लड़के की तरह जीना चाहती है. एक का लड़के से लड़की बनना और दूसरे का लड़की से लड़का बनना जिसे साइंटिफिक फौर्म में जैंडर डिस्फोरिया या बौडी वर्सेस सोल कहते हैं, यानी शरीर और आत्मा की लड़ाई. कई लड़के और लड़कियों में 12 से 16 साल के बीच जैंडर डायसोफोरिया के लक्षण शुरू हो जाते हैं, लेकिन समाज के डर की वजह से ये अपने मातापिता को इन बदलावों के बारे में बताने से डरते हैं.

आज भी समाज में कई ऐसे लड़केलड़कियां हैं जो इस समस्या के साथ जिंदगी गुजार रहे हैं लेकिन इस बात को किसी से बताने से डरते हैं. लेकिन जो हिम्मत जुटा कर कदम उठाते हैं वे जैंडर चेंज के लिए सर्जरी कराने का फैसला लेते हैं. हालांकि जैंडर चेंज कराने वालों को समाज में एक अलग ही नजरिए से देखा जाता है और उन से लोग कई तरह के सवालजवाब भी करते हैं.

सैक्स रिअसाइनमैंट सर्जरी या फिर जैंडर चेंज सर्जरी कराना एक चुनौतीपूर्ण काम होता है. इस का खर्च भी लाखों रुपए में है और इस सर्जरी को कराने से पहले मानसिक तौर पर भी तैयार होना पड़ता है. यह सर्जरी हर जगह उपलब्ध भी नहीं है. कुछ मैट्रो सिटीज के अस्पतालों में ही ऐसे सर्जन मौजूद हैं जो सैक्स रिअसाइनमैंट सर्जरी को कर सकते हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

सैक्स चेंज कराने के इस औपरेशन के कई लैवल होते हैं. यह प्रक्रिया काफी लंबे समय तक चलती है. फीमेल से मेल बनने के लिए करीब 32 तरह की प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है. मेल से फीमेल बनने में 18 चरण होते हैं.

सर्जरी को करने से पहले डाक्टर यह भी देखते हैं कि लड़का या लड़की इस के लिए मानसिक रूप से तैयार हैं या नहीं. इस के लिए मनोरोग विशेषज्ञ की सहायता ली जाती है. इस के साथ ही यह भी देखा जाता है कि शरीर में कोई गंभीर बीमारी तो नहीं है.

जैंडर चेंज कराने की प्रक्रिया में सब से पहले डाक्टर एक मानसिक टैस्ट करते हैं. मानसिक टैस्ट में फिट होने के बाद इलाज के लिए हार्मोन थेरैपी शुरू की जाती है. यानी जिस लड़के को लड़की वाले हार्मोन की जरूरत है वह इंजैक्शन



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## जैंडर चेंज कराने वाले आर्यन पाशा

आर्यन पाशा का जन्म 1991 में नायला नाम की एक लड़की के रूप में हुआ था. आर्यन पाशा की मां को सब से पहले पता चला कि वह एक महिला शरीर में फंसा हुआ लड़का था. जब वह 16 वर्ष के थे तो पाशा की मां ने उन्हें लिंग परिवर्तन सर्जरी के बारे में बताया. 2011 में जब पाशा सिर्फ 19 साल के थे तब उन्होंने एनसीआर के एक अस्पताल में सर्जरी के द्वारा अपना जैंडर चेंज कराया.

इस बदलाव के बाद उन्होंने 12वीं कक्षा में अपने स्कूल में टौप किया. फिर उस ने अपने सभी दस्तावेजों में खुद को 'पुरुष' के रूप में पहचाना और यहां तक कि अपने लिए एक नया नाम आर्यन भी रखा.

स्नातक पाठ्यक्रम के लिए दिल्ली के एक प्रमुख विश्वविद्यालय में प्रवेश से इनकार करने के बाद आखिरकार उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और कानून की पढ़ाई की. आर्यन बाद में बौडीबिल्डर बने और पुरुष वर्ग में बौडीबिल्डिंग इवैंट मसल मेनिया में प्रतिस्पर्धा करने वाले पहले भारतीय ट्रांसमैन बन गए. वे पोडियम पर दूसरे स्थान पर रहे.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

और दवाओं के जरिए उस के शरीर में पहुंचाया जाता है. इस इंजैक्शन के 3 से 4 डोज देने के बाद बौडी में हार्मोनल बदलाव होने लगते हैं. फिर इस का प्रोसीजर शुरू किया जाता है.

दूसरे चरण में पुरुष या महिला के प्राइवेट पार्ट और चेहरे की शेप को बदला जाता है. महिला से पुरुष बनने वाले में पहले ब्रैस्ट को हटाया जाता है और पुरुष का प्राइवेट पार्ट डैवलप किया जाता है.

पुरुष से महिला बनने वाले व्यक्ति में उस के शरीर से लिए गए मांस से ही महिला के अंग बना दिए जाते हैं. इस में ब्रैस्ट और प्राइवेट पार्ट शामिल होता है. ब्रैस्ट के लिए अलग से 3 से 4 घंटे की सर्जरी करनी पड़ती है. यह सर्जरी 4 से 5 महीने के गैप के बाद ही की जाती है.

जैंडर चेंज सर्जरी की पूरी प्रक्रिया में कई डाक्टर शामिल होते हैं. इस में मनोरोग विशेषज्ञ, सर्जन, गायनीकोलौजिस्ट और एक न्यूरो सर्जन भी मौजूद रहता है. डाक्टर बताते हैं कि यह सर्जरी 21 साल से अधिक उम्र के लोगों पर ही की जाती है. इस से कम उम्र में मातापिता की ओर से लिखित में सहमति लेने के बाद ही औपरेशन किया जाता है. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# बाप बड़ा न भैया सब से बड़ा रुपैया

• शशि पुरवार

पैसा, सत्ता, संपत्ति की ताकत ऐसी है कि यह अच्छे से अच्छे रिश्तों में दरार पैदा कर देती है. ऐसा नहीं है कि यह आधुनिक समय की देन है, पौराणिक समय से कई युद्ध, टकराव इस के चलते ही हुए.

एक कहावत है 'बाप बड़ा न भैया सब से बड़ा रुपैया' आज की स्थिति में न्यायसंगत है. हजारों के मकान जब करोड़ों के हो जाएं तब सब से बड़ा रुपया हो जाता है. जिस की आंच में सारे रिश्ते धीरेधीरे जल जाते हैं. असल जिंदगी में भी आत्मीयता रिश्तों की नहीं, पैसों की होती है. आज 95 प्रतिशत लोग उन्हीं से आत्मीयता बढ़ाते हैं जिन के पास उन्हें कुरसी, सत्ता व आर्थिक बल होता है. लेकिन क्या यह न्यायसंगत है?

आज इस मायावी संसार में माया का ही बोलबाला है. आदर, सम्मान, रिश्तेनाते सब गौण हो चुके हैं और यह माया का खेल हमें संयुक्त परिवार में भी नजर

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

आता है. संयुक्त परिवार में पार्टिशन का हक हमेशा से रहा है और आज भी यह विवादों की जड़ है.

रेनू शादी के बाद संयुक्त परिवार में बड़ी बहू बन कर आई. ननदों की शादी के बाद उस ने पैसों के लिए झगड़ना शुरू कर दिया. देवर जब कमाने लगा तो उस ने देवर के पैसों का भी खूब उपयोग किया. उस के साससुर ने भी इस में उस का साथ दिया. देवर की शादी के बाद रेनू के पैतरे बदलने लगे. उस की नजर घर की संपत्ति पर पड़ी, फिर धीरेधीरे सामदामदंडभेद की नीति अपना कर रेनू ने सबकुछ अपने कब्जे में करना शुरू कर दिया और सब को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया. यहां तक कि उस ने देवरदेवरानी को जान से मारने तक की कोशिशें भी कीं जिस से तंग आ कर उन्होंने अपना घर छोड़ दिया.

सास की मृत्यु के बाद जब लड़कियों ने संपत्ति में हिस्सा मांगा तो उन का घर में आना बंद करवा दिया. सपाट कह दिया कि तुम संपन्न परिवार में हो तो अपने मातापिता का कर्ज उतारो. यह सुन कर लालची ननद ने भी अपने पैर पीछे खींच लिए. उस के बाद उस ने अपने कामचोर पति के कान भरे व अपने ससुर का फायदा उठाया. सबकुछ हासिल करने के बाद उस ने बुढ़ापे में लाचार ससुर को घर से बाहर कर दिया. देवर, जिस ने पूरे परिवार के लिए सबकुछ किया, संपत्ति व स्नेह दोनों से बेदखल रहा. इसे संस्कार ही कहेंगे कि ऐसे समय में भी वह अपने परिवार व पिता को संभाल रहा है हालांकि उस का मोल उसे व उस की पत्नी को भी नहीं मिला.

इसी तरह मालवा के एक शहर में पंकज व संजय का खासा बिजनैस था फिर भी घर सरकारी नौकरी से रिटायर्ड पिता की पैंशन से ही चलता था. दोनों लड़के अपनी कमाई से कुछ पैसे घर में सहयोग के लिए देते. छोटे बेटे संजय की पत्नी छोटे घर से आई जिस का संपन्न परिवार व पैसा देख कर मुंह खुला रह गया और घर की संपत्ति पर उस की नजर रहने लगी.

इसी बीच दोनों भाइयों को सट्टे का शौक लगा जिस में उन्होंने अपना सबकुछ खो दिया. पंकज ने छोटी सी नौकरी कर ली तो संजय अपने सट्टे की लत के कारण अपने खानदान के गहने व पैसे गायब करने लगा है. यहां तक कि उसे अपने कजिन भाइयों, दोस्तों व बच्चों से पैसे लेने में भी शर्म न आती. थोड़ी सी मदद के नाम पर अपनों से पैसा खाना उस की फितरत में शामिल हो गया. लेकिन सचाई एक न एक दिन बाहर जरूर आती है.

पिता की मृत्यु के बाद वसीयत की बात चली तब घर वालों को संज्ञान में आया कि उस ने दूसरी जमीन को बेच कर सारा पैसा जुआ व सट्टे में उड़ा दिया. अपनी बूढ़ी मां की अलमारी से चुपचाप गहने गायब करता रहा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## वसीयत को ले कर टकराव

सिर्फ शहरों में ही नहीं, गांवों में भी यही हाल है. रश्मि की शादी एक बहुत पैसे वाले घर में हुई. उस का पति अपने ही भाई के हौस्पिटल में कंपाउंडर था, वह पढ़ने में कुछ खास नहीं था लेकिन उस की शादी के बाद भाइयों की नीयत बदल गई और उन्होंने ही उसे घर के काम से बेदखल कर दिया. इस से उस का काम खत्म हो गया और उस का परिवार खानेपीने के लिए मुहताज हो गया. सास ने तरस खा कर एक कमरा दिया जिस में रश्मि अपने परिवार के



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

जो बेटा मातापिता का लाड़ला होता है उसे ले कर दूसरे बेटे को जलन होती ही है.

साथ रहने लगी. परिवार की संपत्ति से उन्हें कुछ नहीं मिला. आखिर रश्मि ने स्कूल में नौकरी की और किसी तरह अपने परिवार को पाला.

महाराष्ट्र के छोटे शहर में खानदानी परिवार है जो करोड़ोंअरबों की अचल संपत्ति का मालिक है. इस परिवार में संपत्ति की मालकिन प्रभादेवी (बदला हुआ नाम) थी. उन्होंने पति की मृत्यु के बाद अकेले अपने 4 बेटों को पाला. उन्हें अपने बच्चों पर भी पूरा भरोसा था और उन्होंने अपनी वसीयत नहीं बनाई. उन के बच्चे अपनी नौकरी में अच्छा कमा रहे थे. दो बेटे बाहर नौकरी करते थे और दो बेटे घर की खानदानी दुकान संभालने लगे.

प्रभा बहुत ज्यादा कड़क थीं. उन के सामने बोलने की हिम्मत किसी में नहीं थी लेकिन उन के मरते ही उन के छोटे बेटे व उस की पत्नी ने मिल कर अंत्येष्टि की रात चुपचाप लौकर में रखे गहने गायब कर दिए. परिवार की संपत्ति में से कोई भी भाई अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार नहीं है.

बढ़ते हुए परिवार के कारण सभी भाई अलगअलग मकान बना कर रहने लगे लेकिन किसी ने भी उस प्रौपर्टी पर किसी को भी नया कंस्ट्रक्शन नहीं करने दिया. अरबों की संपत्ति यों ही खंडहर बन रही है. 4 में से 2 भाई गुजर गए, सब के बच्चे बाहर नौकरी करने विदेश चले गए. लेकिन पीछे रह गए घर के सदस्य. बुढ़ापे में संपत्ति के नाम पर अभी भी झगड़ रहे हैं वे. सामदामदंडभेद की नीति रिश्तों में पैठ बना चुकी है. कहते हैं न, 'सनम न हम खाएंगे न हम तुम्हें खाने देंगे.'

## विलासिता लोभ में डूबे लोग

आशा के 3 बच्चे व एक सौतेला बेटा था. आशा ने अपने ही बड़े बेटे रमेश से सब धनसंपत्ति पर हस्ताक्षर करवा कर उसे संपत्ति से बेदखल कर दिया. लालच इतना बड़ा था कि उस ने अपने बच्चों में भेदभाव किया. बड़ा लड़का बुद्धिमान था, इसीलिए वह हर कार्य करने में सक्षम था. पिता की मृत्यु के बाद उस ने पूरे परिवार का पेट भरा. उस की मां को पता नहीं उस से क्या रोष था. उस ने अपनी सारी संपत्ति अपने अन्य बच्चों में बांट कर अपने सगे बेटे को परिवार के साथ सड़क पर छोड़ दिया. छोटे बेटे अपने स्वार्थ की लालसा से अपने भाई के परिवार से कटुता सा व्यवहार रखने लगे. दोनों भाइयों को भी भाई से ज्यादा जायजाद में दिलचस्पी थी, जिस के कारण रमेश मानसिक यातना से गुजरा और उपेक्षा, हीनभावना व परिवार के स्वार्थ ने उसे मानसिक रोगी बना दिया.

मनोज के 2 बच्चे हैं. दोनों नौकरी से संतुष्ट हैं. महत्त्वाकांक्षी पिता की संपत्ति का विवाद नहीं है क्योंकि दोनों भाइयों को संपत्ति में कोई रुचि नहीं है. इस का कारण आत्मसम्मान है क्योंकि उन के पिता ने हमेशा पैसा दिखाया. उन्होंने बचपन से

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

All Magazine Hindi English international magazine

Journalism (Indian)
India Today Frontline Open
India Legal Organiser The Caravan
Tehelka Economic and Political Weekly The Caravan

Journalism (International)

Time The Week The New Yorker
The Atlantic Newsweek New York Magazine Foreign Affairs National Review
Money & Business

Forbes Harvard Business Review
Bloomberg Businessweek Business India Entrepreneur inc ET Wealth
Monyweek CEO Magazine
Barron's Fortune International Financing Review Business Today
Outlook Money Shares Value Research Smart Investment
Dalal Street Investment Journal

Science, History & Environment

National Geographic National Geographic Kids New Scientist
Down to Earth Scientific American
Popular Science Astronomy
Smithsonian Net Geo History
Science Philosophy Now BBC Earth
BBC Wildlife BBC Science Focus
BBC History

Literature, Health & General
Interest

The Writer Publishers Weekly TLS
prevention OM Yoga Reader's Digest
The New York Review of Books
NYT Book Review Harper's Magazine The Critic Men's Health
Mens Fitness Women's Health
Womens Fitness Better Photography
Architectural Digest Writing Magazine Pratiyogita Darpan

Sport

Cricket Today The Cricketer
Wisden Cricket Monthly
Sports Illustrated World Soccer Tennis Sportstar FourFourTwo
Auto & Moto

Autocar India UK BBC TopGear
Bike Car

Tech

Wired PC Magazine Maximum PC
PCWorld Techlife News T3 uk India
DataQuest Computeractive
Popular Mechanics PC Gamer
Macworld Linux Format
MIT Technology Review

Fashion & Travel

Elle Vogue Cosmopolitan
Rolling Stone Variety Filmfare
GQ Esquire National Geographic Traveler Condé Nast Traveler
Outlook Traveller Harper's Bazaar
Empire

Comics
Tinkle Indie Comics Image Comics
DC (Assorted) Marvel (Assorted)
Indie Comics Champak

Home & Food

Real Simple Better Homes and Gardens Cosmopolitan Home
Elle Decor Architectural Digest
Vogue Living Good Housekeeping
The Guardian feast The Observer Food Monthly Nat Geographic Traveller Food Food Network

Other Indian Magazines
G B The Economist
Mutual Fund Insight Wealth insight
Electronics For You Open Source For You Mathematics Today Biology Today Chemistry Today
Physics For You Woman Fitness
Grazia India Filmfare India
Rolling Stone India Outlook
Outlook Money Entertainment Updates Outlook Business
Open Investors India The Week India
Indian Management Fortune India
Scientfic India India Today Brunch
Marwar India Champak Travel + Liesure India Business Traveller
Smart investment Forbes india
ET Wealth Vogue india Yojana
Kurukshetra Evo INDIA New India Samachar Small Enterprise India
Voice & Data

हिन्दी मैगजीन

समय पत्रिका साधनापथ गृ हलक्ष्मी उदय इंडिया निरोगधाम मॉडर्न खेती इंडिया टुडे देवपुत्र
क्रिकेट टुडे गृ हशोभा अनोखी हिन्दुस्तान मुक्ता सरिता चंपक प्रतियोगिता दर्पण सक्सेस मिरर
सामान्य ज्ञान दर्पण फार्म एवं फूड मनोहर कहानियां सत्यकथा सरस सलिल स्वतंत्र वार्ता लाजवाब आउटलुक सच्ची शिक्षा वनिता
मायापुरी रूपायन उजाला ऋषि प्रसाद जोश रोजगार समाचार जोश करेंट अफेयर्स जोश सामान्य ज्ञान जोश बैंकिंग और एसएससी
इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स प्रकृ तमिल
राजस्थान रोजगार संदेश राजस्थान सूजस सखी जागरण अहा! जिंदगी बालभास्कर योजना कुरूक्षेत्र
More.......

Send me message Telegram

Ya WhatsApp

M......8890050582

Click here magazines Telegram group

https://t.me/Magazines_8890050582

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

संयुक्त परिवारों के टूटने का एक बड़ा कारण संपत्ति विवाद होना है, जो हंसतेखेलते परिवार की कलई खोल देता है.

यही सुना कि तुम्हारे ऊपर इतना खर्च हुआ है तो वे उन से वितृष्णा करने लगे व संपत्ति व उन के फैसले से विमुख हो गए. हालांकि पत्नियों की नजर पैसों पर है. ऐसे केस विरले ही होते हैं लेकिन आज भी पैसा 'ता था थैया' कर रहा है.

इसी तरह उत्तर प्रदेश के एक गांव में एक धनाढ्य परिवार है जो अरबों की विशाल चल संपत्ति का भी मालिक है. परिवार के सदस्य अपने पुश्तैनी मकान में रहते हैं जो उन के दादापरदादा का है. उन के पुरखे तो मर गए लेकिन अब वे चाह कर भी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि वह उन के परदादा की संपत्ति है.

उन का चाचा, दादा और पिता ने भी आपसी सुलह कर के कोई बंटवारा नहीं किया. उन के चाचा ही अपने बच्चों को बंटवारा नहीं करने दे रहे हैं. हालांकि उन्होंने अपना गांव छोड़ दिया है लेकिन उन के भाई के बच्चे की पीढ़ी उस घर में रहती है, उसे भी इतना हक नहीं है कि जर्जर होते हिस्से को तोड़ कर अपना खुद का अच्छा घर बना सके. आखिर यह विवाद के इस मोड़ पर जा रहा है कि परपोतों की शादी हो रही है लेकिन विवाद कायम है.

बहनों की उम्र भी हो गई, मरने की स्थिति है लेकिन बहनों को प्रौपर्टी में से हिस्सा चाहिए. किस हद तक विलासिता लोभ के मद में डूबे हुए हैं लोग? जब तक चाचा अपने भतीजों को आज्ञा न देंगे, ये आपस में सलाहमशवरा नहीं करेंगे और तब तक संपत्ति बच्चों को भी नहीं मिलेगी. युवा पीढ़ी भी उसी घर में रह रही है और कोई भी अपना हिस्सा छोड़ने के लिए तैयार नहीं है.

## पौराणिक संपत्ति विवाद

समाज में ऐसे केस चारों तरफ भरे पड़े हैं. ऐसे विवादों को ले कर चर्चा अकसर होती है. कैसे संस्कार हैं? संस्कारों पर उंगली उठाई जाती है. संस्कारों की दुहाई दी जाती है. पौराणिक कथाओं वाली बातें लागलपेट के साथ सुनाई जाती हैं. लेकिन जब हम पौराणिक कथाओं को देखते हैं तो हमें विवादों की असली जड़ भी नजर आती है. हम अपनी पौराणिक संस्कृति की उलाहना नहीं कर रहे हैं बल्कि उस वक्त के मर्म को जानने का प्रयास कर रहे हैं जिस में हमें अपनी संस्कृति के साथ स्वार्थ के बीज भी नजर आएंगे जो आज कैक्टसरूपी पौधा बन चुका है.

देखा जाए तो पौराणिक कथाओं में भी सत्ता को ले कर लड़ाइयां होती रही हैं. व्यक्ति कब, किस मर्म को आत्मसात करता है, यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर होता है. कहते हैं न, बुराई सब से ज्यादा आकर्षित करती है. जब देवताओं के बीच संपति आ सकती है तो आज के अंधभक्तों का क्या कहना?

राम और भरत का वियोग भी संपत्ति के

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कारण ही उत्पन्न हुआ था, जब कैकेई के मन में सत्ता व पुत्रमोह प्रबल था. कैकेई ने राजगद्दी के लिए राम को वनवास भेजा और दशरथ से राजगद्दी का वचन लिया. कैकेई का मतलब था कि जब तक राम वनवास में रहेंगे, संभवतया भरत की संतान हो जाएगी और वह युवराज बन सकती है. वन में रहने के कारण राम का जीवन दुर्बल हो जाएगा और उन्हें भरत पर आश्रित रहना होगा. हालांकि दशरथपुत्रों में त्याग की भावना प्रबल थी.

पौराणिक कथाओं में वैसे भी सत्ता का लोभ परिवारवाद से ज्यादा नजर आता है. धन, सत्ता, लोलुपता के लिए विवाद होते रहे हैं. राजा हो या रंक, सभी सत्ता के लालच में लड़ते रहे व मरते रहे. हमारी पौराणिक कथाओं में सत्ता के लिए लड़ाई व युद्ध बहुत हुए हैं.

वैदिक काल में देवताओं में सत्ता को ले कर झगड़े हुए. वे आपस में झगड़ते थे लेकिन दानवों के लिए समग्र रूप से उन्होंने झगड़ा किया. बात जब सत्ता की होती है तो देवराज इंद्र का सत्तामोह प्रमुख था. पौराणिक कथाओं में भी देवराज व दानवों में सत्ता के लिए झगड़े हुए. भागवत पुराण में वर्णित है कि किस तरह कंस ने अपने पिता उग्रसेन को बंदी बनाया था. एक भविष्यवाणी के कारण कंस ने अपनी बहन देवकी और उस के पति वासुदेव को बंदी बनाया. उन के जन्मे पुत्रों का वध किया जिन की 8वीं संतान श्रीकृष्ण थी. कंस का यह बरताव सत्तामोह का था जिस के कारण उस ने अपने पिता व बहन पर अत्याचार किए.

## छलकपट के कई किस्से

महाभारत युद्ध होने का मुख्य कारण कौरवों की उच्च महत्त्वाकांक्षाएं और धृतराष्ट्र का पुत्रमोह था. कौरव और पांडव आपस में चचेरे भाई थे. वेदव्यास से नियोग द्वारा विचित्रवीर्य की भार्या अंबिका के गर्भ से धृतराष्ट्र और अंबालिका के गर्भ से पांडु उत्पन्न हुए.

गांधारी ने 100 पुत्रों को जन्म दिया. उन में दुर्योधन सब से बड़ा था. पांडु के युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव आदि 5 पुत्र हुए. धृतराष्ट्र जन्म से ही नेत्रहीन थे. उन की जगह पर पांडु को राज दिया गया जिस से धृतराष्ट्र को सदा पांडु और उस के पुत्रों से द्वेष रहने लगा. यह द्वेष दुर्योधन के रूप में फलीभूत हुआ और शकुनि ने इस आग में घी का काम किया.

शकुनि के कहने पर दुर्योधन ने बचपन से ले कर लाक्षागृह तक कई षड्यंत्र किए. पांडवों ने श्रीकृष्ण की सहायता से भव्य नगरी इंद्रप्रस्थ का निर्माण किया. पांडवों ने विश्वविजय कर के प्रचुर मात्रा में रत्न व धन एकत्रित किया और राजसूय यज्ञ किया. दुर्योधन पांडवों की उन्नति देख नहीं पाया और शकुनि के सहयोग व छल से न केवल युधिष्ठिर से उस का सारा राज्य जीता बल्कि उस की पत्नी द्रौपदी को दांव पर लगाने हेतु विवश किया. यह माया का ही प्रपंच था जो परिवार के बीच आया, जहां नारी अस्मिता व परिवारवाद को ताक पर रखा गया था. यह संस्कार थे जो मति भ्रष्ट कर रहे थे.

## भाईभाई एकदूसरे के दुश्मन

इसी तरह हिरणकश्यप व हिरनमक्ष देवताओं की सत्ता को परास्त करना चाहते थे तो हिरणकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को ही मारने की साजिश की.

रावण ने कुबेर से लंका छीनी. राजपरिवारों में भी संपत्ति व सत्ता का

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कोर्ट में संपत्ति विवाद से जुड़े मामले बताते हैं कि हमारी पारिवारिक संस्था भीतर से बेहद कमजोर है.

विवाद प्रमुख रहा है. इंदौर के होल्कर परिवार में भी आपस में विवाद होते रहे हैं. प्रत्येक पक्ष एकदूसरे की कमजोरी को आंकता है. आदिकाल से ही सत्ता की राजनीति परिवारों में होती रही है.

कहने का तात्पर्य है कि पौराणिक कथाओं में पैसे की हायहाय रही है. वे लड़ते रहे, विवादों में घिरे रहे और मरते रहे तो कलियुग में आज के अंधभक्तों को क्या कहें. इंसान जो देखता है वही आत्मसात करता है. पहले यह कृत्य दबेपांव होता था, आजकल खुलेआम हो गया है.

चाहे मीडिया हो या डेली सोप, किसी ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है. सच के नाम पर यही दिखाया जाता है तो हम किन संस्कारों की बात करें? सचाई से कितना मुंह मोड़ेंगे? त्याग की भावना कितने लोगों में है?

वक्त ने संस्कारों का आईना दिखा कर उस की धज्जियां उड़ा दी हैं. घरघर में सत्ता की महाभारत हो रही है.

क्या हमारी पौराणिक कथाओं ने हमें यही संस्कार दिए हैं? मारकाट, धोखाधड़ी, रिश्तों में आई शुष्कता क्या हमें विरासत से मिली है? द्वेष व क्लेश के नाग अपना फन फैलाए खड़े हुए हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ऐसा प्रतीत होता है त्याग व प्रेम की भावना का मोती समुद्र में छिपे सीप के समान है जिसे आज कलियुग में ढूंढ़ना नामुमकिन है. हर रिश्ते पर माया ने अपना आवरण पहना दिया है. इस मायावी संसार में हम उस माया के पीछे भाग रहे हैं जो किसी की भी नहीं है. इस माया के लिए लड़ते रहो व मरते रहो.

हम आने वाले समय में अपना कौन सा इतिहास बना रहे हैं? जब भी हम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखेंगे, हमें माया का ही वर्चस्व दिखेगा और हमारे संस्कार पानी पीते हुए नजर आएंगे. क्या इस का अंत संभव है? सत्ता व माया का तांडव बेधड़क जारी है. हाय पैसा हाय पैसा, सत्ता न जाने रिश्ता कैसा? ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# गृहशोभा एम्पावर मौम्स इवैंट

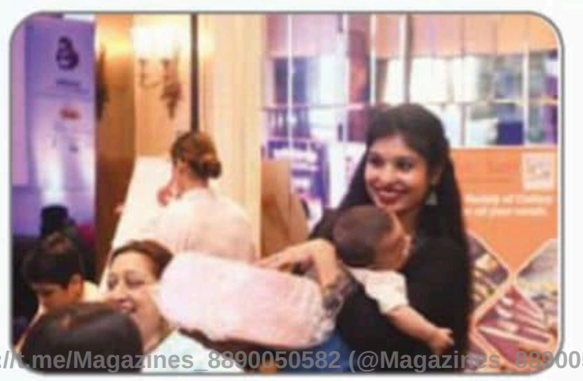

गृहशोभा
EmpowerMoms
Celebrating Health, Happiness and Motherhood

Co-Powered By
apis

Associate Sponsor
Johnson's

Skincare Partner
greenleaf

Gifting Partner
delberto

Homoeopathy Partner
SBL

Special Partner
Shri&Sam

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मदर्स डे' के खास मौके पर महिलाओं की उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए दिल्ली प्रैस की मैगजीन गृहशोभा ने 'एम्पावर मौम्स' इवैंट का आयोजन किया. इसके सह-संचालक एपिस थे. एसोसिएट स्पौंसर जॉनसंस एंड जॉनसंस, स्किन केयर पार्टनर ग्रीनलीफ, गिफ्टिंग पार्टनर डेलबर्टो, होमियोपैथी पार्टनर एसबीएल और स्पैशल पार्टनर श्री एंड सैम थे.

इस कार्यक्रम का पूरा फोकस विमन एम्पावर पर था. यह कार्यक्रम नई दिल्ली में 18 मई, 2024 को आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम में महिलाओं, जिन में अधिकतर मांएं थीं, ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया.

## पीडियाट्रिशियन सैशन

सब से पहले पीडियाट्रिशियन डाक्टर श्रेया दुबे ने शिशु देखभाल से संबंधित बातें वहां मौजूद मदर्स से साझा कीं. उन्होंने बताया कि जन्म के पहले 6 महीने तक शिशु को कोई सौलिड फूड नहीं देना चाहिए. अगर यह पहले 6 महीने में दिया जाता है तो बच्चे को इंफैक्शन होने का खतरा रहता है. 6 महीने के बाद बच्चे को मैश किए हुए फ्रूट्स जैसे पपीता और सेब दिया जा सकता है.

डाक्टर श्रेया दुबे
पीडियाट्रिशियन

इस के अलावा सब्जियों को उबाल कर मैश कर के जैसे मैश कद्दू, चुकंदर, गाढ़ी दाल और दलिया दिया जा सकता है. उन्होंने कहा कि इस बात का खास खयाल रखें कि 9 महीने तक नमक और 12 महीने तक शुगर या शहद बच्चे को न दिया जाए. उन्होंने आगे कहा कि बच्चों

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

को जबरदस्ती खाना नहीं खिलाना चाहिए. बस उन की प्लेट में खाना परोस देना चाहिए, लगभग 20 मिनट के लिए और उन पर छोड़ दें कि वे कब खाते हैं.

इस के अलावा उन्होंने कहा कि लोगों को दूसरे के बच्चों को ले कर कोई नैगेटिव कमैंट नहीं करना चाहिए. इस से बच्चे और उन के पेरैंट्स के मन में नैगेटिविटी आ जाती है. अंत में उन्होंने महिलाओं को मदर्स डे विश करते हुए कहा कि डियर मौम्स आप अमेजिंग हैं, आप औसम हैं. आप अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं और अपने बच्चों का अच्छी तरह खयाल रख रही हैं.

## ब्यूटी ऐक्सपर्ट सैशन

सैलिब्रिटी ब्यूटी ऐक्सपर्ट डाक्टर भारती तनेजा, जो राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं और माधुरी दीक्षित और सुष्मिता सेन जैसी अभिनेत्रियों का लुक डिजाइन कर चुकी हैं, के आते ही महिलाओं में एक अलग ही उत्साह देखा गया. ऐसा लग रहा था मानो वे उन के ब्यूटी टिप्स सुनने के लिए बेताब बैठी हैं. महिलाओं को और ज्यादा इंतजार न करवाते हुए उन्होंने उन्हें कई स्किन केयर टिप्स दिए. उन्होंने कहा कि खूबसूरती बाहरी और भीतरी दोनों ही होती है और आप में ये दोनों ही होनी चाहिए. उन्होंने कहा कि आप की पौजिटिव सोच आप को खूबसूरत बनाती है.

डाक्टर भारती तनेजा
ब्यूटी ऐक्सपर्ट

उन्होंने आगे कहा कि घर और मां की जिम्मेदारी निभातेनिभाते आप अपना खयाल नहीं रख पाती हैं. लेकिन आप अपने रूटीन में से थोड़ा सा वक्त निकाल कर अपनी स्किन की केयर कर सकती हैं. इस के बाद उन्होंने एक स्किन केयर रूटीन बताया, जिस में उन्होंने घर में मौजूद दाल और चावल को पीस कर उस का स्क्रब बनाना सिखाया. उन्होंने महिलाओं को कई नए ब्यूटी ट्रीटमैंट्स के बारे में भी बताया. उन के द्वारा बताए गए ब्यूटी टिप्स और जानकारी को सभी ने खूब पसंद किया.

## फाइनैंस ऐक्सपर्ट सैशन

कहते हैं, एक मां सब से बड़ी योद्धा होती है. वह चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती. वह अपने बच्चे का खयाल भी रख सकती है और एक अच्छी निवेशकर्ता भी साबित हो सकती है. इसी बात का एहसास उन्हें फाइनैंस ऐक्सपर्ट श्रुति देवड़ा ने कराया. श्रुति देवड़ा मुंबई की रहने वाली एक चार्टर्ड अकाउंटैंट हैं, जो अपने ऐक्सपर्ट औपिनियन के लिए देशविदेश में जानी जाती हैं.

उन्होंने इवैंट में मौजूद महिलाओं और मांओं को निवेश संबंधी जानकारी दी. उन्होंने बताया कि छोटेछोटे निवेश से शुरुआत कर के आप एक बड़ी बचत कर सकती हैं और इस के जरीए अपने सपनों को पूरा कर सकती हैं.

श्रुति देवड़ा
फाइनैंस ऐक्सपर्ट

साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है, यह सब से ज्यादा महत्वपूर्ण है. जितने ज्यादा समय के लिए निवेश किया जाएगा उतना ज्यादा ब्याज मिलेगा, इसलिए निवेश लंबे समय के लिए करें. अंत में फाइनैंस ऐक्सपर्ट श्रुति देवड़ा ने महिलाओं के निवेश संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए, जिन्हें सुन कर महिलाएं बेहद संतुष्ट नजर आईं.

## गेमिंग सैशन

ऐक्सपर्ट सैशन के बाद होस्ट अंकिता ने कुछ मजेदार गेम्स खिलवाए, जिन में सब से लंबे ईयररिंग गेम, वह मां जिस का बच्चा सब से छोटा है, ऐसी मां जिस के पास बेबी प्रोड्क्ट मौजूद है जैसे मजेदार गेम शामिल थे. वहां मौजूद महिलाओं से यह भी पूछा गया कि उन्होंने अपनी मां से क्या सीखा, जिस में उन्होंने अपनेअपने ऐक्सपीरियंस सभी से साझा किए. इन प्रतियोगिताओं में विजयी महिलाओं को वनलीफ ब्रिहांस की तरफ से गिफ्ट्स हैम्पर दिए गए. कार्यक्रम के अंत में सभी को गुडी बैग्स दिए गए. 'मदर्स डे' के उपलक्ष में आयोजित किया गया यह कार्यक्रम महिलाओं के बीच खासा हिट रहा. **–प्रियंका यादव** ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# पाठकों की समस्याएं

## मेरी दादीसास काफी बुजुर्ग हैं. उन्हें खाने में क्या दूं?

**मैं और मेरे पति बेंगलुरु में रहते हैं. मेरे सासससुर दिल्ली में रहते हैं. उन्हीं के साथ मेरी दादीसास भी रहती हैं. बुजुर्ग दादीसास मेरे पति से बहुत स्नेह रखती हैं. मेरे पति भी अपनी दादी से बहुत प्यार करते हैं. बहुत दिन से जिद कर रहे हैं कि वे दादी को अपने पास कुछ महीनों के लिए ले कर आएंगे. उन की खुशी मेरे पति के लिए बहुत माने रखती है. मुझे कोई दिक्कत नहीं है, बल्कि मुझे भी खुशी होगी पर मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि मैं उन के खानेपीने का कैसा खयाल रखूं. कैसा हैल्दी फूड उन्हें दूं जो उन्हें खाने में अच्छा भी लगे और वे खुश रहें?**

यह अच्छी बात है कि आप अपनी दादीसास के बारे में इतना कुछ सोच रही हैं. आप यह सोचें कि जैसे घर में कोई बच्चा आता है तो हमें उस का ध्यान रखना पड़ता है, उसी प्रकार घर के बुजुर्गों का भी काफी खास ध्यान रखना पड़ता है.

बुजुर्गों को खाने में कुछ भी नहीं दे सकते. देखना पड़ता है कि उन्हें ऐसी चीजें दें जो वे आसानी से चबा सकें क्योंकि उन के दांत कमजोर हो चुके होते हैं या नकली लगे होते हैं या फिर नहीं भी होते.

फिलहाल आप की दादीसास की क्या स्थिति है, आप जानती होंगी. हम आप की इतनी मदद कर सकते हैं कि उन्हें खाने में क्याक्या दे सकती हैं जो स्वादिष्ठ भी हो और हैल्दी भी.

दलिया एक ऐसी चीज है जो नाश्ते और खाने दोनों समय खा सकते हैं. दूध वाला दलिया या नमकीन सब्जियों वाला दलिया भी बना कर उन्हें दे सकती हैं.

सूप ऐसी चीज है जिसे चबाना नहीं पड़ता और इस से पेट भी भर जाता है. टमाटर या मिक्स वैजिटेबल सूप उन्हें बना कर दे सकती हैं.

मूंग की दाल का चीला उन्हें चटनी के साथ दें, वे मन से खाएंगी. साउथ इंडियन फूड सभी पसंद करते हैं. उन्हें इडली, उपमा, उत्तपम बना कर दे सकती हैं. ढोकला, खांडवी मुलायम होते हैं. घर में आसानी से बन भी जाते हैं.

मीठे में उन्हें कभीकभी सूजी का हलवा, स्मूथी, खीर, कस्टर्ड बना कर दे सकती हैं.

उन का खानेपीने का ध्यान रखने के साथसाथ उन के साथ बैठिए, बातें कीजिए, उन की दवाई, सेहत के बारे में पूछते रहिए. बुजुर्ग यही सब चाहते हैं. इसी में वे खुश रहते हैं.

*

## मेरी बेटी सोशल एंग्जाइटी डिसऔर्डर से ग्रस्त लगती है.

**बेटी की उम्र 28 साल की है. अच्छी पढ़ीलिखी है. देखने में भी सुंदर है लेकिन कालेज की पढ़ाई खत्म होने के बाद पता नहीं क्यों धीरेधीरे वह डल होती गई, जिस से मोटी हो गई. अपने कपड़े खरीदने भी बाजार जाने से**

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

**कतराने लगी कि दुकानदार कहेगा कि आप का साइज नहीं है. फैमिली गैदरिंग में जाने का सोच कर ही उस की तबीयत खराब होने लगती है, पसीना आ जाता है. वैसे, हम ने डाक्टर को दिखाया है. उस ने दवाइयां दी हैं. आप भी कोई सुझाव दें जिस से वह इस स्थिति से बाहर निकल सके?**

इस स्थिति को सोशलफोबिया भी कहते हैं. व्यक्ति सामाजिक संबंधों को विकसित करने के दौरान अन्य लोगों की तुलना में बहुत अधिक आत्मजागरूक और भयभीत महसूस करता है. इस से आत्मसम्मान यानी सैल्फ स्टीम भी कम होने लगती है. वे आमतौर पर किसी भी सोशल गैदरिंग में जाने से इसलिए भी कतराते हैं कि उन्हें लगता है कि उन्हें जज किया जा रहा है.

डाक्टरी मदद तो आप ने शुरू कर दी है, साथ ही साथ, कुछ तरीके भी अपनाएं, जैसे ब्रीद ऐक्सरसाइज का रोजाना करना. आप की बेटी इस से काफी रिलैक्स महसूस करेगी.

प्रौग्रैसिव मसल रिलैक्सेशन भी इस में कारगर साबित हो सकता है. बेटी को फिजिकल एक्टिविटी, जैसे जौगिंग, रनिंग आदि के लिए प्रोत्साहित करें. शुरू में उस के साथ आप भी जाइए ताकि वह अपने को अकेला न महसूस करे. इस से एंग्जाइटी को कम करने में काफी मदद मिलती है.

किसी भी सोशल परिस्थिति का सामना करने के लिए उसे तैयार कीजिए. उस का माइंड सैट करने की कोशिश कीजिए. अचानक से बहुत भीड़भाड़ वाली जगहों, पार्टी, फंक्शन आदि में जाने के बजाय कम भीड़ वाली जगहों पर ले जाएं. रैस्टोरैंट में खाना खाने जाएं. शौपिंग करने के लिए उसे ऐसे स्टोर पर ले कर जाएं जहां एक्ट्रा लार्ज साइज के कपड़े मिलते हों.

उस से पौजिटिव बातें करें और उसे भी पौजिटिव बातें करने के लिए कहे. मन में सकारात्मक खयाल रखें. इन सब बातों से भी उस में सोशल एंग्जाइटी धीरेधीरे कम होने लगेगी.

*

## रात में मुझे नींद नहीं आती है. मेरी उम्र अभी 48 वर्ष है.

**रात में मेरी नींद बारबार टूट जाती है. मुझे किसी चीज की टैंशन भी नहीं है. दिन में नींद आती है लेकिन सोने के लिए लेटती हूं तो नींद उड़ जाती है. इस कारण दिन के वक्त मैं अलसाई सी रहती हूं. क्या मुझे डाक्टर के पास जाना चाहिए?**

जिन लोगों को अकसर नींद न आने की समस्या रहती है उन में मेलाटोनिन हार्मोन की कमी देखी गई है. मेलाटोनिन वह हार्मोन है जो नींद के चक्र को ठीक बनाए रखने के साथ अच्छी और गहरी नींद प्राप्त करने में मदद करता है.

मेलाटोनिन सिर्फ नींद के लिए ही जरूरी नहीं है, इस की कमी के कारण चिंता और मनोदशा संबंधी विकार, शरीर का तापमान कम होने और एस्ट्रोजन हार्मोन के बढ़ने जैसी दिक्कतें भी हो सकती हैं. हमारी राय में आप डाक्टर से परामर्श लें. **–कंचन** ●

**आप भी अपनी समस्या भेजें**

पता : **कंचन, सरिता**
**ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.**
***समस्या हमें एसएमएस या व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/औडियो भी कर सकते हैं.***
**08588843415**




More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# बच्चों को रिस्क उठाने दें

बच्चा अगर धूप, धूल और मिट्टी में खेलना चाहता है तो उसे खेलने दीजिए, वह अगर पेड़ और पहाड़ पर चढ़ना चाहता है तो उसे चढ़ने दीजिए, वह अगर ऐसी कोई दूसरी एक्टिविटी, जो आप को जोखिमपूर्ण लगती हो, में शामिल होना चाहता है तो उसे रोकिए मत ताकि जरूरत पड़ने पर वह खुद की सहायता कर सके.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

भोपाल का यह हादसा दुखद है लेकिन इस का दोहराव किसी और के साथ न हो इसलिए दिखने वाली बहुत सी बातों के अलावा उन कुछ बातों पर भी गौर करना जरूरी है जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है.

बीती 5 मई को भोपाल के साकेत नगर में रहने वाले गौरव राजपूत अपनी पत्नी अर्चना और दोनों बेटों 9 वर्षीय आरुष और 2 वर्षीय आरव सहित सीहोर के नजदीक क्रीसेंट वाटर पार्क में गए थे. साथ में, उन की भाभी भी थीं. मकसद था, इतवार की छुट्टी का सही इस्तेमाल करते परिवार के साथ क्वालिटी टाइम बिताना, जो आजकल बहुत आम चलन है. पेशे से पेपर ट्रेडर गौरव को रत्तीभर भी अंदाजा या एहसास नहीं था कि एक ऐसा हादसा क्रीसेंट में उन का इंतजार कर रहा है जो जिंदगीभर उन्हें सालता रहेगा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

स्विमिंग पूल पर पहुंचते ही सभी ने तैराकी का लुत्फ उठाना शुरू कर दिया और उस में मशगूल हो गए. इसी दौरान आरुष कब पानी में डूब गया, इस की भनक किसी को नहीं लगी. कुछ देर बाद अर्चना का ध्यान उस पर गया. उन्होंने बेटे को पानी से निकालते पति को आवाज दी, फिर तो वाटर पार्क में हल्ला मच गया. बेहोश आरुष को ले कर गौरव और अर्चना नजदीकी अस्पताल पहुंचे जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. इस के बाद शुरू हुआ आरोपप्रत्यारोपों का सिलसिला.

अर्चना और गौरव का कहना था कि क्रीसेंट की तरफ से कोई मदद नहीं मिली, न उन्होंने फर्स्टएड बौक्स दिया और न ही उन के पास स्ट्रेचर था. और तो और, मौके यानी पूल पर कोई इंचार्ज और कोई गार्ड नहीं था. उलट इस के, प्रबंधन का कहना था कि लापरवाही के ये आरोप झूठे हैं. मौके पर लाइफगार्ड मौजूद थे और उन्होंने ही बच्चे को अस्पताल पहुंचाया था. हमारे पास खुद की एंबुलैंस है.

पुलिस ने जांच शुरू कर दी. अब मामला अदालत में जाएगा लेकिन इस से आरुष वापस नहीं आने वाला. हां, दोषी अगर कोई पाया जाता है तो उसे जरूर सजा मिलनी चाहिए. आइंदा कोई आरुष ऐसे हादसे का शिकार न हो, इस के लिए जरूरी है कि पेरैंट्स अपने बच्चों की परवरिश के मौजूदा तौरतरीकों पर गौर करें और जहां कमियां या खामियां दिखें, उन्हें सुधारें क्योंकि बच्चों से ताल्लुक रखते ऐसे हादसे अब आएदिन की बात हो चले हैं.

## सदमे में डूबे परिवार

आरुष की मौत के कुछ दिनों पहले ही भोपाल के ही एक मैरिज गार्डन के स्विमिंग पूल में एक और बच्चे की मौत हो गई थी और एक बच्ची को बेहोशी की हालत में अस्पताल में भरती कराना पड़ा था. ऐसा हर कभी हर कहीं हो रहा होता है कि कोई बच्चा बहुत मामूली लापरवाही के चलते मौत का शिकार बन रहा होता है और मांबाप सहित पूरा परिवार सदमे में डूब जाता है. और तो और, ऐसी खबर पढ़ने वालों को भी दुख होता है जो बेहद स्वाभाविक बात है.

आरुष की मौत के दूसरे ही दिन राजस्थान के बाड़मेर में पानी की डिग्गी में नहाने उतरे 2 मासूमों की मौत हो गई थी. इस हादसे में 15 वर्षीय रमेश और 16 वर्षीय गोसाईं डिग्गी में नहा रहे थे कि तभी काई पर फिसलने से दोनों डूब कर मर गए. डिग्गी वह छोटी सी जगह होती है जहां खेत में सिंचाई का पानी स्टोर किया जाता है. इसी दिन राजस्थान के ही डूंगरपुर में



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

12 वर्षीय देवास मीणा की मौत भी भीखाभाई केनाल में बह जाने से हो गई थी.

इन और ऐसे तमाम हादसों से यह एक बात साफतौर पर जाहिर होती है कि जरूरत के वक्त बच्चों के पास मदद उपलब्ध नहीं होती. कोई और इन की सहायता करने पहुंच पाता, उस के पहले ही ये मौत के मुंह में पहुंच गए. जाहिर यह भी होता है कि इन बच्चों की उम्र इतनी तो थी कि वे खुद की मदद कर सकते थे लेकिन इस के लिए उन्हें ट्रेंड नहीं किया गया था जो कि मौजूदा दौर के पेरैंट्स की एक बड़ी गलती और खामी है.

## नजाकत से पलते बच्चे

इन दिनों बच्चे बड़ी नजाकत से पाले जा रहे हैं. इतनी नजाकत से कि वे सामान्य सर्दी और गरमी भी बरदाश्त नहीं कर पाते. पेरैंट्स सर्दीजुकाम हो जाने के डर से उन्हें बारिश का लुत्फ भी नहीं उठाने देते. बच्चों को एलर्जी या इन्फैक्शन न हो जाए, इस के लिए उन्हें धूप और धूल में खेलने नहीं दिया जाता. चोट लगने के डर से उन्हें मैदानी खेलों में हिस्सा लेने से रोका जाता है. ऐसी कई गैरजरूरी सावधानियां खासतौर से 6 से 14 साल तक के बच्चों को मानसिक और शारीरिक तौर पर अपाहिज सा बनाए दे रही हैं. यह दरअसल, न केवल बचपन बल्कि उन की आजादी छीनने जैसी भी बात है.

परवरिश के नाम पर उन्हें आजादी भी इस बात की पेरैंट्स देने की गलती कर रहे हैं कि वे जब चाहें स्वीगी या जोमैटो से कोई फास्ट और जंकफूड मंगा कर खा लें. बाहर जा कर जोखिमभरे खेल खेलें नहीं, इस के लिए उन के हाथ में मोबाइल पकड़ा दिया जाता है. घुमाने के नाम पर उन्हें गांवदेहातों की जिंदगी दिखाने से पेरैंट्स डरते हैं. हां, उस की फरमाइश या जिद पर मौल ले जाने के लिए एक पैर पर तैयार रहते हैं. ऐसे कई काम हैं जो, दरअसल पेरैंट्स करते तो खुद की इच्छा से हैं लेकिन जिद बच्चों की मानते और बताते हैं.

कई बार तो लगता है कि वे अपने बच्चे नहीं, बल्कि गुलाम पाल रहे हैं. बच्चा बच्चा नहीं, बल्कि एक प्रोडक्ट हुआ जा रहा है जिसे बड़ा पेड़ बनने देने से पेरैंट्स ही रोक रहे हैं. एक पूरी पीढ़ी गमले में उगे नाजुक पौधों की तरह होती जा रही है जिसे दुनियादारी और व्यावहारिकता वक्त रहते नहीं सिखाई जा रही. नतीजतन, उन्हें एहसास और अंदाजा भी नहीं हो पाता कि नदी, नहर या स्विमिंग पूल में पानी कितना गहरा है और फिसल जाएं तो मदद कैसे मांगनी है और न मिले तो खुद की मदद कैसे करनी है.

पेरैंट्स का डर अपनी जगह जायज नहीं कहा जा सकता. दरअसल वे बच्चे को ले कर कम, खुद को ले कर ज्यादा डरे हुए होते हैं और ज्यादा से ज्यादा वक्त उसे अपनी पीठ पर लादे रखना चाहते

बच्चों के साथ खेलतेकूदते मातापिता उन्हें यह भी सिखाएं कि उन्हें अपनी खुद की हिफाजत कैसे करनी है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हैं. एक दौर था जब दादादादी, नानानानी पांवपांव चलना सीख रहे बच्चे को गिरते देख ठहाका लगा कर हंसते थे जिस के पीछे उन का मकसद बच्चे को प्रोत्साहन देना और ज्यादा चलने देने का होता था और आज के मांबाप हैं कि बच्चा जरा सा लड़खड़ाता है तो तुरंत उसे गोद में उठा लेते हैं. वे उसे अपनी उम्र के मुताबिक खतरों से जूझने देना और रिस्क नहीं उठाने देते जिस से बच्चा जवान हो जाने तक कई मानो में बच्चा ही रह जाता है.

## रिस्क नहीं उठाने देते

भोपाल के पीयूष का एडमिशन 2 साल पहले जब बेंगलुरु के एक नामी कालेज में हुआ तो पेरैंट्स उसे वहां छोड़ने गए थे. यहां तक बात हर्ज की नहीं थी लेकिन पीयूष को परेशानी उस वक्त होनी शुरू हुई जब हर बार मम्मीपापा उसे लेने और छोड़ने आनेजाने लगे. 2 साल बाद उसे अकेले आनेजाने का मौका या इजाजत कुछ भी कह लें मिले तो उसे लगा कि अब कहीं 20 का होने के बाद वह बड़ा हो पाया है. नहीं तो उस के अधिकतर दोस्त पहले ही सैमेस्टर से अकेले आनेजाने लगे थे और सफर के किस्से बड़े मजे ले कर सुनाते थे जिस से पीयूष को लगता था कि वह अकेले सफर करने काबिल ही नहीं है.

पीयूष जैसे बच्चों का बचपन और टीनएज कैसे गुजरता होगा, इस का सहज अंदाजा लगाया जा सकता है. पलंग से नीचे उतरने के पहले ही उन्हें टूथपेस्ट लगा ब्रश तैयार मिल जाता है तो और क्याक्या नहीं होता होगा, इस का अंदाजा लगाना कोई मुश्किल काम नहीं.

शुक्र तो इस बात का है कि पेरैंट्स उन्हें खाना खुद चबा कर नहीं देते, अपने

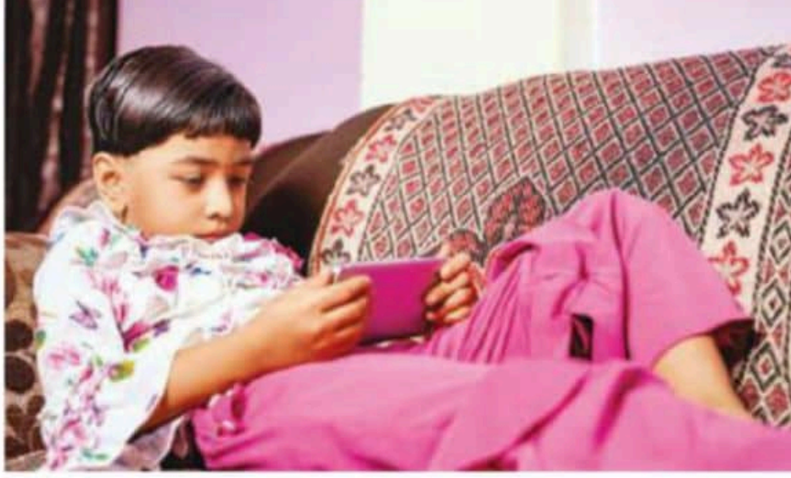

बच्चा बाहर खेलेगा तो चोट लग जाएगी यह बोल कर मातापिता का उस के हाथ में टाइम पास करने के लिए मोबाइल पकड़ा देना, कहां की समझदारी है?

मुंह और दांतों से चबाने देते हैं. मुमकिन है, यह तुलना अतिशयोक्ति लगे लेकिन पेरैंटिंग का आज का सच इस के इर्दगिर्द ही है जिस के चलते बच्चे नाजुक और खूबसूरत तो दिखते हैं लेकिन उन में हिम्मत न के बराबर होती है. वे मेले में झूला झूलने से भी डरते हैं.

भोपाल के एक नामी स्कूल की स्पोर्ट्स टीचर की मानें तो 70 फीसदी पेरैंट्स उन से आग्रह करते हैं कि उन के लाड़ले या लाड़ली को बजाय हौकी, क्रिकेट या फुटबौल के, बैडमिंटन, टेबिल टैनिस या शतरंज, कैरम जैसा इनडोर गेम खिलाएं जिस में चोट लगने का डर नहीं रहता. इन बड़े स्कूलों के बच्चे, कबड्डी क्या होती है, यह जानते ही नहीं.

ऐसा क्यों, यह तो खुद डरे हुए और बच्चों को भी डरपोक बनाते पेरैंट्स ही बेहतर बता सकते हैं जिन का तथाकथित पारिवारिक या सामाजिक वजहों से उतना लेनादेना होता नहीं जितना कि वे समझते हैं. बच्चे की हिफाजत किया जाना हर्ज की बात नहीं लेकिन इस आड़ में कहीं उन्हें खुद अपनी हिफाजत करना न सीखने देना हादसों की वजह अकसर भले ही न बने लेकिन उन के व्यक्तित्व पर असर तो डालता ही है. **–प्रतिनिधि** ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कहानी

# कर्नल साहब

• प्रज्ञा पांडेय मनु

कर्नल साहब को अपने लिए केयरटेकर के रूप में अधेड़, थुलथुल बदन की सोनिया को देख कर निराशा हुई थी. लेकिन फिर भी उसे नियुक्त कर लिया. सोनिया ने धीरेधीरे कर्नल और उन का घर दोनों संभाल लिए. सोनिया कर्नल की जरूरत बनती जा रही थी, इस एहसास से शायद वे अनजान थे.

किशन पुरी को सभी कर्नल साहब कहते थे, जबकि उन का सेना से दूरदूर तक नाता नहीं था. वे एक रईस जमींदार थे और उन के सेब के 3 बाग थे शिमला में. पत्नी का निधन अरसा पहले हो गया था. सो, बच्चों को बोर्डिंग स्कूल से कभीकभी ही घर लाते थे.

बच्चे अब बड़े हो गए थे और बेटा यूके में सौफ्टवेयर इंजीनियर बन गया था व बेटी जोकि एयरहोस्टेस थी उस ने किसी पायलट से विवाह किया था जोकि जरमन मूल का आकर्षक युवक था. दोनों बच्चे कभीकभी पिता से फोन पर बात करते थे. लेकिन कर्नल को किसी की भी जरूरत नहीं महसूस होती थी.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वे एक जिंदादिल इंसान थे, स्वास्थ्य अच्छा था और पैसा खूब था. दूसरे विवाह आदि के झमेले से कोसों दूर थे वे. बस, मौजमस्ती, यारदोस्त और पार्टियों का दौर चलता रहता था. कर्नल के दिन आराम से गुजर रहे थे. लेकिन समय का पहिया एक सा तो रहता नहीं है. कर्नल साहब बीमार पड़ गए, 2 महीने तक बिस्तर पर ही रहे. धीरेधीरे दोस्तों ने आना कम किया. बच्चे नौकर को हिदायत दे कर अपने फर्ज से मुक्त हो गए.

नौकर इस घर को अब अच्छी तरह लूट चुका था और कर्नल के गिरते स्वास्थ्य के कारण घर में खानेपीने की सुविधा जो नौकर को पहले मिलती थी अब बंद हो गई थी. सो, वह भी भागने के मूड में था. धीरेधीरे कर्नल अकेलेपन का शिकार हो गए थे. उन का रोबीला चेहरा और कदकाठी, जिस के चलते लोग उन को कर्नल कहते थे, कमजोर हो चले थे. उन्होंने तय किया कि वे एक गवर्नेस रखेंगे और अपनी सेहत का ध्यान रखेंगे.

एक पेपर में विज्ञापन निकलवाया. कुछ दिनों में ही कई आवेदनपत्र आए. कुछ सुदर्शन लड़कियों के थे और कुछ अधेड़ औरतों के, कुछ ने तो शादी का ही औफर दे डाला. हर बीतते दिन के साथ

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कर्नल मायूस हो रहे थे. एक आखिरी आवेदन किसी एंग्लो इंडियन महिला का था और उस ने पहले कहीं केयरटेकर का कार्य किया था. सोनिया नाम था उस का. कर्नल ने बुलाया उस को. कुछ छोटीमोटी बातें पूछ कर कर्नल चुप हो गए.

सोनिया ने 2 घंटे बाद कर्नल से कोई जवाब न मिलने पर कर्नल के घर से जाने का उपक्रम किया. जोकि कर्नल को शायद ठीक नहीं लगा. वैसे, सोनिया एक थुलथुल बदन की अधेड़ महिला थी. जबकि सोनिया नाम और एंग्लो इंडियन होने के कारण कर्नल ने सोचा था कि वह एक बेहद स्मार्ट महिला होगी लेकिन सोनिया

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

का उठ कर जाने का उपक्रम कर्नल को नागवार गुजरा. कर्नल ने सोचा कि यह फैसला करने का अधिकार उन का है और उन्होंने ऊपरी मन से सोनिया को नियुक्त कर लिया था. वैसे यह सोनिया भी समझ गई थी की कर्नल उस से मिल कर निराश ही हुए हैं. खैर, सोनिया को नियुक्त कर के कर्नल अपने कमरे मे चले गए. मानो वे अपनेआप से ही खफा थे.

कर्नल बिस्तर पर लेट गए और कब उन की आंख लग गई, उन को पता न चला. आंख खुली तो उन्होंने देखा कि सोनिया एक प्लेट में 2 रोटी, दाल, सलाद और एक छाछ का गिलास लिए खड़ी थी. उस ने कर्नल को खाना खाने के लिए जगाया. कर्नल ने खाना खा लिया. उसे यह सादा भोजन काफी अच्छा लगा. उन्होंने एक रोटी और मांगी. सोनिया ने ला कर दी. वह कर्नल का मुंह देख रही थी कि वे कुछ पूछेंगे कि उस को रसोईघर में सब सामान कहां से मिले, उस ने सलाद और छाछ कहां से मंगाया. किंतु दंभी कर्नल ने कुछ नहीं पूछा. हां, उन्होंने नजर घुमा कर अपने कमरे और आसपास की जगहों को देखा, उन्हें अपना कमरा साफ लग रहा था.

कर्नल सोच ही रहे थे कि सोनिया उन की दवाओं का डब्बा और पानी लिए आ गई. कर्नल ने चुपचाप दवाएं खा लीं. अब सोनिया फिर बाकी घर की साफसफाई में लग गई. उस ने कुछ खाया या नहीं, कर्नल ने यह पूछने की भी जरूरत न समझी.

शाम होतेहोते सोनिया ने कोठी के लौन में एक कुरसी डाल दी और कर्नल को वहीं बैठा दिया. थोड़ी देर में चाय का कप ले कर आ गई. कर्नल को चाय दी. इस बार कर्नल फिर नहीं पूछ पाए कि उस ने चाय पी या नहीं. लेकिन इस बार कर्नल को अफसोस हुआ कि उन्हें सोनिया से चाय और खाना खाने के बारे में कहना चाहिए था. रात में भी सोनिया सूप और खिचड़ी बना लाई. खाने के बाद फिर दवा दी और चली गई.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रात में कर्नल ने देखा कि वह उन के कमरे के बाहर बैठेबैठे ही सो गई थी और पास ही एक बिस्कुट का पैकेट पड़ा था व एक प्लास्टिक की बोतल में पानी. शायद सोनिया अपने साथ लाई थी, वही खा कर वह सो गई थी. अब कर्नल का दिल कुछ पसीज गया. उन्हें अपने ऊपर क्रोध भी आया. वह इतना बुरा बरताव कैसे कर सकते हैं और मन ही मन उन्होंने कुछ तय किया.

सुबह सोनिया ने जैसे ही चाय का कप दिया, कर्नल ने उस से कहा, "तुम ने कल से कुछ खायापिया क्यों नहीं? और हां, तुम अपने इस्तेमाल के लिए कोठी का कोई कमरा चुन लो और खानापीना अपने लिए भी बनाया करो." और साथ ही, उन्होंने एक कार्ड दिया, कहा, "घर के लिए जो भी सामान फलसब्जी चाहिए, इस स्टोर से फोन कर के मंगा लेना. उस का पेमैंट मैं औनलाइन कर देता हूं." यह सुन कर

*थुलथुल केयरटेकर सोनिया ने जिस तरह से बीमार कर्नल को संभाल लिया था, कर्नल के लिए भी हैरान करने वाला था.*
***संबंधों की अनूठी परिभाषा उकेरती कहानी पढ़िए, सिर्फ सरिता में.***



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

सोनिया की आंखों में कृतज्ञता झलक आई. हालांकि ये बुनियादी सुविधाएं तो उस का हक थीं लेकिन फिर भी वह कृतज्ञ हुई. दिन बीत रहे थे और सोनिया की देखभाल से कर्नल फिर अपने पुराने स्वरूप में लौट रहे थे. चेहरा फिर आकर्षक हो रहा था और कमजोरी भी काफी हद तक खत्म हो गई थी.

कर्नल ने सोनिया से कभी उस के बारे में कुछ नहीं पूछा और अपनेआप तो सोनिया भी कुछ बताने से रही. सोनिया के आने से कर्नल के जीवन में एक इत्मीनान सा आ गया था. इधर कर्नल के बच्चे भी सुन रहे थे कि कर्नल ने कोई केयरटेकर रखी है और कभीकभी बच्चों से बातचीत में कर्नल अनजाने ही सोनिया का जिक्र कर बैठते थे तो बच्चों के कान खड़े हो गए थे.

अब दोनों बच्चों ने बारीबारी पिता का हालचाल जानने के लिए भारतभ्रमण का प्रोग्राम बना लिया. किंतु असली मकसद तो सोनिया को देखना था. कहीं कोई मायावी स्त्री तो नहीं है जो उन के पिता को फुसला कर कोठी में मजे कर रही हो. किंतु बच्चों को कहीं भी कोई कुटिलता नहीं मिली, न कोई रुपएपैसे का हेरफेर. यहां तक कि स्मार्ट बच्चों ने स्टोर से आने वाले सामान की लिस्ट भी चैक की तो हैरान हो गए, सोनिया ने पहले से कम खर्च में घर चलाया था. बच्चे चुपचाप खिसक गए थे.

सोनिया बच्चों के जाने के बाद बीमार हो गई थी क्योंकि इतनी बड़ी कोठी की साफसफाई की व्यवस्था और खानापीना सब वही देख रही थी



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

तो खुद के स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख सकी. वैसे, सोनिया अब इस घर और कर्नल के वजूद का हिस्सा बन गई थी.

किंतु कर्नल इस सचाई को झुठला रहे थे और अपनेआप से भी छिपाते रहे.

उन्हें लगता नहीं था कि वे जानेअनजाने सोनिया के आदी हो रहे हैं. कर्नल अपने ही मन से अनजान थे. इधर उन के पुराने यार फिर खानेपीने के लिए कर्नल के घर जमा होने लगे थे. किंतु कर्नल अब पार्टी के प्रति उदासीन हो गए थे. यह बात उन के दोस्तों को अखर गई थी. अब सभी इस बदलाव का कारण सोनिया को मानने लगे थे और उस को घर से भगाने के लिए मजहबी बातों को उठाने लगे. जैसे कर्नल को सोनिया कनवर्ट करवा देगी, उन की कोठी को चर्च बना देगी जैसी बेसिरपैर की बातें फैला रहे थे.

सोनिया तभी एक दिन घर की सफाई करते हुए सीढ़ी से गिर गई और उस के पैर में मोच आ गई थी. उस की चीख सुन कर कर्नल जल्दी से आए. उन्होंने सोनिया को उठा कर उस के कमरे तक पहुंचाया और नर्म शब्दों में डांटने लगे कि किस ने कहा है रोज पूरी कोठी को साफ करो. खुद का भी कुछ खयाल रखना चाहिए. अगर जरूरी हो तो एक नौकर रख लो, वह तुम्हारी मदद कर दिया करेगा. सोनिया ने एक नौकर को रख लिया और धीरेधीरे उसे घर के सब काम भी सिखा दिए. नौकर भी अच्छी तरह ट्रेंड हो गया था.

तब एक दिन सोनिया ने कहा कि वह वापस जाना चाहती है और अब कर्नल का स्वास्थ्य भी अच्छा हो गया है. दूसरे, नौकर भी ट्रेंड हो गया है जो घर को संभाल लेगा और उसे भी एक दूसरी जगह नौकरी मिल गई है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कर्नल इस अप्रत्याशित बात के लिए तैयार नहीं थे. उन्होंने कभी सोचा नहीं था कि सोनिया जा सकती है. कर्नल अब नहीं चाहते थे कि वह मोटी थुलथुल महिला वहां से जाए. कर्नल खुद हैरान थे कि सोनिया के जाने की बात से वे खुश क्यों नहीं हो रहे हैं. मौका भी बहुत सही है. एक नौकर भी आ गया है जो घर का काम कर देगा. अब वे स्वस्थ हो गए हैं. फिर पार्टी का दौर शुरू हो सकता है. लेकिन कर्नल उस के जाने की बात से असहज हो गए थे.

कर्नल ने बड़ी गहरी आवाज में सोनिया से कहा कि वह हमेशा के लिए इस कोठी में रह सकती है और इस घर, यहां की हर चीज पर उस का भी पूरा हक है और अपनी इच्छा से जो कुछ करना चाहे, कर सकती है.

वह आई भले ही एक केयरटेकर बन कर थी और शायद कर्नल उस से मिल कर खुश नहीं हुए थे. किंतु सचाई यह है कि आज सोनिया सिर्फ केयरटेकर ही नहीं रह गई, कर्नल को उस के घर पर होने से यह कोठी घर जैसी लगने लगी थी. अब इस एहसास को कर्नल क्या नाम दे, समझ नहीं पा रहा था. एक बेनाम रिश्ता था जो शायद प्यार से कम और दोस्ती से कुछ ज्यादा का था. शायद यह भरोसे का, विश्वास का रिश्ता था. इसलिए सोनिया के जाने की बात से ही कर्नल का दिल बैठ रहा था. कर्नल की आवाज भीग चुकी थी और वह अपने को कमजोर दिखाना नहीं चाहते थे. उन्होंने अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर लिया था.

सोनिया हतप्रभ सी खड़ी कर्नल को जाते देख रही थी. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# सुलक्षणा

• रुचि पंत

काफी विरोध के बावजूद सुलक्षणा ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और वकालत की पढ़ाई कर ली. शादी के बाद ससुराल में पति की ज्यादतियों ने उसे सुखचैन से जीने नहीं दिया. ऐसे में ससुराल छोड़ कर वह किसी अनजान राह पर चलने को मजबूर हो गई.

किसी को क्या कोई शौक होता है अपनी शादीशुदा जिंदगी खत्म कर के ससुराल से रातोंरात भागना? बिना मंजिल राह चलती किसी भी बस में चढ़ जाना? अपना चेहरा औरों की नजरों से छिपा कर, बिखरते आंसुओं को पोंछना भला किसे सुख देता होगा?

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मगर, ऐसा हाल सुलक्षणा का हो चुका था. उस की ससुराल में पैसों और रुतबे की कोई कमी नहीं थी. कमी थी तो बस उस के जज्बात की थोड़ी भी समझ न रखने की. आप को लगता होगा कि उस का यह कदम गलत हो सकता है. उसे अपना रिश्ता बचाने के लिए थोड़ा और प्रयास करना था या शायद गलती उसी की हो जैसा कि उस के परिवार वालों और ससुराल पक्ष को हमेशा से लगता आया है.

चलिए, फिर आप ही एक बार उस की कहानी सुनिए और बताइए कि उस का निर्णय सही था या नहीं?

उस की परिस्थितियों को समझने के लिए थोड़ा पीछे मुड़ कर उस की पिछली जिंदगी में झांकना होगा, क्योंकि इंसान की वर्तमान स्थिति उस के भूत में गुजरे और गुजारे दिनों के इर्दगिर्द ही तय हो जाया करती है.

बहुत सालों पहले की बात है, जब उस के पिता का विवाह उन के किशोरावस्था में उस के दादाजी द्वारा संपन्न करा दिया गया था. दादाजी ने दहेज का पैसा जोड़ कर एक सुनार की दुकान खोली, जो समय गुजरते, सफलता के उच्चतम पायदान पर पहुंचने लगी.

दादाजी के निधन के बाद पिता तुरंत उन की संपूर्ण संचित संपत्ति के सीधे हकदार बन गए. धीरेधीरे 3 लड़कियां हो गईं. पोते की ख्वाहिश पूरी करने के लिए दादी द्वारा विशेष पूजाअनुष्ठानों के कई सालों बाद उन के घर एक लड़का पैदा हुआ.

उस के पिता जिस घर में जन्मे थे वहां बहुओं को केवल रसोई और बच्चों की परवरिश तक सीमित रखा गया था. आगे के विषयों पर उन से कभी कोई मशवरा



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

नहीं लिया जाता था और यह प्रथा जमाने से उन के खानदान में आज तक चली आ रही है.

लड़के जो कि उन के बुढ़ापे का सहारा हैं, उस पर कोई बंदिश नहीं. रही बात लड़कियों की तो उन्हें हलकाफुलका शादी योग्य पढ़ना होगा और घरगृहस्थी के कामों में निपुण. एक बार ब्याह गईं, फिर उन की जिम्मेदारी खत्म, अपने समय से जीती रहें. उन का इस घर से न के बराबर सरोकार होगा, क्योंकि अब उन का घर उन की ससुराल है.

अच्छे पैसे वाले घर से होने के कारण वे चारों शहर के सब से नामी स्कूल में पढ़ने जाया करते थे. पढ़ाईलिखाई से दादी की तरह पिता को भी कोई दिलचस्पी नहीं थी.

उन की आगे की रणनीति बिलकुल पानी की तरह साफ थी, एक उम्र के बाद अच्छा दहेज दे कर तीनों की संपन्न परिवार में शादी और बेटे

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

को जल्द से जल्द अपने पेशे में शामिल कर, अथाह दहेज ले कर उस की भी शादी. वैसा ही जैसा दादाजी ने उन के साथ किया था.

उस के पिता की दुनिया में सिर्फ पैसा ही एकमात्र ऐसी चीज है जो अच्छी जिंदगी देने के लिए पर्याप्त है. न तो पढ़ाई, संस्कार, सद्भावना, करुणा और न ही कोई सद्कार्य, ये सब उन के लिए समय और पैसे की बरबादी के रास्ते थे.

इन सब के बावजूद उन की बरकत होती रही थी. धीरेधीरे उन की शहर में बहुत बड़ी आभूषण की दुकान हो गई. पिताजी का समाज और रिश्तेदारों में बहुत रुतबा बढ़ने लगा. दूरदराज से लोग भारी ब्याज पर उन से रुपए उधार लेने आने लगे. किसी का घर ही क्यों न तबाह हो जाए, मजाल है कि वे उन का एक पैसा भी माफ कर दें.

समय गुजरता चला गया. उस की दोनों बड़ी बहनों और भाई को शिक्षा रास न आई, परंतु उस की कई मिन्नतों और जिद के बाद दादी से वकालत करने की इजाजत इस शर्त पर मांगी कि जैसे ही उस की पढ़ाई खत्म होगी, वह अपने पिता के कहे घर पर आंख बंद कर ब्याह कर लेगी.

हुआ भी कुछ ऐसा ही. एक के बाद एक दोनों बहनों को उन के ससुराल वालों की तिजोरी देख विदा कर दिया गया.

कुछ सालों बाद अब वह एक वकील बन कर दादी को किए वादे के अनुसार अपने पिता के नए बिजनैस पार्टनर के बेटे संग शादी के बंधन में बंध गई.

वह मानती है कि उस की परवरिश बाकी घरों की तुलना में बहुत संकीर्ण मानसिकता के बीच हुई है जहां कोई अपना अलग रास्ता चुनने का साहस नहीं कर सकता, खासतौर से बेटियां तो कदापि नहीं, तब भी वह अपने भविष्य संजोने के सपने देखती रही.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वह अपने पूरे वंश की एकमात्र शिक्षित लड़की थी और आज के बाद एकमात्र ऐसी पत्नी भी जो एक वक्त वह अपना ससुराल छोड़ कर भाग खड़ी हुई.

शादी तो उस ने कर ली, मगर उस का मन उन चारदीवारों के अंदर कैद हो कर अपनी शेष जिंदगी काटना बिलकुल नहीं चाहता था.

इसलिए समय देख अपनी वकालत को नियमित रखने के लिए अपने पति को मनाने की सोची, शायद उन्हें अपनी पत्नी की इच्छा, सपनों की परवा हो. वे उस के घर वालों की तरह बंधे विचार न रखते हों. लेकिन जैसा सोचा था उस के विपरीत उस ने अपना जीवन मुश्किलों से भरा हुआ पाया.

उस के पिता ने सिर्फ धनसंपत्ति और अपने बिजनैस को आगे बढ़ता देख उस की शादी उस घर में तय कर दी, लेकिन एक बार के लिए अपने बिगड़े दामाद के चालचलन पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी. उस की बहनें इस मामले में

*पति की खूंखार हरकतें एक वकालत पास लड़की सिर्फ संस्कारों के लिए क्यों सहे?*

***जुल्म के खिलाफ सुलक्षणा के कदम उठाने जैसी कहानियां सिर्फ सरिता में.***



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

समय की बलवान निकलीं, उन की जिंदगी में उस की जैसी तकलीफें नहीं थीं.

उस का पति शराबी, जुआ खेलने वाला, अन्य औरतों से जिस्मानी रिश्ते रखने वाला. और तो और, बिना बात के उस पर हाथ उठाने वाला नासूर इंसान निकला. वह उन्हें पूरी तरह से समझतेसमझते टूटने लगी.

क्या उस का बाकी जीवन ऐसे इंसान के साथ बीतेगा? अपनेआप को अनेक बार संभाल कर, फिर से उन के सभी ऐबों को दरकिनार कर वह उन्हें प्यारसम्मान देती रही, इस उम्मीद से कि शायद वे एक दिन जरूर सुधर जाएंगे. मगर उन के लिए संवेदना, प्यार, अपनापन कोई माने नहीं रखते थे.

**उसे एक ऐसे पिंजरे में मजबूरन कैद होना पड़ गया था जहां से वह केवल नीले आजाद आकाश में उड़ते हुए खुशहाल पक्षियों को देख सकती थी. उड़ती कैसे? उस की उड़ान तो शादी के पहले से नियंत्रण में रखी गई थी और शादी के बाद मानो उस के पंख ही काट दिए गए हों.**

हर बार संबंध बनाने के बाद वे उस पर पैसे फेंकने लगे. एकदो बार तो उसे समझ नहीं आया, जब लगा कि ये अपनी पत्नी को भी वेश्या समझते हैं तो उन की यह घटिया सोच उस से बरदाश्त नहीं हुई. उस ने उन के ऐसे बरताव करने पर एतराज जताया.

'तो क्या करेगी तू? मुकदमा करेगी? जा, कर. अब देख तेरे साथ और क्याक्या करता हूं, आई अपनी वकालत झाड़ने.'

उन्होंने जो कहा, अखिरकार उस के साथ वैसा करने लगे.

उस की बिना मरजी के बारबार वे उस की देह पर वार करते रहे और उन के इस घिनौने कामों को वह खून की प्याली समझ पीती गई. उन के साथ एक कमरे में रहना उस के लिए असहनीय बनता जा रहा था. वह चाहती थी कि वह मर जाए, जिस से उस की जिंदगी को यह सब झेलने से आजादी मिल सके.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

आप को क्या लगता है, उस ने मायके में अपनी घुटनभरी यातनाओं का जिक्र नहीं किया होगा? हजार बार किया, मगर उन के घर में औरतों की दुखतकलीफ का कोई महत्त्व नहीं होता. पिता तक तो खबर ही नहीं पहुंचती, मां और बहनें सब उसे ही ज्यादा पढ़ीलिखी होने की दुहाई देते.

'अरे, जैसा है, चला. सब को कुछ न कुछ सहना तो पड़ता है.'

'तू ज्यादा पढ़लिख गई है, इसलिए इतनी शिकायतें करती है.'

'तुम्हारी दोनों बहनें तो कुछ नहीं कहतीं.'

'इसी वजह से हम औरतों को ज्यादा पढ़ने की छूट नहीं है.'

'अपना सब छोड़छाड़ कर यहां आ कर रहने की सोचना भी मत. ऐसा पीढ़ियों से नहीं हुआ और न होगा, क्योंकि शादी के बाद बेटियों का घर ससुराल ही होता है, भले ही वह जैसा भी हो.'

इन्हीं सब दलीलों की वजह से अपने मायके से वह आशाहीन थी, इसी वजह से उस की हालत बद से बदतर होती चली जा रही थी. उस के शरीर से आत्मा जैसे निकलने के लिए तरस रही हो. इसी बीच उसे पता चला कि वह मां बनने वाली है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मां बनना इन दुखों के पहाड़ के बीच उस की जिंदगी का सब से खुशनुमा पल था और सच पूछें तो उसे एक बेटी की चाहत थी, जिस का नाम आकांक्षा रखती, उसे खूब पढ़ालिखा कर अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने की आजादी देती. मगर, यह खुशी भी उस के ससुराल वालों से देखी न गई.

जब उस ने यह बात अपने पति से साझा की तो वह झट बोला,

'लड़का ही होगा, अगर लड़की हुई तो कचरे में फेंक दूंगा, समझी.'

उस की कोख में बेटी होने का पता लगाने के बाद, उन्होंने अपनी पहचान और पैसों के रोब से उस की अधूरी आकांक्षाओं के साथ उस के भीतर ही उस का गला घोट देना बेहतर समझा.

इन 6 सालों के बीच वह 2 बार अपनी बरदाश्त की सीमाएं पार होने पर ससुराल छोड़ कर अपने मायके जा चुकी थी.

'तेरी कोख ही मनहूस है, एक बेटा तक नहीं दे सकती.'

बेटा न हुआ तो उस के लिए भी उसे ही जिम्मेदार ठहराया गया.

लेकिन, हर बार सभी की एक ही समझाइश और ससुराल वापसी करा दी जाती. 'धीरेधीरे सब ठीक हो जाएगा, दामाद साहब अपनेआप सुधर जाएंगे.'

'तुम सब्र रखो, तुम 2 बार घर छोड़ कर वैसे ही आ चुकी हो, समाज क्या कहेगा?'

'यहां लौट के आ गई तो बाकी बहनों के ससुराल वाले थूथू करेंगे हम पर.'

'कुछ नहीं तो पिता की इज्जत और उन के व्यापार का तो खयाल करो.'

'इस घर में तलाक का नाम भी मत लेना.'

पिता को भी थोड़ाकुछ पता था, मगर वे अपनी पार्टनरशिप बचाने के चक्कर में जानबूझ कर अनजान बनते रहे और साथ ही, उन्हें भी लगता था कि धीरेधीरे चीजें ठीक हो जाएंगी, शादी करने के बाद सब को एडजस्ट करना होता है, वह भी एक न एक दिन कर लेगी.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

इतने वक्त सब का हठी व्यवहार देख कर सुलक्षणा को यह एहसास होते देर न लगी कि उस की परेशानियों से किसी को कोई वास्ता नहीं है. अपने घर वालों द्वारा उस के साथ पराई औलाद जैसा बरताव करते देख उसे असहनीय पीड़ा होती थी.

उसे एक ऐसे पिंजरे में मजबूरन कैद होना पड़ गया था जहां से वह केवल नीले आजाद आकाश में उड़ते हुए खुशहाल पक्षियों को देख सकती थी. उड़ती कैसे? उस की उड़ान तो शादी के पहले से नियंत्रण में रखी गई थी और शादी के बाद मानो उस के पंख ही काट दिए गए हों.

उस बीच उस के लोभी भाई ने शादी रचाई. उस के पिता, भाई और पति में खासा फर्क नहीं था.

पिता के साथ भाई का पैसों को ले कर मतभेद आएदिन होता रहता था. रोजरोज की कहासुनी से तंग वह अपनी शादी पर मिलने वाले पूरे दहेज पर अपना हक लेने की फिराक में था.

उस के ससुराल वालों ने शर्त रखी, 'हमारी इकलौती बेटी से शादी के बाद आप का बेटा घरजमाई बन कर रहेगा, पूरा कारोबार संभालेगा, सारी प्रौपर्टी पर अंत में उस का



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ही हक होगा. हम उसे अपना बेटा मान कर प्यार देंगे.'

उस का मतलबी भाई मान गया. घर पर कई दिनों की महाभारत और पिता के कई प्रलोभन देने के बावजूद भाई नहीं समझा. बड़ी धूमधाम से उन दोनों की शादी संपन्न हो गई और वह घरजमाई बन कर, उन्हें धोखा दे कर चलता बना.

वहीं, सुलक्षणा का जीवन नरक से भी बदतर बनता चला जा रहा था. अपनी दूसरी बेटी की जुदाई उसे अंदर से खोखला करती जा रही थी. वह अपने हैवान पति और ससुराल वालों से नफरत करने लगी.

अपने पति के साथ बारबार हमबिस्तर न होने के बहाने बनाती रही. वह नहीं चाहती थी कि वह गर्भवती हो और एक निर्दोष संतान फिर से मार दी जाए. मगर, उस का पति हवस का गिद्ध...

कामवाली के साथ अंतरंग होते उस ने उन्हें अपनी आंखों से देख लिया. जिस इंसान ने अनगिनत बार उस का विश्वास तोड़ा, इस बार, उन की यह निरी हरकत वह बरदाश्त नहीं कर पाई.

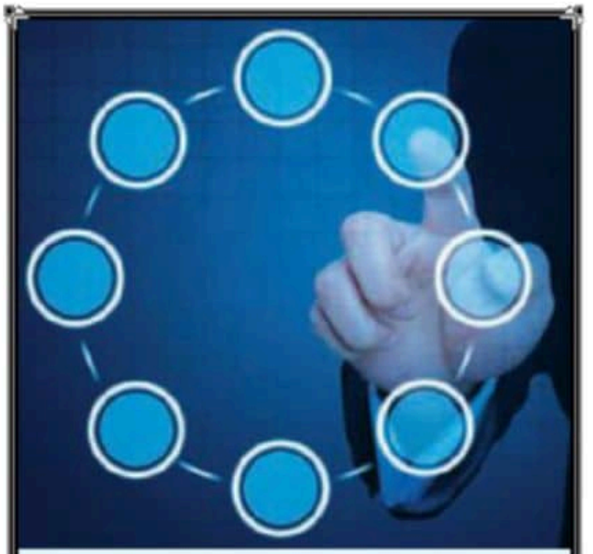

**चुनाव**

*अगर मुझे कष्टों का सामना करना और खाली चुपचाप बिना कुछ किए बैठे रहना, दोनों में से किसी एक चीज को चुनना पड़े तो, मैं हमेशा परेशानियों का सामना करने को ही चुनता.*

*– विलियम फौकनर*

सरिता

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

उसे पूरा विश्वास हो गया कि इस महल में कभी कोई सुधर नहीं सकता, शायद यही वह पल है जो इतने सालों से यह कहने का इंतजार कर रहा था कि, अब बस, उस ने अपने सारे रिश्ते तोड़ कर ससुराल छोड़ने का फैसला कर लिया.

उस ने आज के दिन अपनेआप को एक नए रूप में ढलते हुए महसूस किया. अंदर से जैसे एक अनवरत सशक्तरूपी ताकत उस का साहस भरती जा रही थी. वह आवेश में भी आ कर कोई उलटासीधा कदम नहीं उठाना चाहती थी.

वह घर छोड़ कर पहले भी 2 बार जा चुकी थी इस उम्मीद से कि उस के मायके वाले एक बार कह दें कि 'बेटी, तुम फिक्र मत करो. यह घर भी तो तुम्हारा है,' मगर, इस बार अपने मायके कतई न जाने का सूझबूझ कर फैसला लिया, क्योंकि वहां कहने को उस के खुद के भी अपनाने वाले नहीं थे. दोचार दिनों बाद वही समझा कर फिर वापस उस नरक में धकेल देंगे. इसी रात वह अपने जेवर और पैसे ले कर घर से भाग गई.

कहां जाती? कहां रहती? बिना कुछ परवा किए वह निरंतर अपना मुंह छिपा कर चलती चली जा रही थी. एक बस गुजरती दिखी और बिना सोचे उस पर सवार हो गई.

2 दिनों बाद कहीं सुलक्षणा के मायके में फोन आया.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

'नमस्कार बहनजी, बहू की 2 दिनों पहले बेटे से छोटी सी बात पर थोड़ी कहासुनी हो गई थी, तब से घर से गायब है, पक्का आप के पास आ गई होगी, जब गुस्सा शांत हो जाए तो समझा कर वापस भेज दीजिएगा.'

'नहीं, वह तो यहां नहीं आई. उसे गए हुए पूरे 2 दिन हो गए और आप मुझे अब बता रही हैं? कहां होगी मेरी बेटी, किस हाल में होगी वह?'

'आप चिंता न करें, आ जाएगी, चलिए, मैं बाद में फोन करती हूं.'

'कहां गई मेरी बच्ची, कुछ भी कर के उसे ढूंढ़ कर लाओ. यह सब आप की गलतियों का नतीजा है, पैसे देख कर अपनी लड़की का सौदा कर आए, वहां बेटे ने अपना सौदा कर लिया. कभी खबर ली, किस हाल में रहती है वह?' गुस्से के आंसुओं से तिलमिला उस की मां ने पिता से जीवन में पहली बार कुछ कहने की हिम्मत की.

पत्नी की बात सुन कर पिता मायूस हो सिर पर हाथ रख कर बैठ गए, जानते वे भी सब थे, कैसे उन का खुद का खून, बुढ़ापे, व्यापार का सहारा अपने सामने विदा होते देख उन का घमंड अंदर ही अंदर चूरचूर हो चुका था. किसी से क्या स्वीकार करते?

उस के पिता हर चीज पैसों से खरीद नहीं सकते थे, अगर ऐसा होता तो आज उन की बेटी सारी सुखसुविधा होने के बावजूद दरदर की ठोकरें खाने को मजबूर न होती और न ही उन का बेटा जो इतनी छूट मिलने के बाद भी उन्हें छोड़ कर चला गया.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel Join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

औरों को लगता होगा कि इतना शानदार संगमरमर का घर, अंदर सब कितने खुशहाल होंगे, इन्हें किसी चीज की कमी क्या होगी? मगर, कभी भीतर आ कर सचाई देखना, इन बड़े घरों की ऊंची इमारतें अकसर दुख की दीवारों से घिरी होती हैं.

कुछ दिनों के मंथन के बाद वे अपनी प्रतिष्ठा, रुतबा सब दरकिनार कर अखबार में इश्तिहार दे आए.

'सुलक्षणा बेटी, तुम जहां कहीं भी हो, हम आशा करते हैं कि तुम सुरक्षित होगी. तुम्हारी ससुराल छोड़ कर जाने की खबर सुन कर हम सभी बहुत दुखी हैं. तुम अपने घर वापस आ जाओ, तुम्हारे इंतजार में तुम्हारे पिता.'

उस दिन बस में उस की हालत देख कर एक भले आदमी ने पीड़ित महिलाओं के लिए काम करने वाली एक गैरसरकारी संस्था का पता दिया. वह बेबस थी. आगे क्या करे, कुछ समझ नहीं आ रहा था, डर भी था कि वे उसे कहीं न कहीं से ढूंढ़ निकाल लेंगे, सिर के नीचे एक सुरक्षित जगह भी चाहिए, इसलिए उस ने वहीं जाना उचित समझा.

वे उसे अपने साथ रखने पर सहमत हो गए और उस के ससुराल वालों को सबक सिखाने के लिए कोर्ट केस करने की पेशकश की.

कुछ दिनों बाद पिता द्वारा अखबार में छपी वह खबर उस तक पहुंची. मगर, उसे अनेक बार पढ़ कर भी, अब किसी की बातों पर विश्वास करने की स्थिति में नहीं थी वह.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अखिरकार कुछ दिनों के सोचविचार के बाद उस की उन से क्या अपेक्षा है, एक अंतिम बार संस्था द्वारा जोर देने पर अपने घर बात करने पर विचार करने लगी.

'हैलो मां, मैं सुलक्षणा.'

'बेटी, तुम कहां हो? ऐसे ससुराल छोड़ कर क्यों गायब हो गईं? कुछ नहीं तो अपने घर ही आ जातीं,' उस की मां पहली बार उसे उस की वजह से परेशान मालूम पड़ीं.

'आप किस लहजे से इसे मेरा घर कहती हैं? यह घर हम बेटियों के लिए कहां होता है. खासतौर से उस हताश बेटी का तो बिलकुल नहीं जो आप लोगों को रोज अपनी नई समस्या बताती फिरे.'

'ऐसी कौन सी बात तुम्हारी मां ने नहीं सुनी? बताओ?'

'बस, सुनी भर. मगर, किया क्या? सुन कर अनसुना. और ज्यादा हुआ तो थोड़ा कुछ समझाती रहीं.'

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

'तुम अब क्या चाहती हो?'

'मैं उस घर में हरगिज कभी नहीं जाऊंगी. सीधी सी बात है कि मुझे उस आदमी से तलाक चाहिए. क्या आप लोग मेरे इस फैसले में मेरा साथ देंगे? अगर हां तो ही मैं आऊंगी.'

दोस्तो, भले ही आप को ये सब बातें कड़वी लगें, मगर भारतीय समाज में एक लड़की को तलाक लेने की सोचना, तलाक ले लेना और उन सभी लंबीचौड़ी कोर्टकचहरी की प्रक्रिया के बाद फिर से अपनी बिखरी हुई जिंदगी को समेट कर फिर शुरू करना. उफ्फ, क्योंकि आप अंदेशा नहीं लगा सकते, यह एक तरह से खुद की मरजी से नुकीले बाण के रास्तों पर चलते रहने को चुनने समान है.

'बेटी, पूरे शहर में सिर्फ तुम्हारी वजह से हमारा नाम मिट्टी में मिल जाएगा और पिता के व्यापार का क्या?'

'मां, मैं तुम्हारा उत्तर समझ गई. फोन काट रही हूं, क्योंकि आप लोग अपनी इस बेटी की तकलीफों को दरकिनार कर बस अपना ही नफानुकसान देखते आए हैं.'

'रुको, सुलक्षणा से मेरी बात कराओ.'

'आज आप दुकान से इतने जल्दी वापस आ गए? इतने परेशान क्यों दिख रहे हैं?'

'बताता हूं, बेटी सुलक्षणा,' उन की बात के बीच पिताजी ने फोन मां से ले लिया.

'जी, पिताजी, आप.'

'हां मैं. मुझे माफ करना, तुम्हारी हालत का जिम्मेदार केवल मैं हूं, आज से पहले मैं तुम्हारी मुश्किलें कभी कम न कर पाया और न ही समझ पाया. एक आखिरी मौका अपने पिता को दे दो.'

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अपने पिता को इस तरह जीवन में पहली बार बात करते सुन वह भावुक हो उठी. यह वह एहसास था जिस के लिए वह ताउम्र तड़पती रही, जिस का वास्तविकता में उसे कभी अनुभव करना इस जन्म में मुमकिन नहीं था.

ये कुछ चंद शब्द उस की चिंता लिए हुए, उसे एक पल में सुकून दे गए और वह चुपचाप फोन पकड़े अपने आंसू पोंछने लगी.

उस के पिता आगे कहने लगे, 'बेटी, जब तक तुम्हारे पिता जिंदा हैं, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा, तुम्हें तलाक के साथ तुम्हारे साथ हुई हर यातना का बदला हम मिल कर लेंगे.'

उसे संदेह हुआ कि मेरे पिता, वह भी इस तरह से अचानक कैसे बदले से मालूम पड़ रहे हैं जिन के लिए हर रिश्ता केवल पैसों के लेखेजोखे समान है.

'पिताजी, क्या हुआ? आप ठीक तो हैं?'

'ठीक तो नहीं, अभी घर आया हूं, यह तो अच्छा रहा कि तुम फोन पर थीं, इसलिए तुम्हें बताना सब से पहले चाहा.'

'ऐसा क्या हुआ? बताएं?'

'तुम्हारे अपने ससुराल छोड़ने के बाद, अगले दिन तुम्हारे ससुर या यों कहें कि मेरे पुराने बिजनैस पार्टनर ने मेरी चाय में जहर डालने की नाकाम साजिश रची, वह तो वक्त



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रहते मुंशी ने पैंट्री वाले को कोई पुड़िया खोल कर डालते हुए रंगेहाथ पकड़ लिया और पुलिस के डर से उस ने तुम्हारे ससुर की सब के सामने पूरी पोल खोल दी. यह बात सुन कर मेरा माथा घूम गया.'

'पिताजी, वह तो अच्छा रहा कि समय रहते चीजें उजागर हो गईं, अगर आप को कुछ हो जाता तो?'

'वे तो मौका देख रहे थे कि जैसे ही तुम उन का घर छोड़तीं और उसी अगले पल मेरा यहां काम तमाम करवा देते. वैसे भी, उन्हें रिश्तेदार होने के नाते तुम्हारे भाई के अलग हो जाने की बात सालों से पता थी. उन का इस परिस्थिति में पूरी पार्टनरशिप हथियाना बहुत आसान काम था. तुम भी आक्रोशित थीं, मगर मेरे जिंदा न रहते हुए तुम उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थीं और आजीवन उन की यातनाएं सहने को मजबूर हो जातीं तो कुल मिला कर बेटी, दुनिया ऐसी ही है.'

'अभी वे कहां हैं?'

'जहां उन का पूरा खानदान होना चाहिए, जेल में. हमारे वकील द्वारा उन्हें मेरे कत्ल करने की साजिश और व्यापार में जालसाजी करने का केस दर्ज करा दिया गया है. तुम भी घर आ जाओ और अपना पहला केस अपने ही तलाक से शुरू करो,' पिता ने सुलझे हुए मन से कहा.

जिस घर में पैसों की खुशबू को औरतों की खुशियों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना जाने लगे तो देरसवेर किसी न किसी रूप में सर्वनाश होना तय है. झोंका उन के यहां भी आया, वे डगमगा भी गए, कुछ चीजें नहीं सुधर पाईं पर जिसे तबाही से बचाया जा सकता था, उसे संभालने में वे अब एकजुट हो गए.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अगली सुबह उस के जीवन का नया सूर्य उदय हुआ. वह अपने घर आ पहुंची. अपनों के भावपूर्ण स्वागत से उस के साथ जो भी घटा, वे बुरी यादें रह कर कहीं खो गया और उस की आगे की लड़ाई में उस के अपने, उस के साथ हमेशा खड़े मिले.

उस दिन से, सुलक्षणा अपने मातापिता के साथ रहने लगी, जो अब बखूबी समझ चुके थे कि यह घर उस का भी है.

उस ने अपने घर वालों के सकारात्मक बदलाव देखते हुए उन्हें माफ कर देने में समझदारी समझी. इस में ज्यादा गलती उन की भी नहीं थी. वे अच्छे संस्कार न मिलने के अभाव से सहीगलत का फैसला लेने में असक्षम थे.

उस ने सफलतापूर्वक अपने खुद के तलाक का मामला जीत लिया और ससुराल वालों पर अनेक धाराएं लगवा कर सहपरिवार जेल की हवा खाने को मजबूर कर दिया. आगे भी वह अपनी जैसी औरतों को इंसाफ दिलाने में अपने परिवार का नाम रोशन करती रही और उस के जीवन से प्राप्त सीख बाकी मातापिता, बेटियां उस की कहानी, सीख के तौर पर, औरों को बताते रहे.

देखा जाए तो सुलक्षणा कोई और नहीं, छोटेबड़े रूप में ऐसी कई औरतों की कहानी है.

मगर वे समाज में सदियों से चली आई रीति से लड़ कर अपने नारीत्व को और मजबूत करती चली आई हैं. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कहानी

# हनक

• सतीश सिंह

सुमन ने जब रिसैप्शन के सामने वाले सोफे पर चेटियार सर को देखा तो बरबस ही करीम को इशारा किया. चेटियार की कुरसी की हनक को देख सुमन के दिल का दर्द हरा हो गया और पुराने दिनों को याद करने लगा. क्या था पूरा मामला?

सुमन ने करीम से कहा, "अरे देखो तो रिसैप्शन के सामने वाले सोफे पर चेटियार साहब बैठे हुए हैं क्या?" करीम की नजदीक की नजर कमजोर थी और उस का चश्मा बाइफोकल नहीं था, इसलिए उस ने चश्मा निकाल कर सोफे की तरफ ध्यान से देखने के बाद कहा, "हां यार, चेटियार सर ही हैं, लेकिन उन के चेहरे पर न तो घमंड दिख रहा है और न

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ही पुरानी ठसक, बल्कि हार और उदासी दिखाई दे रही है.”

सुमन और करीम दोनों चेटियार सर के साथ लंबे समय तक काम कर चुके थे. दोनों उन के चेहरे के हर भाव को पढ़ सकते थे. सुमन भी करीम की बातों से सहमत लग रहा था.

करीम ने सुमन से आगे कहा, “क्या मिला जाए चेटियार सर से.”

सुमन ने कहा, “एकदम नहीं, ऐसे मक्कार, धूर्त्त, चालबाज और कमीने आदमी से मिलने के लिए कह रहे हो, जो बातबात पर हमें गालियां देता था, हर वक्त नीचा दिखाने की कोशिश करता था. तुम्हें तो याद ही होगा, हम ने इन की वजह से विभाग बदलवाने की कितनी कोशिश की थी, लेकिन अपने उद्देश्य को पाने में हम सफल नहीं हो

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

सके थे. सभी ने हमें सांत्वना दी थी, लेकिन किसी ने मदद नहीं की. सभी चेटियार सर से डरते थे."

एक सांस में ये सब बोलने के कारण सुमन का गला सूख गया तो उस ने थूक से गले को तर करने के बाद आगे कहा, "चेटियार सर के सामने से अभीअभी गुजरने वाले कई लोगों को मैं जानता हूं, जिन्होंने उन के साथ काम किया था, लेकिन उन के कमीनेपन की वजह से वे उन की अनदेखी कर रहे हैं."

ऐसा नहीं था कि चेटियार सर अपने पुराने सहकर्मियों को नहीं देख रहे थे, लेकिन लगता है कि उन के मन में भी डर हावी था, क्योंकि अब वे बैंक के चेयरमैन नहीं थे और वे अपनी काली करतूतों से भी वाकिफ थे, इसलिए कहीं न कहीं उन के मन में भी इस बात का डर था कि कहीं कोई उन की बेइज्जती न कर दे.

सुमन ने आगे कहा, "खुदगर्ज इनसानों की औकात कुरसी से उतरने के बाद कुत्ते से भी बदतर हो जाती है, इस सच को भोगते हुए मैं ने कई लोगों को देखा है. हो सकता है, चेटियार सर भी अब इस दौर से गुजर रहे हों, क्योंकि वे तो कमीनों के बाप थे."

करीम ने प्रयुत्तर में कहा, "चेटियार सर को ही क्यों गालियां दे रहे हो? आजकल हमारे बैंक में अधिकांश शीर्ष प्रबंधक अपने मातहतों से कहां सीधेमुंह बात करते हैं, सभी गालीगलौज और डंडे के बलबूते अपना काम करवाना चाहते हैं, ताकि बिना प्रतिरोध के उन के मातहत गलत काम करने से मना न करें. हालांकि प्यार से भी काम करवाया जा सकता है. लेकिन भ्रष्टाचार के दलदल में आकंठ डूबे अधिकांश शीर्ष कार्यपालक काम करवाने के लिए गुंडों व बदमाशों की तरह आतंक और खौफ का रास्ता अख्तियार करते हैं, ताकि वे नीचे वालों को मार कर या उन की जिंदगी को तबाह कर के पैसे और प्रमोशन पाते रहें."

सुमन ने कहा, "ठीक ही कह रहे हो तुम, लेकिन कुरसी की हनक में वे भूल जाते हैं, उन की कुरसी स्थायी नहीं है, एक दिन उस का जाना तय है. जब सेवानिवृत्त होंगे, फिर क्या करेंगे, यह सोचने की कोई कोशिश नहीं करता है. ऐसे ही लोगों का बुढ़ापा खराब होता है. दरअसल उन के पुराने व्यवहार व स्वभाव के कारण सेवानिवृत्ति के बाद हर कोई उन्हें दुत्कारता है, कहींकहीं लतिया भी दिए जाते हैं ऐसे लोग."

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

करीम ने कहा, "सहमत हूं, मैं ने सुना है कि चेटियार सर की माली हालत आजकल बहुत ज्यादा खराब है. मुझे लगता है कि ये आज यहां दवाएं लेने के लिए आए हैं, मैडिकल डिपार्टमैंट पैंशनरों को फ्री में दवा मुहैया कराता है, साथ ही, डाक्टरों का कंसल्टेशन भी यहां फ्री मिल जाता है. तुम भी जानते हो, बैंकर को पैंशन, राज्य या केंद्र सरकार के कर्मचारियों की तुलना में बहुत ही कम

*पावर मिलते ही लोगों का नजरिया बदलने क्यों लगता है, चेटियार जैसे लोग क्या माफी के लायक हैं?*

***समाज की तसवीर पेश करती कहानी सिर्फ सरिता में.***



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मिलती है, इस कारण इन का गुजारा बमुश्किल हो पा रहा है, बेटा बेरोजगार है, बेटी का तलाक हो गया है. कभी ये मर्सिडीज में घूमते थे, आज रिकशे पर जाने के लिए मजबूर हैं. सुना है, अब ये अपनी गलतियों के लिए रोज अफसोस जताते हैं, 'ऊपर वाले' से माफी मांगते हैं."

सुमन ने कहा, "लेकिन, क्या ईश्वर, यदि कहीं है, को ऐसे कुकर्मियों को माफ करना चाहिए?"

"नहीं, एकदम नहीं," करीम ने कहा.

सुमन ने फिर कहा, "पता नहीं क्यों, आज अधिकांश इंसान जानवर बनना पसंद कर रहे हैं. ऐसे लोगों को अपने कुकर्मों पर कभी पछतावा नहीं होता है. लेकिन जैसे ही पैसे और पावर उन के हाथों से रेत की मानिंद फिसलने लगते हैं, वैसे ही, वे सीधेसादे और ईमानदार बन जाते हैं और यह भी अपेक्षा करने लगते हैं कि सभी लोग उन्हें माफ कर देंगे और इज्जत से नवाजेंगे."

करीम ने कहा, "ऐसे लोगों के कुकर्मों का घड़ा इतना ज्यादा भर चुका होता है कि बाद में किया गया कोई अच्छा काम भी उन के कुकर्मों की भरपाई नहीं कर पाता."

थोड़ी देर में रिसैप्शन पर भीड़ कम हुई तो चेटियार सर ने रिसैप्शनिस्ट से एंट्री पास बनाने के लिए कहा. बातचीत के दौरान बड़े विनीत लग रहे थे वे.

यह देख कर सुमन ने कहा, "सचमुच, बड़े से बड़े हिटलर भी समय के सामने विवश हो जाते हैं. लेकिन क्या विनीत या निरीह बनने से ऐसे लोगों की सजा पूरी हो जाती है, कतई नहीं. ऐसे लोगों को फांसी की सजा भी दी जाए तो कम है, क्योंकि ऐसे लोग हमारे समाज में बिना खून बहाए रोज कत्ल कर रहे हैं." ●


सरस सलिल
पाक्षिक पत्रिका
हर पखवारे पढ़िए
संपादकीय गहरी पैठ — हर खबर पर पैनी नजर.
राजनीति — शासकों और नेताओं का सूरतेहाल.
समाज — घर और रिश्तों को सुधारें. दिखाए रिश्तों का आईना.
अंधविश्वास — पोंगापंथी नहीं समझदारी.
सेहत/सैक्स — अच्छी सेहत के खोले छिपे राज.
फिल्म — परदे के पीछे व आगे की चटपटी बातें.
सब्सक्रिप्शन के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करें.
एजेंट से खरीदें या ग्राहक बनें :
subscription@delhipress.in
मो. नं. : 8588843408
औनलाइन पढ़ें : sarassalil.in


More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

व्यंग्य

# सर जी मी टू

• अशोक गौतम

मैं अपना बोरियाबिस्तर बांध आप के चार्टर यान की राह में पलकें बिछाए तैयार बैठा हूं, हे असंतुष्टों के नाथ, मैं आप के करकमलों द्वारा अपने गले में इज्जत का पट्टा डलवाने को बेकरार हूं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हे अपनों से असंतुष्टों को होटलहोटल छिपालिटा संतुष्टि का अमरत्व पिलाने वालो, हे अपनों से असंतुष्टों को एक से एक रिजौर्टों में घुमातेघुमाते सत्ता वालों को सत्ता में होते हुए भी चक्करघिन्नी की तरह घुमाने वालो, ईएनडीए वालो, हे इंडिया ब्लौक वालो, आप जी सचमुच महान हो. असंतुष्टों की असंतुष्टि का पलक झपकते इस्तेमाल करने में आप महाप्राण हो. जहां भी हम असंतुष्ट आप को जरा सा भी रोतेबिलखते दिखते हैं, वहीं आप हमारा उद्धार करने के लिए नंगे पांव दौड़े आते हो और हमें चार्टर यान में उठा छूमंतर हो जाते हो. आप की कृपामयी नजरों से किसी भी पार्टी का कोई भी असंतुष्ट आज तक बच नहीं पाया. कहीं भी, जो भी जरा सा भी आप को असंतुष्ट दिखा, उस को आप ने चूहे की तरह बाज हो कर उठाया. आप हर पार्टी के असंतुष्टों के मोक्षद्वार हो. आप हम असंतुष्टों के गले का कागजी फूलों के हार हो. आप जो हम असंतुष्टों को संतुष्ट करने का पुण्य कार्य कर रहे हो, वह स्वर्गिक है, हम स्वर्गीय हैं.

मुझे भी आप को यह सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि आप ने उन के तो सारे

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

असंतुष्टों को संतुष्ट करने का सौभाग्य प्राप्त कर पुण्य प्राप्त कर लिया पर एक असंतुष्ट अभी भी आप की पैनी नजरों में नहीं आया है. उस पर हर कोण से असंतुष्टि की काली छाया है और वह घरजला असंतुष्ट और कोई नहीं, मैं हूं सर जी.

प्लीज, इस असंतुष्ट पर भी अपनी कृपादृष्टि डाल इस का जीवन भी धन्य कीजिए, प्रभु. मैं आप के पास बिकने, आप से लिपटने को अपना बोरियाबिस्तर बांध तैयार बैठा हूं यह जानते हुए भी आदमी चाहे कितने का भी बिके, बिकने के बाद उस की इज्जत दो कौड़ी की भी नहीं रहती. सर जी,

इज्जत को मारो गोली. इज्जत से संतुष्टि नहीं मिला करती. मैं संतुष्ट होना चाहता हूं वह भी फुल्ली का फुल्ली. इज्जत का अचार डालतेडालते बहुत थक गया हूं. अब मैं भी आप के चरणों में लोट रिजौर्टरिजौर्ट मस्ती कर संतुष्टि का परम सुरापान करना चाहता हूं. घर की हैसियत मुताबिक मिलने पर भी घर के दुखिया को जीभर कोस आप का गुणगान करना चाहता हूं. मैं भी अपने घर से बागी होना चाहता हूं. अपनी संतुष्टि के लिए बुढ़ापे में दागी होना चाहता हूं.

अपने घर के प्रति वफादार हो कर आखिर मुझे भी क्या मिला? ठेंगा. जिस घर में रहते हुए जीव को उस का मनवांछित पद न मिले उस घर और पार्टी को तुरंत त्याग देना चाहिए. ऐसा जनता को समर्पित जनसेवकों को करते बहुत देखा है.

जिस तरह आप ने उन के असंतुष्टों पर अपनी फुल कृपा बरसाई है, उसी तरह मुझ पर भी अपनी कृपा बरसाइए, प्लीज, ताकि मैं भी असंतुष्ट से संतुष्ट हो सकूं. चातक से भाटक हो सकूं. अपने घर के लिए आप से अधिक घातक हो सकूं. यह दीगर है कि 2 टांगधारी जीव कभी संतुष्ट नहीं होता. उसे चाहे संतुष्टि के समुद्र में ही सारी उम्र डुबो कर क्यों न रखो. समुद्र से बाहर निकलते ही वह फिर असंतुष्ट हो जाता है.

हे असंतुष्टों को संतुष्टि प्रदान करने वाले दाताजी-प्रदाताजी, मैं भी जनाबों की तरह अपने घर की रूखीसूखी रोटियां खातेखाते बोर हो गया हूं. घर में किसी रोज जो मुरगा परोसा जाता है तो लगता है ज्यों केवल मुझे आलू खिलाए जा रहे हों. मुझे खिलाए जाने वाले मुरगे से अब सड़े आलू की बास आती है. घर में रात को सोते हुए जब मुझे दूध पिलाया जाता है तो लगता है, मुझे दूध नहीं, विष पिलाया जा रहा हो जैसे.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

घर की रोटियां खाने से अब मेरा पेट भी खराब रहने लगा है. अपने घर में रहते मेरी सेहत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है. मत पूछो इस घर में रहते मुझ में कितनी वीकनैस आ गई है? आई फील कि घर का सदस्य होने के बाद भी जैसे घर में मेरी कोई पूछ नहीं. भाईसाहब, हम घर से ले कर सभा तक राजनीति किसलिए करते हैं? घर और जनता की सेवा के लिए? न भाईसाहब न, हम तो अपनी संतुष्टि के लिए घरसेवा-जनसेवा के अखाड़े में उतरते हैं. हमारे लिए अपनी संतुष्टि जरूरी है. घर जाए भाड़ में. भाईसाहब, हम तो चौबीसों घंटे एकदूसरे के वो गले लगने वाले हैं जो अपने अहं की तुष्टि के लिए दिल्ली तक ढहा सकते हैं. फिर ये तो...

अब आप को कैसे बताऊं, आह, मेरा मेरे घर में कितना दम घुट रहा है? आप



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कहोगे कि यह नहीं हो सकता. घर तो घर होता है. मैं झूठ बोल रहा हूं. अच्छा तो एक बात बताओ, आदमी अपनों के साथ क्यों रहता है? टुन्न रहने के लिए. जहां टन्नता नहीं, टुन्नता नहीं, वहां दूसरा घर चुनना सोलह आने सही.

बंधुवर, मुझे अब मेरे ही घर में सांस लेने में ठीक उन जैसी ही कठिनाई हो रही है. मुझे भी अब लगने लगा है ज्यों मेरे घर में मेरे हिस्से की औक्सीजन खत्म हो रही हो या कि मेरे हिस्से की औक्सीजन कोई और अपने नाक में घुसाए बैठा हो.

अब मैं अपने घरवालों से कैसे पूछूं कि भाईसाहब, हम भी तो तुम्हारी तरह इसी घर के सदस्य हैं कि नहीं? इसलिए हमें भी मनमाफिक खानेनहाने के मौके दो. यह तो कोई बात नहीं होती कि खुद हमाम में सारा दिन नहाते रहो और हमें नहाने को लोटा भी नहीं. ऐसे में मुझे लगता है जब मेरे घर में मेरी कोई इज्जत नहीं तो दूसरों के घर का झंडा अपनी छाती पर सजाने में शर्म कैसी?

साहबजी, मुझे लगता है कि जैसे मेरी आवाज को मेरे ही घर में मेरे ही घरवालों द्वारा दबाया जा रहा है. मुझे लगता है जैसे मेरे ही घर में मेरी हर बात को अनसुना किया जा रहा है. मेरे ही घर में न कोई मुझे अपने ढंग से खाने देता है, न पीने. मुझे लगता है जैसे बातबात पर मुझे रील किया जाता है.

इस सब से तंग आ कर सच कहूं तो अब मेरा मन किसी और की मुंडेर पर इतराने को फड़फड़ा रहा है. आप बहुत नेक बंदे हो, जी. आप ने असंतुष्टों को संतुष्टि का मार्ग दिखाया है. उन्हें अपने गले लगाया है. आप ने असंतुष्टों को

संतुष्टि का गजब का घोटा पिलाया है. यह जनता क्या कह रही है? जो अपने ही घर में संतुष्ट नहीं हुए वे दूसरे के घर में क्या खाक संतुष्ट होंगे. यह जनता भी न, पता नहीं, समझदार क्यों हो रही है?

अहा, आप का असंतुष्टों के प्रति सेवाभाव देख मेरा ग्रीडी मन आप के चरणों में गिड़गिड़ाने को लचक रहा है तो मैं आप से मिलने कहां आऊं? या आप मुझ से जितनी जल्दी हो सके, संपर्क कीजिए, प्लीज. इस घर की असंतुष्टि अब मुझ से और सहन नहीं हो रही है, प्रभु. मैं अपना बोरियाबिस्तर बांध आप के चार्टर यान की राह में पलकें बिछाए तैयार बैठा हूं तो मुझ असंतुष्ट को लेने कब आ रहे हो, हे असंतुष्टों के नाथ, मैं आप के करकमलों द्वारा अपने गले में इज्जत का पट्टा डलवाने को, मत पूछो कितना, बेकरार हूं. ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कहानी

# अधपकी रोटियां

• सुमन शर्मा

उम्र के इस ढलते पड़ाव पर सुंदर ने अपने हाथों से पहली बार गैसस्टोव पर बनी गोलगोल, फूलीफूली रोटियां केसरौल में रख दीं. लेकिन सुंदर की उम्मीदों पर तब घड़ों पानी पड़ गया जब उन रोटियों को शकुन ने खाने से इनकार कर दिया.

अभी शाम के 7 भी न बजे थे. सुंदर ने अंदाजा लगाया कि शकुन को आने में एक घंटा तो लगेगा ही.

उस की खुशी का कोई ठिकाना न था. जिस काम को वह अपनी पहुंच से बाहर समझता था, उस ने 75 साल की उम्र में कर दिखाया था. अपने अंगूठे और उंगली को झुलसने से बचाते हुए सुंदर ने अपनी सफलता की प्रतीक रोटी को गैसस्टोव की आग से उठाया और बड़े चाव से केसरौल में डाल दिया. रोटी चौदहवीं के चांद जैसी चमचमा रही थी. उस ने स्टोव की नीली लपटों में रोटी को क्षणभर के लिए गुब्बारे की तरह फूलते देखा था. फिर फूली हुई रोटी ऐसे बैठ गई थी जैसे मन की कोई मुराद पूरी होने पर दिल को तसल्ली मिलती है.

पास पड़े हुए डब्बे में से सुंदर ने चम्मच से गाय के दूध से बना देशी घी निकाला और रोटी पर अच्छी तरह चुपड़ दिया. फिर उस ने दूसरी रोटी बनाई, फिर तीसरी और चौथी. सारी की सारी गोल, फूली हुई और घी की सही मात्रा से चुपड़ी हुईं. 2 रोटी शकुन के लिए और 2 रोटी अपने लिए. इतनी काफी थीं. उस ने स्टोव बुझा दिया. रोटियों को पोने में लपेट कर उस ने केसरौल में डाला और ढक्कन से बंद कर दिया. फिर तवा, चकलाबेलन और दूसरे

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

छोटेमोटे बरतनों को धोधा कर सूखने के लिए प्लास्टिक की बास्केट में रखा.

रसोई साफ करने में उसे तकरीबन 5–7 मिनट लगे होंगे. आश्वस्त हो कर वह बैडरूम में चला आया और आराम कुरसी पर शान से बैठ कर टीवी में 'आजतक' चैनल देखने लगा. किंतु उस का मन पराए देशों और उन में रहने वाले अनजान लोगों की खबरों में नहीं लग सका. उस ने तो स्वयं खबर रच डाली थी. कितनी ही नाकाम कोशिशों के बाद और अपने अडिग मनोबल के रहते उस ने सीख लिया था कि आटा कैसे गूंधा जाए, चकलाबेलन की मदद से रोटी को गोल शक्ल कैसे दी जाए, ऐसा क्या करें कि गूंधा हुआ आटा न तो उंगलियों से चिपके और न ही चकले और न तवे से. सब से महत्त्वपूर्ण बात उस ने यह सीखी कि अधपकी रोटी को कब आग की लपटों में सेंका जाए कि वह गुब्बारे जैसी फूल सके.

'75 साल के ऐसे कितने आदमी होंगे जिन्हें इतनी कामयाबी मिली हो?' सुंदर ने अपनेआप से पूछा. 'शायद ही कोई हो,' उस ने स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर दिया. यह ऐसी सफलता थी जिसे वह हर किसी को बताना चाहता था.

पर बताता किसे? उस के करीबी दोस्त एकएक कर के चल बसे थे. हाउसिंग सोसाइटी के लोगों से उस की,

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बस, दुआसलाम ही थी. पड़ोस के पार्क में वह सुबहशाम सैर के लिए जाता था जरूर पर बात किसी से न होती थी.

'या सैर करो या बातें,' यह उस का फंडा था.

नातेरिश्तेदारी में उस का मिलनाजुलना या तो शादीब्याह में होता था या कहीं मातमदारी में. उस की बेटी आरणा पुणे में रहती थी. आरणा को अपने काम से फुरसत न थी. बेटा अरुणजय भी अपनेआप में मस्त था.

बेटी आरणा स्टार्टअप में उलझी थी तो बेटा जेएनयू में फिलोसफी पढ़ा रहा था. सुंदर को अंदेशा था कि अगर वह अपने बच्चों से, जो दोनों 40 की उम्र पार कर चुके थे, अपनी सफलता की बात भी करता तो वे उस की हंसी उड़ाते.

'खाना बाहर से मंगवा लेते पापा? ये सब करने की क्या आप की उम्र है?' आरणा कहती. 'आप कुछ ढंग का काम नहीं कर सकते, पापा?' अरुणजय अपनी फिलोसफी झाड़ता. लेकिन हां, उस की शकुन तो थी. वह उसे बताएगा कि उस के जैसी रोटी वह भी बना सकता है.

सुंदर शकुन का इंतजार इतनी बेताबी से करने लगा जितनी शायद किसी बच्चे को अपना अच्छे वाला रिपोर्ट कार्ड मां को दिखाने में भी न होती होगी.

एक शकुन ही थी, जिसे सुंदर इंप्रैस करने में लगा रहता पर शकुन आसानी से इंप्रैस होने वालों में से न थी. चाहे वह 5-6 साल पहले मदर स्कूल की प्राइमरी सैक्शन की इंचार्ज के पद से रिटायर हो चुकी थी, लेकिन अभी भी उसे हर चीज बिलकुल सही चाहिए थी. आटा हो तो एमपी सेहोर के शरबती गेहूं का, वह भी उस की आंखों के सामने पिसा हुआ. उन के यहां देशी घी केवल गाय के दूध से बना मदर डेयरी ब्रैंड का लाया जाएगा, किसी दूसरे ब्रैंड का नहीं. रात को सागसब्जी के साथ 2-2 रोटी खानी हैं, बस.

'इन्हीं सही आदतों के रहते हम दोनों अभी तक अपने पैरों पर खड़े हैं, नहीं तो कब के बिस्तर पर पड़े होते,' शकुन मौकेबेमौके सुंदर को याद दिलाती रहती.

सुंदर शकुन की समझदारी का कायल था. बस, उस की यही समस्या थी कि शकुन उसे भी हर वक्त, हर काम में सही देखना चाहती थी. वह उस के एक ही शब्द 'सुनो,' से घबरा जाता, जैसे उसे उस की बीवी ने नहीं, किसी थानेदार ने थाने में बुलाया हो. कहीं न कहीं जरूर उस से कोई भूल हुई है, तभी तो पेशी का समन आया है.

आज सुबह भी ऐसा ही कुछ हुआ था.

'सुनो,' शकुन की आवाज बाथरूम से आई. वह तब नहाधो कर आरामकुरसी पर बैठा 'आजतक' के चैनल पर इजराइल और हमास के युद्ध की ताजा खबरें देख रहा था. उसे शकुन का सामना करने में कुछ पल लग गए. अपने कूल्हों

*उम्रदराज पतिपत्नी अपनी उम्र के ढलते पड़ाव में भी एकदूसरे को कैसे नापेंतोलें, इस पर रोचक कहानी.*

***दांपत्य जीवन का सजीव चित्रण करती कहानियां सिर्फ सरिता में .***



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

पर हाथ टिकाए वह वाशबेसिन के नल के सामने सख्त अंदाज में खड़ी थी. नल से पानी की पतली सी धारा बह रही थी. शकुन उसे घूर रही थी और सुंदर अपराधी सा बना बहते पानी को देख रहा था. दोनों में से किसी ने भी नल को बंद करने का यत्न नहीं किया था.

'मैं तुम से सैकड़ों बार कह चुकी हूं,' शकुन के तीखे स्वरों की ऊर्जा से सुंदर हरकत में आया. उस ने नल बंद किया और फिर अपने कमरे की ओर जाने लगा. टीवी से उस के चहेते रिपोर्टर गौरव सावंत की आवाज आ रही थी.

'80 साल के होने जा रहे हो और अभी तक तुम में मैनर्स नाम की चीज नहीं है. यहां मैं बात कर रही हूं और लाटसाहब को टीवी देखने की पड़ी है. टीवी... टीवी... टीवी के सिवा कुछ नहीं. तुम्हारे पास इतना भी वक्त नहीं है कि देख सको बाथरूम का नल सही बंद हुआ भी है या नहीं.'

सुंदर मन मार कर इस प्रतीक्षा में खड़ा था कि कब शकुन उस पर अपनी बातों के बाणों का प्रहार रोके और कब वह वहां से जाए. वह अस्पष्ट शब्दों में अपनी सही उम्र के विषय में बुदबुदाया.

'सफल दुकान से जो तुम सेब खरीद कर लाए थे, वे टोकरी में पड़ेपड़े सड़ रहे हैं. खाने नहीं थे तो लाए ही क्यों? इस तरह क्यों पैसा बरबाद करते हो?'

'मैं ने सोचा कि तुम खाओगी.'

'जैसे तुम्हें मेरी परवा हो. कौन से तुम ने छीलकाट कर मुझे परोसे. कभी भी ऐसा किया तुम ने? अरे, मुझे छोड़ो. क्या तुम ने खुद अपने लिए काट कर खाए? अब तुम बच्चे तो हो नहीं कि मैं जबरदस्ती तुम्हारे मुंह में फल काटकाट कर डालूं. तुम्हारा ऐसा ही लापरवाह रवैया रहा तो एक दिन बीमार पड़ जाओगे. मुझ से सेवाटहल की उम्मीद मत रखना. मेरे पास और भी बहुत से काम हैं. धोबी कभी का प्रैस किए हुए परदे दे गया है. वे बालकनी में पड़े धूल चाट रहे हैं. मेरे घुटनों में दर्द न होता तो मैं खुद उन्हें टांग देती. तुम मेरे किसी काम के भी हो?'

बीते जीवन और वर्तमान के स्वर उस के कानों में पतझड़ में गिरते पत्तों से तैर रहे थे. एक बार खुद अपनी आवाज उस के कानों में पड़ी तो उसे आभास हुआ कि वह ऊंचे स्वर में अपनेआप से ही बातें कर रहा है.

'धोबी ने कल रात को ही तो परदे दिए थे. मैं उन्हें टांगने की सोच रहा था कि...'

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

'मुझ से फालतू की बहस मत करो, प्लीज. जाओ, जा कर टीवी देखो और तुम करोगे भी क्या?'

सुंदर अपने कमरे में चला आया. उसे शकुन की बातों पर गुस्सा तो आया पर वह अपने गुस्से को निकाल नहीं पाया. उस ने टीवी बंद कर दिया और चुपचाप उदासी के घेरे में आरामकुरसी पर बैठ गया. इन गुमसुम घड़ियों में उसे लगा कि वह सचमुच कितना अकेला है. उसे याद आया कि कभी वक्त था, जब इसी घर में कितनी चहलपहल रहती थी.

'जाओ, पंजाबी की दुकान से सौ ग्राम पनीर ले आओ. फ्रोजन मटर का एक पैकट भी लेते आना,' शकुन की आवाज ने जैसे उस के जख्मों पर मरहम लगा दी हो. यह उस का दोनों के बीच सुलह का संकेत था.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

सुंदर ने अपने खयालों में डूबे हुए ध्यान ही नहीं दिया था कि शकुन कब से उस की कुरसी की बगल में खड़ी थी. वह उठा और साइड टेबल पर पड़े वौलेट को जेब में डालते हुए बोला, 'कहो तो कुछ केलेवेले भी लेता आऊं?'

'मन है तो लेते आना. लेकिन दर्जनों नहीं. देख लेना कि केले कच्चे न हों और न ही ज्यादा पके हुए.'

सुंदर अभी दरवाजे तक ही पहुंचा था कि शकुन ने उसे आवाज दी, 'थैला लेते जाओ. दुकानदार अब चीजें ले जाने के लिए पन्नी नहीं देते.'

वह किचन में गया और शौपिंग बैग ले कर मार्केट की ओर चल दिया.

फुटपाथ पर चलतेचलते वह सोचने लगा कि क्या सचमुच यह शकुन उस की वही शकुंतला थी, जिस ने उसे एक नमस्कार ही से मोहित कर डाला था अपने मांबाप के ड्राइंगरूम में बैठेबैठे. वह शकुंतला और यह शकुन, दोनों में आधी शताब्दी का अंतर. कहां वह शर्मीली, कोमल, छुईमुई सी, उस की हर बात में हां में हां मिलाने वाली कमसिन बाला और कहां यह चेहरे से ही सख्त दिखने वाली अधेड़, जो उसे सही आदमी बनाने पर तुली थी. वह, जिसे उस की अपनी मां भी सीधे रास्ते पर न ला पाई थी.

इन दोनों के अलावा उस की एक और शकुन थी, वह शकुन जिसे समय की गति नहीं छू पाई थी. सुंदर की नजर में उस की चाल और रूपरंग वैसे के वैसे ही थे. उस के भरेभरे होंठों की लाली कायम थी. उस के रंगे केश अभी भी यौवन की चमक की याद दिलाते. फोन पर जब वह उस से बात करती तो उस के स्वर संतरे की खट्टीमीठी मिठास लिए होते. केवल उस का फिल्मी हीरोइन मुमताज जैसा तीखा, छोटी सी नाक इस बात का संकेत देती कि वह उन में से नहीं, जिन से कोई हीलहुज्जत करे और आसानी से बच निकले.

समय का चक्र भी कितना अजीब है, सुंदर को लगा. जब कोई आगे की सोचता है तो एक घंटा भी पहाड़ जैसा दिखता है और जब पीछे मुड़ कर देखता है तो दसियों साल पलक झपकते ही बीत गए प्रतीत होते हैं. वह पुरानी यादों में खो गया. शकुंतला से उस की शादी, पहले बेटी आरणा का जन्म और फिर बेटे अरुणजय का उम्र का वह कठिन दौर, जब गृहस्थी चलाने के लिए उन दोनों को छोटेबड़े समझौते करने पड़े. फिर देखते ही देखते बच्चे बड़े हो गए और उन्होंने दुनिया में अपनीअपनी जगह बना ली. बेटी आरणा की शादी एक वकील से हुई. वह आजकल स्वयं अपने स्टार्टअप में व्यस्त है. अरुणजय जेएनयू में फिलोसफी पढ़ा रहा है और बीवीबच्चों के साथ वहीं रहता है.

सुंदर ने मार्केट के कोने में खड़े फ्रूट वाले से 4 केले खरीदे और वापस घर की ओर चल पड़ा. यादों के चक्रव्यूह ने उसे फिर से घेर लिया. उन का छोटा सा घर हमेशा आवाजों से भरा रहता. भाईबहन की आएदिन छोटीछोटी बात पर लड़ाई, उस की बीमार मां की शिकायत कि किसी भी दवादारू से उन्हें आराम नहीं मिल रहा, शकुन का अकेले में फुसफुसाना कि स्कूल में अध्यापक कैसे एकदूसरे से लड़तेझगड़ते रहते हैं, आरणा और अरुणजय के दोस्तों का हुड़दंग मचाना, उस का बच्चों को डांटना और शकुन की शिकायत कि बाप होने पर भी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

न तो वह अच्छा मेजबान बन सका है और न ही उस ने सीखा है कि बच्चों से कैसा व्यवहार किया जाए. बीते जीवन और वर्तमान के स्वर उस के कानों में पतझड़ में गिरते पत्तों से तैर रहे थे. एक बार खुद अपनी आवाज उस के कानों में पड़ी तो उसे आभास हुआ कि वह ऊंचे स्वर में अपनेआप से ही बातें कर रहा है.

घंटी बजने पर शकुन ने तुरंत ही दरवाजा खोला, जैसे उस की राह देख रही हो. सुंदर ने थैले से केले निकाल कर डाइनिंग टेबल पर रख दिए. फिर उस ने थैले को लपेट कर किचन के ड्रायर में डाल दिया. शकुन उसे खड़ीखड़ी देखती रही. 'तुम पनीर और मटर नहीं लाए?' उस ने पूछा.

'सौरी, मैं भूल गया,' सुंदर को अपनी भूल पर खीझ हो रही थी.

'तुम खाना नहीं भूलते, टीवी में अपने चैनल नहीं भूलते पर जब मैं छोटा सा काम भी कहूं तो तुम भूल जाते हो. कल तुम कहोगे कि मैं तुम्हें भी भूल गया. अपने नाखून देखे हैं? एकएक जैसे पौकेट नाइफ हों. तुम वह शख्स हो जो सिर्फ अपने लिए जीता है. किसी दूसरे से तुम्हें कोई मतलब नहीं. पिछले महीने मेरा भाई मिलने आया था. तुम तब तक अपने कमरे से बाहर न निकले जब तक वह बेचारा वापस न जाने लगा.

'आरणा कहती है कि पापा कभीकभी अजीब सा व्यवहार करते हैं. मैं कहती हूं कि कभीकभी नहीं, तुम्हारी हर हरकत अजीब सी होती है. तुम्हारे दिमाग में फर्क आ गया है. जा कर किसी अच्छे डाक्टर को दिखाओ.'

'बहुत हो चुका,' सुंदर ने तल्खी से कहा, 'मैं ने अपनी भूल मान ली और तुम हो कि मुझे पागल ठहरा रही हो. मटर और पनीर का क्या है, मैं फिर जा कर ले आता हूं. 5 मिनट की तो बात है.'

'रहने दो, रहने दो. फ्रिज में आलूगोभी की सब्जी पड़ी है. रात के लिए काफी है. यह मेरे करम हैं कि दासी बन कर तुम्हारी सेवा करूं. वह तो मैं करती रहूंगी, जब तक मुझ में जान है. अब तुम अपने कमरे में जाओ. मैं तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखना चाहती. जाओ और जा कर टीवी देखो.'

जैसे ही सुंदर जाने के लिए मुड़ा, शकुन ने झुंझला कर केलों का गुच्छा उस के पीछे फेंका. केले सुंदर को तो नहीं लगे पर फर्श पर फच की आवाज से गिर कर पिचक गए. 'ये भी लेते जाओ. मुझे नहीं चाहिए. मैं भजनमंडली के कीर्तन में जा रही हूं. लौटने में 8 बज जाएंगे,' शकुन ने कहा और अपने कमरे में जा कर भड़ाक से दरवाजा बंद कर दिया. वह शायद

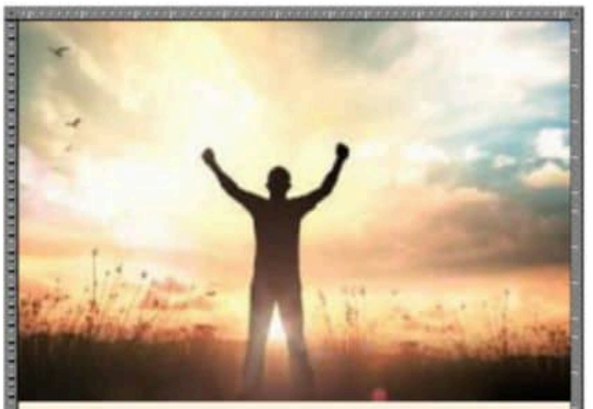

## योजना

*हमें उस जीवन को छोड़ देना चाहिए जिस के लिए हम ने योजना बनाई है, हमें उस जीवन के लिए तैयार रहना चाहिए जो हमारा इंतजार कर रहा है. –जोसेफ कैंपबैल*

सरिता

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बाहर जाने के लिए तैयार होने गई थी. खिन्न मन से सुंदर भी अपने कमरे में चला आया.

वह आरामकुरसी पर बैठा कुछ ऐसा करने की सोच रहा था कि शकुन की नजरों में अपना खोया सम्मान पा सके. माना कि वह स्वभाव से सख्त थी, किंतु अपनेआप को भी कहां बख्शती थी. सुबह 7 बजे उन दोनों की चाय बनाने से ले कर रात के साढ़े 9 बजे तक कुछ न कुछ करने में जुटी रहती. रात के साढ़े 9 बजे 1-2 घंटे के लिए वह टीवी पर अपने मनपसंद सीरियल देख कर सो जाती. सुंदर के लिए उस ने बस 2-3 काम रख छोड़े थे. मदर डेयरी से दूध लाना, मशीन से धुले कपड़ों को तार पर सूखने के लिए टांगना और कभीकभार बाजार से थोड़ाबहुत खरीद लाना. हां, गृहस्वामी होने के नाते उस से अपेक्षित था कि माह की शुरुआत में वह इतनी राशि का प्रबंध करे कि जिस से अगले महीने तक घर चल सके. इस कर्तव्य को वह अपनी पैंशन से बखूबी निभाता. शकुन अपनी पैंशन से शादीब्याह अथवा यात्रा के खर्च पूरे करती.

वैसे, सुंदर को भी चाह थी कि वह शकुन का हाथ बंटाए, घर में उपयोगी सिद्ध हो. चाय वह अच्छी बना लेता था. शकुन को भी उस के हाथों से बनी चाय पसंद थी. चावल बनाना तो उस के लिए चाय बनाने से भी आसान था. वह दालें भी बना लेता था, यद्यपि तड़का लगाने में उस से उन्नीसइक्कीस हो जाती थी. सब्जीभाजी अभी तक उस ने नहीं बनाई थी. जब वह कुछ बनाने के लिए रसोई में आता तो शकुन मुदित हो कर उसे देखती रहती.

'खाना बनाना सीख लो, तुम्हारे काम आएगा,' वह उसे लाड़ जता कर कहती.

शकुन से प्रोत्साहन पा कर सुंदर ने पाककला में अगला कदम उठाने की ठान ली थी और वह था रोटी बनाना. उस ने शुरुआत शुरू से की. आटा गूंधने की समस्या विकट थी. वह इसे साधने में एक बार नहीं, कई बार असफल रहा. कभी आटे में पानी ज्यादा और कभी उस की दसों उंगलियां चिपचिपे आटे से सनी हुईं.

शकुन उसे आटेपानी की सही मात्रा के गुर देती रहती पर जब जबानी बातों पर अमल करने की बात आती तो सुंदर से कहीं न कहीं चूक हो जाती. आखिर वह शुभ दिन आ ही गया जब सुंदर ने शकुन को सचमुच आटा गूंध कर दिखाया. अब वह रोटियां सेंकने के लिए मानसिक रूप से तैयार था.

More Newspapers and Magazines Telegram Channel Join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

तब उसे पता चला कि आटा गूंधने से ले कर रोटी सेंकने तक का सफर और भी कठिन है. आटे के पेड़े को चकले पर बेलतेबेलते उसे मिनटों लग जाते, फिर भी वह उसे गोल आकार न दे पाता. बहुत बार तो आटा चकले अथवा तवे से चिपक जाता. यहां तक तो उसे मंजूर था, लेकिन जब शकुन उस की जली हुई बेढंगी रोटियों का उपहास करती तो वह जलभुन कर रह जाता. फिर उस ने निश्चय कर लिया कि अगर रोटियां सेंकनी ही हैं तो तब जब शकुन घर में न हो. शकुन की अनुपस्थिति में सुंदर ने अपना प्रयास जारी रखा. आज के दिन सफलता उस के हाथ लग गई थी.

8 बजने में 10 मिनट थे जब दरवाजे की घंटी बजी. शकुन लौट आई थी. सुंदर ने ऐसा मुंह बनाया जैसे वह अब भी उस की लताड़ से आहत था. फर्श पर पिचके



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

हुए केले वैसे के वैसे ही पड़े थे. उन पर नजर डालते शकुन ने सुंदर पर चुटकी ली, "लगता है, तुम्हारी आंखें भी जवाब दे रही हैं?"

सुंदर अपने कारनामे पर आश्वस्त था. उस ने तमक कर कहा, "मुझे परवा नहीं."

शकुन उस से उलझने के मूड में नहीं थी. उस ने फर्श से केले उठाए और कूड़ेदान में डाल दिए.

सुंदर शकुन को किचन में ले जाना चाहता था.

"चाय पियोगी?" उस ने पूछा.

"यह चाय पीने का टाइम नहीं है," शकुन ने टका सा जवाब दिया. फिर वह अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए चली गई.

8 बजे के न्यूज बुलेटिन का समय हो रहा था. सुंदर भी अपने कमरे में आ कर टीवी देखने लगा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अभी 5 मिनट भी न हुए थे कि उसे शकुन की आवाज सुनाई दी, "सुनो," यह उस के लिए आज का दूसरा समन था. शकुन रसोई में अपनी परिचित मुद्रा में खड़ी थी. उस के हाथों में रोटियां थीं, वही रोटियां, जिन पर वह गर्वित था.

"ये रोटियां तुम्हीं ने सेंकी हैं?" शकुन ने ऐसे लहजे में पूछा, जैसे वह सुंदर को किसी अपराध के लिए दोषी ठहरा रही हो.

"हां, मैं ने, फिर?" आज सुंदर उस की धौंस में आने वाला नहीं था.

"क्यों, किस लिए?"

"खाने के लिए. मेरा मतलब है, हम दोनों के खाने के लिए."

"तुम ने बनाई हैं, तुम ही खाना. मुझे रहने दो. इन रोटियों को तो जानवर भी न खाएं."

सुंदर का आत्मविश्वास डगमगा रहा था. उस ने बदले हुए स्वर में पूछा, "क्यों, इन में क्या खराबी है? सिंकीसिंकाई तो हैं. मैं ने एकएक को स्टोव पर गुब्बारे की तरह फुलाया है."

"क्या तुम ने रोटियों को दूसरी ओर से सेंका? चारों की चारों कच्ची हैं. खुद देख लो."

सुंदर ने रोटियों पर एक नजर डाली. वे अधपकी रह गई थीं. ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

*सरिता*, बीस साल पहले,
जून (प्रथम) 2004

# मेरी खुशी

• सर्वेश वार्ष्णेय

पूर्णिमा और रोहित को पीड़ा पहुंचा कर उसे सुख का अनुभव होने लगा था. उन का कष्ट देख कर उस का बेबस जीवन संतुष्टि पाने लगा था. लेकिन क्या यही थी उस की खुशी?

छत वाले कमरे से आती सिसकियों की हलकीहलकी आवाजें मुझे बेचैन कर रही थीं. घर में पसरा सन्नाटा डरा रहा था. बदहवास सा मैं बारबार अपनी व्हीलचेयर इधर से उधर पूरे कमरे में घुमा रहा था. एकांत में, घर के पिछवाड़े की तरफ बना यह कमरा ही मेरी संपूर्ण दुनिया था.

सामान के नाम पर कोने में पड़ा लकड़ी का तख्त, पुराना बिस्तर व मेज पर बिखरी पड़ी पत्रिकाएं ही मेरी दौलत थीं. यों समझिए कि पत्रिकाएं ही मेरी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

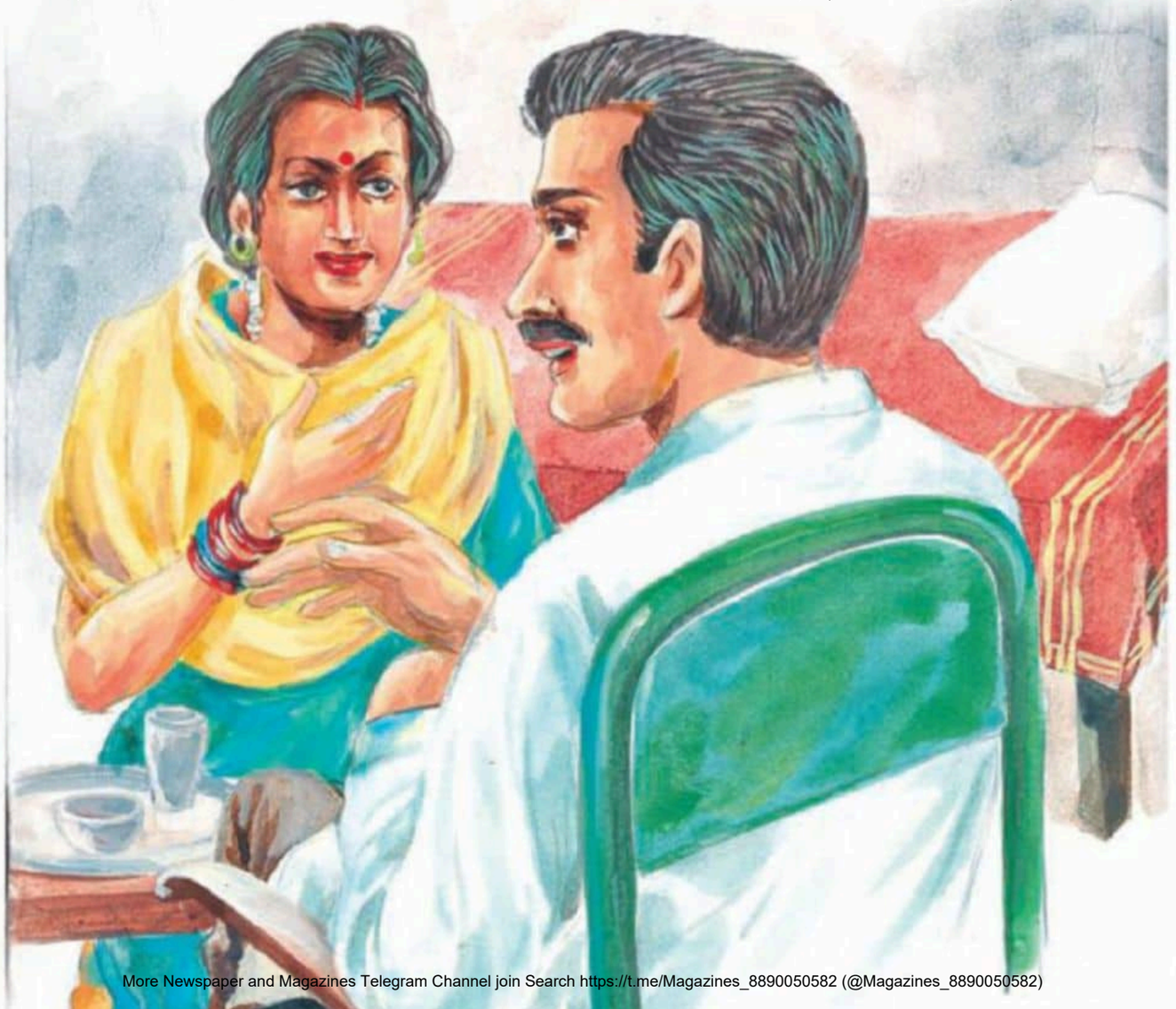

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

जिंदगी, मनोरंजन, जीवनसाथी थीं, फिर भी मैं अकेला था क्योंकि मुझ से मिलने कभी कोई नहीं आता था. महल्ले वाले भी मुझे भूल चुके थे.

पत्रिकाओं से मन भर जाता तो मैं दीवारों पर चिपकी छिपकलियों को घूरने लगता. वे भी सिर उठा कर मेरी तरफ देखती रहतीं.

दरवाजे पर हलकी सी आहट के साथ परदा हटा कर पूर्णिमा अंदर दाखिल हुई और चुपचाप मेज पर चाय का प्याला रख कर चली गई. मैं ने चोर नजरों से उस के गालों पर आंसुओं की सूखी लकीरें देख ली थीं, मैं उस से रोने का कारण नहीं पूछ पाया. उसे ऊपर से नीचे आने में बहुत परेशानी होती होगी. वह गर्भावस्था में थी. 5वां महीना चल रहा था.

व्हीलचेयर खिसका कर मैं ने मेज के पास कर ली और धीरेधीरे चाय के घूंट लेने लगा. तभी ऊपर से पूर्णिमा की तेजतेज आवाज सुनाई पड़ी. मैं समझ गया, रोहित आ चुका है. पूर्णिमा किसी बात को ले कर नाराज है, तभी तो पूरे दिन रोती रही है.

"मैं कीड़ेमकोड़े जैसे घिनौने इस जीव को और अधिक बरदाश्त नहीं कर पाऊंगी," उस का स्वर मुझे गगनभेदी तोप के समान लग रहा था. तभी चटाक की आवाज आई. मैं समझ गया, रोहित ने गुस्से में बौखला कर कोई वस्तु उठा कर दीवार पर दे मारी होगी या हो सकता है पूर्णिमा के गाल पर तमाचा जड़ दिया हो.

पूर्णिमा जोर से रो पड़ी थी, रोहित चिल्ला रहा था, "जिसे तुम कीड़ामकोड़ा कह रही हो वह मेरा बड़ा भाई है. जानती हो, बड़ा भाई मातापिता के समान होता है."

मैं सन्न रह गया. मतलब साफ था, पतिपत्नी दोनों मेरी वजह से लड़झगड़ रहे थे. मेरा मन दुखी हो उठा. मेरा छोटा भाई, मेरी वजह से कितना परेशान है. उसे पत्नी की झिड़कियां खानी पड़ रही हैं पर यह सोच कर संतुष्टि भी हुई कि वह मुझे कितना अधिक प्रेम करता है. उस पर पत्नी की जलीकटी का असर भी नहीं पड़ता.

पूर्णिमा का स्वर फिर सुनाई नहीं दिया. पति के सामने और अधिक बोलने की उस की हिम्मत न हुई होगी. सन्नाटा फिर से पसर गया. मैं ने खिडकी के रास्ते, आंगन में उतर आए अंधेरे पर नजरें गड़ा दीं.

दरवाजे पर फिर से आहट हुई. रोहित का स्वर सुनाई पड़ा, "दादा, अंधेरे में बैठे हो," कहते हुए उस ने बिजली का बटन दबा कर रोशनी की.

मैं कहना चाहता था कि मुझे अंधेरे से कोई फर्क नहीं पड़ता. जब मेरे मन में ही अंधेरा भर चुका है तो बाहर के अंधेरे से कैसा डर.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रोहित के हाथों में कई तरह की पत्रिकाएं थीं जिन्हें मेज पर रख कर उस ने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मेरे मन के भाव पढ़ने का प्रयास कर रहा हो, परंतु मैं ने उसे यह जाहिर नहीं होने दिया कि मैं उस की व पूर्णिमा की बातें सुन चुका हूं.

"इतना खर्च करने की क्या आवश्यकता थी, पहले ही कई पत्रिकाएं पड़ी हैं," मैं ने कहा.

"दादा, खर्च की चिंता मत किया करो," कहता हुआ रोहित तख्त के कोने पर बैठ कर कमरे में नजरें घुमाने लगा. कमरे में झाड़ूपोंछा लगे हफ्तों बीत जाते थे. कोने में पड़ा मैले कपड़ों का बेतरतीब सा जमावड़ा मुंह चिढ़ाता नजर आता था. रोहित फिर बोला, "दादा, सोचता हूं, तुम्हारे लिए रंगीन टीवी लगवा दूं. आजकल कई तरह के चैनल आने लगे हैं, तुम्हारा मन लग जाया करेगा."



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रोहित के स्वर के खोखलेपन से मैं अच्छी तरह परिचित था. प्राइवेट नौकरी में साधारण सा वेतनभोगी, 3 प्राणियों के लिए दो वक्त का भोजन जुटा ले तो ही गनीमत थी. मैं ने हंस कर उसे यह जताने का प्रयास किया कि मैं बहुत खुश हूं. मुझे किसी प्रकार की चिंता नहीं है. मैं बोला, "मुझे टीवी देखना अच्छा नहीं लगता, पत्रिकाओं का शौक जरूर है."

कुछ देर बैठ कर वह चला गया. फिर आ कर भोजन की थाली रख गया. 1 कटोरी दाल, 1 हरीमिर्च, प्याज का छोटा सा टुकड़ा और 4 फुलके बिना घी चुपड़े. रूखासूखा बेस्वाद खाना परंतु वे दोनों पतिपत्नी भी तो यही खाते थे. तीनों का भोजन एकसाथ पकता था. खापी कर थाली जमीन पर खिसका कर मैं पत्रिकाओं की तरफ झपट पड़ा और एकएक कर के सभी के पृष्ठ पलटने लगा.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

एक पत्रिका में मेरी कहानी छपी थी. मैं ने खुश हो कर रोहित को पुकारा.

कुछ घबराया सा वह दौड़ता हुआ आया और बोला, "क्या हुआ दादा?"

"देख ले अपनी आंखों से पढ़ कर, मेरी कहानी छपी है. तेरे दादा का नाम छपा है. तेरा दादा लेखक बन गया. साहित्यकार बन गया."

"अरे, हां दादा," देखता हुआ रोहित प्रसन्नता के आवेग से भर उठा.

"तू सही कहता था न कि इंसान जो चाहे बन सकता है, मैं बन गया साहित्यकार," कहते मेरी आवाज खुशी से कांप उठी थी. उस क्षण मैं भूल गया कि मैं अपाहिज हूं, मेरे दोनों पैर पोलियो के कारण बेकार हो चुके हैं और मैं जमीन पर घिसट कर अपने दैनिक कार्य निबटाता हूं. दीवारों पर लगी खूंटियों के सहारे, दोनों हाथों पर पूरा जोर लगा कर कमोड तक पहुंचता हूं. जमीन से एक बालिश्त की ऊंचाई पर लगी टोंटी के पानी से नहाताधोता हूं.

उत्तेजना से मेरी सांस फूल रही थी. रोहित चला गया. पूर्णिमा उस का इंतजार कर रही होगी क्योंकि यह वक्त उसे पत्नी के साथ बिताना था.

मैं पत्रिका को कलेजे से चिपकाए, वर्षों पूर्व मरे पिता को याद करता रहा कि बाबूजी जीवित होते तो मेरी कहानी देख कर कितना खुश होते. वे मुझे बहुतकुछ बनाना चाहते थे. हमेशा मुझे प्रोत्साहन देते रहते. उन्होंने कितनी कठिनाई से दिनरात एक कर के मुझे इंटर तक पढ़ाया था.

मेरी आंखों के आगे अपना बचपन तैर गया. कितना डरपोक था मैं, चूहे की भांति अपने बिल में छिपा रहता. साथी मेरे पैरों का मजाक उड़ाते तो मैं छिपछिप कर रोता. आत्महत्या करने की सोचता. हीनभावना मेरे रोमरोम में समाई हुई थी. बड़े होने पर भी मेरा स्वभाव बचपन वाला ही बना रहा.

सुबह रोजाना की तरह पूर्णिमा पहले चाय, फिर खाना दे गई. रोहित को नौकरी पर जाने की जल्दी रहती थी.

पूर्णिमा जूठे बरतन लेने आई तो मैं खुद को न रोक पाया और बोला, "मेरी कहानी पढ़ी?"

*जेठ के प्रति पूर्णिमा के मन में यह कैसा परिवर्तन था?*
***रिश्तों की उथलपुथल से मन को झिंझोड़ती कहानी पढ़िए सिर्फ सरिता में.***



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

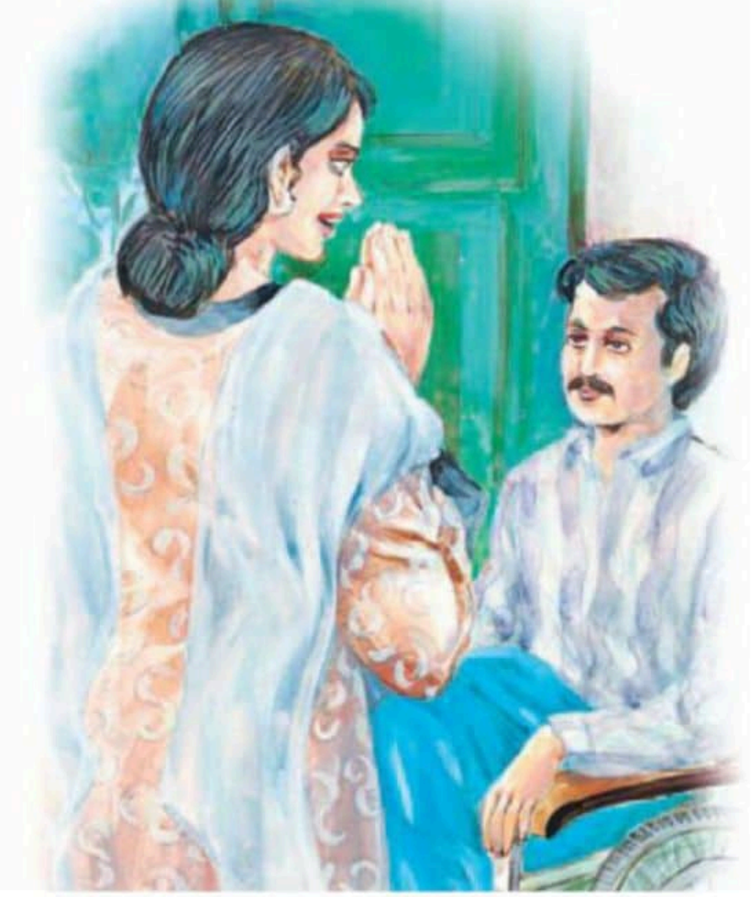

‘‘मैं जानती थी कि आप अंदर होंगे, इसीलिए मैं बाहर से ताला बंद होने के बावजूद खड़ी थी,’’ वाणी ने नमस्ते करते हुए कहा.

“हां,” उस का वही सपाट, भावहीन उत्तर.

“कब?” मैं चौंका.

“शाम को, जब वे पत्रिकाएं ले कर आए थे,” कह कर वह चली गई.

मेरा मुंह हैरानी से खुला रह गया कि इसे मेरे लेखक बनने की जरा भी खुशी नहीं हुई. मैं ने सुना वह पड़ोसिन से कह रही थी, ‘एक कहानी छपते ही इन का दिमाग आसमान पर चढ़ गया. खुद को मुंशी प्रेमचंद समझने लगे. ऐसी घटिया कहानी पर फिल्म बनने की कल्पनाएं कर रहे होंगे.’

पूर्णिमा का व्यंग्य मेरे सीने में नश्तर बन कर चुभ गया. पड़ोसिन का उत्तर मैं सुन नहीं पाया पर पूर्णिमा के प्रति मेरे मन में अथाह नफरत पैदा हो चुकी थी. रोहित इस औरत को सिर पर न चढ़ा कर उचित करता है.

मेरे गुस्से ने आग से निकले शोले की भांति भभक कर रोहित के आने के वक्त तक पूर्णिमा को सताने के लिए कमर कस ली थी.

रोहित जब शाम को भोजन की थाली रखने आया तो मैं ऊंचे स्वर में बोल उठा, “मैं कब तक इस गंदगी में रहूंगा? कितनी गंदगी है मेरे कमरे में, तेरी बहू के बस का कुछ करनाधरना नहीं है. तू मेरे लिए नौकरानी का प्रबंध कर दे.”

रोहित ने आश्चर्य से मेरी तरफ ताका. उसे मुझ से ऐसे शब्दों की उम्मीद नहीं थी.

मैं और अधिक कठोर बन गया, “जानते थे तू मेरी ठीक से देखभाल नहीं कर पाएगा, तभी तो उन्होंने यह मकान मेरे नाम से खरीदा था पर मैं मालिक बन कर भी खुश नहीं हूं. जानता है, मैं इसे किराए पर उठा दूं तो अपने गुजारे के लिए आसानी से व्यवस्था कर लूंगा.”

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

“दादा, नाराज मत हो,” कहता हुआ रोहित घबरा उठा, जैसे मैं अभी उसे घर से निकालने वाला हूं. वह उठा और पूर्णिमा के पास चला गया.

फिर मैं ने रोहित के स्वर सुने, वह चिल्ला कर पूर्णिमा को डांट रहा था, “तुम दादा का जरा भी खयाल नहीं रखतीं. मैं ने पहले ही तुम से कह दिया था कि मुझ से विवाह करना है तो दादा की देखभाल ठीक से करनी पड़ेगी.”

मैं संतुष्ट भाव से मुसकराता रहा.

अगले दिन दोपहर को घर के काम निबटा कर पूर्णिमा मेरे कमरे में झाड़ूपोंछा ले कर आ जुटी. फिर एक भी शब्द बगैर बोले, कमरा धोतीपोंछती रही.

अब मैं और अधिक स्वार्थी बन गया और बोला, “मेरे कपड़े धो कर, इस्तिरी कर देना.”

नौकरानी रखना रोहित के बस की



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

बात नहीं थी. पूर्णिमा भी फालतू का खर्च नहीं उठाना चाहती थी. उस ने मेरे कपड़े धो कर रस्सी पर सूखने को टांगे तो मैं ने दूसरा आदेश सुना डाला, "मेरे पैरों पर तेल मल कर जाना."

यह सब सुन कर उस के चेहरे पर मेरे प्रति नफरत के भाव उभर आए पर वह चुप रही और कटोरी में तेल ला कर मेरे पैरों पर मलती रही.

मैं ने फिर से उस के रोने के स्वर सुने. वह रोहित से कह रही थी, "मेरे गर्भ में पलते अपने बच्चे का तो खयाल करो, वह इस आदमी जैसा हो गया तो क्या होगा?"

"फालतू की चिंताओं का बोझा मत लादो. तुम ने डाक्टरनी को नहीं देखा है, प्रतिदिन सैकड़ों तरह के मरीजों का इलाज करती है, क्या उस का बेटा बीमार पैदा हुआ?"

रोहित पत्नी को यह कह कर संतुष्ट कर देता, 'दादा का जमाना और था. आजकल तो पोलियो का टीका चल गया है. किसी बच्चे को यह बीमारी नहीं होती. हम अपने बच्चे को पहले से दवा पिला देंगे.'

पूर्णिमा को सतासता कर मेरे अहं को संतुष्टि मिलती. मैं अपने प्रति उस की घृणा बरदाश्त नहीं कर पा रहा था.

मेरी छपी कहानी का न मुझे पारिश्रमिक मिला न कहीं से प्रशंसापत्र आया तो मैं फिर से अपनी हीनता के आवरण तले ढक गया.

रोहित प्रोत्साहित करता, 'दादा और लिखो न,' परंतु मैं ने अपनी संपूर्ण शक्ति पूर्णिमा को सताने में लगा रखी थी.

पूर्णिमा प्रसव हेतु अस्पताल में भरती हुई तो मुझे चाय, भोजन आदि देने का भार रोहित ने उठा लिया. वह अकेला घर के काम निबटाता और पत्नी की तीमारदारी भी करता.

"दादा, पूर्णिमा के बेटा हुआ है," कहते हुए रोहित का स्वर खुशी से कांप रहा था, "बच्चा खूब मोटाताजा है, गोरा सा."

मैं ने ऊपरी मन से खुशी जताई पर अंदर से जलभुन रहा था कि मेरे पैर ठीक होते तो मेरी भी शादी हुई होती. मैं भी बेटे का बाप बनता...

मेरा मन रोहित से ईर्ष्या कर उठा था कि कितना सुखी है वह, खूबसूरत सी पत्नी, बेटा, नौकरी, मानसम्मान सभी कुछ तो है उस के पास.

मुझे पलपल यही एहसास सताने लगा कि रोहित ने मेरा अधिकार छीना है. मेरी खुशियां छीनी हैं आदि.

काश, मेरी जगह रोहित के पैर खराब हुए होते, मांबाप ने मुझे पोलियो की दवा न पिला कर मेरे साथ नाइंसाफी की.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

पूर्णिमा को सप्ताहभर बाद घर लौट आना था परंतु उसे लेने अस्पताल गया रोहित खाली हाथ लौट आया.

"बहू नहीं आई?" मैं ने हैरानी से पूछा तो वह फूटफूट कर रो पड़ा और बोला, "पूर्णिमा बीमार है, उसे पीलिया हो गया है. लिहाजा, छुट्टी नहीं मिली."

"बहू बीमार है?"

"उसे खाना नहीं पच रहा है. डाक्टर ने मासूम बच्चे को भी मां से जुदा कर विशेष कक्ष में रखा है. कह रहे हैं कि मां की बीमारी के कीटाणुओं से बच्चे में संक्रमण होने का डर है."

"तू ने उसे सरकारी अस्पताल में क्यों रखा? अच्छे डाक्टर से इलाज करा न."

"इतने रुपए कहां से लाऊंगा," कहते हुए रोहित के स्वर में सारे जहां का दर्द समा चुका था.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

मेरे पास उसे सांत्वना देने के लिए शब्द नहीं थे. मैं सोचता रहता, 'पूर्णिमा को उस के किए की सजा मिल रही है. सगे जेठ को कीड़ामकोड़ा समझने का उसे दंड मिला है.'

कुछ ही दिनों में रोहित दयनीयता की चरम सीमा पर जा पहुंचा. बढ़ी हुई दाढ़ी, बगैर तेल पड़े उलझे हुए बाल, मैले वस्त्र, सूखा चेहरा.

'तू क्यों नहीं खाता, सारी रोटियां मेरी तरफ ही रख देता है,' मैं उसे जबरदस्ती खिलाने का प्रयास करता पर उस की भूखप्यास मर चुकी थी.

मैं बुजुर्ग की भांति उसे समझाता, 'बहू ठीक हो जाएगी. बेटा भी ठीक हो जाएगा. पूरे आंगन में दौड़ता फिरेगा.'

मैं उसे दुखी करने को बीमार पूर्णिमा का बारबार जिक्र छेड़ता. रोहित रोता तो मैं मन ही मन बेहद सुकून महसूस करता.

एक दोपहर रोहित की अनुपस्थिति में किसी ने घर का दरवाजा खटखटाया.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

ताला बाहर से बंद था, रोहित ताला बंद कर के चाबी खिड़की में रख जाता था ताकि कभी खतरे की स्थिति में मैं किसी को पुकार कर घर का ताला खुलवा सकूं.

मैं ने व्हीलचेयर को खिड़की से सटा कर देखा, एक अजनबी महिला पूर्णिमा का नाम ले कर आवाज लगा रही थी.

मैं ने उसे चाबी दे कर दरवाजा खुलवाया. वह महिला अंदर चली आई और बोली, "मैं जानती थी कि आप अंदर होंगे, इसीलिए मैं बाहर से ताला बंद होने के बावजूद खड़ी थी."

सम्मानसूचक संबोधन सुन कर मैं हैरान था. मैं बोला, "तुम कौन हो ? किस से मिलने आई हो ?"

## इन्हें आजमाइए

✓ टी ट्री औयल में एंटीफंगल गुण होते हैं. एक बाल्टी पानी में कुछ बूंदें टी ट्री औयल की मिलाएं और उस में अपने पैरों को 10-15 मिनट तक भिगोएं. इस से फंगल इन्फैक्शन को दूर करने में मदद मिलेगी.

✓ जब हम सोते हैं तो बौडी खुद को रिपेयर करती है. स्किन के लिए भी यह समय मरम्मत का होता है. ऐसे में सही नाइट क्रीम का चयन काफी अहम है. यह आप की स्किन को ग्लोइंग और रिंकलफ्री रखती है.

✓ गरमी में पसीना ज्यादा आता है इसलिए हमें कौटन फ्रैब्रिक से बने कपड़े ही पहनने चाहिए. साथ ही, फ्लोरल प्रिंट पहनना चाहिए क्योंकि ये गरमी और बरसात दोनों मौसम में कूल लुक देते हैं.

✓ गरमी में हलका भोजन करें. ताजे फल और सब्जियों का सेवन बढ़ा दें, जिन में पानी की मात्रा अधिक होती है जैसे कि मौसमी, संतरे, तरबूज, प्याज, टमाटर, नारियल पानी आदि.

✓ जिम में वर्कआउट करने से पहले हैल्थ चैकअप जरूर करवाएं और दिल के डाक्टर से सलाह जरूर लें कि आप को किस तरह की ऐक्सरसाइज करनी चाहिए.

✓ ग्रौसरी शौपिंग पर बच्चों को ले जाने से उन्हें हैल्दी और अनहैल्दी फूड के अंतर को बेहतर तरीके से समझाया जा सकता है. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

"सिर्फ आप से," कहती हुई वह मुसकरा कर कुरसी पर बैठ गई और बोली, "मुझे पता है पूर्णिमा अस्पताल में है."

'मेरे जैसे इंसान से भी कोई मिल सकता है,' मैं ने सोचा. मेरा आश्चर्य बढ़ रहा था.

वह फिर बोली, "लगता है पूर्णिमा ने आप को कुछ नहीं बताया. वह मुझ से आप की बहुत तारीफ करती है. आप लेखक हैं, मैं ने आप की कहानी पढ़ी, लगा, जैसे आप ने मेरे ऊपर ही वह कहानी लिखी है."

"धन्यवाद," मैं बोला. अपनी कहानी की प्रशंसा मुझे आत्मविभोर कर रही थी.

"मुझे भी कहानी लिखने का शौक है पर मेरी कहानी कहीं नहीं छपी. मेरे जैसे 2-4 लेखक और भी हैं और..."

"और क्या?"

"हम ने मिल कर एक संस्था 'साहित्यगोष्ठी' शुरू की है जिस में साहित्य पर चर्चा की जाती है. कवि सम्मेलन होता है. मैं आप को अपनी संस्था का सदस्य बनाने आई हूं."

यह सुनदेख कर मेरी रगरग में बिजली दौड़ रही थी कि क्या मैं किसी संस्था का सदस्य बनने की हैसियत रखता हूं.

"मेरा नाम वाणी है. माफ कीजिए बातों में लग कर, मैं अपना नाम बताना भी भूल गई," कहती उस महिला ने मेरा नामपता लिख कर रसीद मेरी तरफ बढ़ा दी और बोली, "शुल्क मैं पूर्णिमा से ले लूंगी, अब मैं चलती हूं."

"अरे, ऐसे कैसे चली जाएंगी?" मैं बोल उठा, "चाय पी कर जाइएगा."

"फिर कभी," कहती वाणी चली गई पर मेरे अंदर भारी उथलपुथल मचा गई.

पूर्णिमा ने वाणी से मेरी प्रशंसा की, ये शब्द मेरे हृदय को बींध रहे थे. ऐसा कैसे हो गया, विश्वास करना कठिन हो रहा था पर वाणी झूठ क्यों बोलेगी?

वाणी मेरी प्रेरणा बन गई, अगले दिन वह फिर आई और अपनी बातों से मेरे मन में सोए हुए आत्मविश्वास को जगा गई.

मैं नई कहानी लिखने बैठ गया. पूर्णिमा अस्पताल से लौटी तो बेहद कमजोर थी जैसे उस का पूरा लहू किसी ने निकाल लिया हो.

जमीन पर चलते हुए उस के पैर लड़खड़ा रहे थे.

आते ही उस ने मेरे कमरे में छोटा सा एक बिस्तर लगा दिया और बेटे को उस पर लिटाती हुई बोली, "दादा, अपने भतीजे को पालने की जिम्मेदारी तुम्हारी है. मैं इसे लिए बैठी रहूंगी तो रोटी कौन बनाएगा."

"दादा, आप इस का ध्यान हम से बेहतर रख सकते हो," रोहित नौकरी पर जाते वक्त बोला.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

उस नन्हे से गोलमटोल बच्चे को बोतल से दूध पिलाते वक्त मुझे विचित्र एहसास हो रहा था. मैं ने अपनी व्हीलचेयर उस के बिस्तर से एकदम सटा ली थी. डरतेडरते उस पर धीरेधीरे हाथ फेरने लगा कि कहीं उस पर कोई खरोंच न आ जाए.

"दादा, चाय लो, सूजी का हलवा भी खाओ," एक ट्रे में चाय का प्याला और हलवा देती पूर्णिमा बोली. उस के स्वर का अपनत्व मुझे सुखद एहसास से भरने लगा.

सबकुछ विचित्र लग रहा था. पूर्णिमा की नजर में मैं महत्त्वपूर्ण इंसान कैसे बन गया, मेरी समझ में नहीं आ रहा था. मैं सुखी था, बहुत सुखी. बेहद खुश. ●



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# सरिता

## डिजिटल भी, प्रिंट भी

मोबाइल व कंप्यूटर से आमतौर पर सोशल मीडिया प्लेटफौर्मों से जो जानकारी मिलती है वह संपादित नहीं होती. आप को खुद कचरे में से छांटना होता है. समय बचाइए, सिर्फ अच्छी व पूरी जानकारी, सही सोच, सही विचार जरूरी है.

सरिता के प्रिंट एडिशन के साथ डिजिटल एडिशन भी है. प्रिंट एडिशन आप सुबहशामरात जब चाहे पढ़ सकते हैं, संभाल कर रख सकते हैं. उस का मजा और है. मोबाइल फ्रैंडली डिजिटल एडिशन में बहुत सी पिछली कहानियां भी मिलेंगी.

**कभी बोर नहीं होने देगा डिजिटल एडिशन, बारबार पढ़िए.**

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# आसान तरीके से पाइए

## हमारी वैबसाइट sarita.in पर जाएं.

वहां पर सरिता व सारी पत्रिकाएं आप को दिखेंगी. जो चाहें, देखें. उस पर क्लिक करें, पेमैंट का पेज खुल जाएगा. इच्छानुसार भुगतान करें. 2-3 सप्ताह में डाक से पहला और फिर हर माह 2 बार आप को पत्रिकाएं मिलना शुरू हो जाएंगी.

क्यूआर कोड स्कैन करें

निडर, निर्भीक, अनूठी व सार्थक जानकारी

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम
★★½ मध्यम ★★ साधारण
★½ औसत ★ बेकार

## जल्दी समेटने की कोशिश में फीकी पड़ी

## श्रीकांत ★★

यह फिल्म प्रसिद्ध क्रिकेटर कृष्णम्माचारी श्रीकांत की बायोपिक नहीं है, बल्कि बिजनैसमैन श्रीकांत की है जिस के पिता ने उस के पैदा होने पर उस का नाम क्रिकेटर कृष्णम्माचारी श्रीकांत के नाम पर रख दिया था. वह बड़ा हो कर क्रिकेट खेलता भी है. यह एक दृष्टिहीन बाधिक किरदार की कहानी है जिस ने कभी पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम से कहा था कि वह इस देश का पहला दृष्टि बाधित राष्ट्रपति बनना चाहता है.

बायोपिक जैसी बनी इस फिल्म में श्रीकांत के जन्म से ले कर उस के रास्ते में आने वाली दिक्कतों/संघर्षों से मुकाबला करते उस की कोशिशों, उस की विजय के साथसाथ उस के गिरने/संभलने को दिखाया गया है. हमारे फिल्मकारों के आसपास ऐसी न जाने कितनी कहानियां छितरी पड़ी हैं, जरूरत है कुछ मेहनत करने की और फिर इसी तरह की कहानियों में से 'श्रीकांत' जैसी उम्दा फिल्म बन कर तैयार होती है.

तुषार हीरानंदानी ने अभिनेता राज कुमार राव को ले कर इस फिल्म को बनाया है. इस से पहले तुषार हीरानंदानी 'सांड की आंख' फिल्म बना चुका है. वैसे, उस की फिल्मों में कौमेडी फिल्मों की संख्या अधिक है. नसीरुद्दीन शाह की फिल्म 'स्पर्श', रानी मुखर्जी की फिल्म 'ब्लैक' और सोनम कपूर की हालिया फिल्म 'ब्लाइंड' तक हिंदी फिल्मों में दृष्टिहीन किरदारों की लंबी फेहरिस्त है.

'अंधाधुन' को जोड़ दिया जाए तो यह दृष्टिहीन पर बनी एक बेहतरीन फिल्म थी जिस ने अवार्ड भी जीता था. अकसर दृष्टिहीनों के लिए हमारा समाज एक अलग ही इमेज बना कर रखता है. दृष्टिहीनों को बेचारा समझा जाता है और उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है. उन्हें लगता है कि दृष्टिहीन सिर्फ भीख ही मांग सकते हैं. लेकिन जब हम इस फिल्म में श्रीकांत को देखते हैं जो तमाम मुश्किलों से गुजर कर न केवल 150 करोड़ रुपए की कंपनी शुरू कर दृष्टिहीनों के लिए रोजगार मुहैया कराता है तो हमारी धारणा पर पानी फिर जाता है और हम दृष्टिहीनों के प्रति अपने नजरिए को बदला हुआ पाते हैं.

इस तरह की कहानियों को ढूंढ़ कर उन पर और भी फिल्में बननी चाहिए. फिल्म की कहानी में आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में एक गरीब के घर एक बच्चा जन्म लेता है. उस का किसान पिता बड़े होने पर उसे क्रिकेटर बनाना चाहता है, मगर जब उसे पता चलता है कि बच्चा दृष्टिहीन है तो उस पर बिजलियां गिर पड़ती हैं. वह उस बच्चे को जिंदा गाड़ना चाहता है, मगर गाड़ नहीं पाता.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

फिल्म में वहीं से बच्चे के अस्तित्व की जंग शुरू होती है. बड़ा हो कर वह श्रीकांत (राजकुमार राव) बनता है. पढ़ाई में वह टौपर बनता है. जूनियर स्कूल में अध्यापक की पोलपट्टी खोलने पर उसे धक्के मार कर स्कूल से निकाल दिया जाता है. उस की स्टिक छीन ली जाती है. लेकिन इस के बावजूद साइंस स्ट्रीम में दाखिला लेने के लिए वह कोर्ट में लड़ाई लड़ता है. लेकिन 12वीं में टौप करने के बाद भी उस के नेत्रहीन होने के कारण उसे आईआईटी में दाखिला नहीं मिल पाता. मगर अमेरिका में एक आईटी संस्थान बांहें फैला कर उस का स्वागत करता है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

अमेरिका में वह पढ़ाई में अव्वल रहता है, हर प्रकार की एक्टिविटीज में भी आगे रहता है. उस की टीचर कदमकदम पर उसे राह दिखाती है. अमेरिका से पढ़ाई कर लौटने पर वह हैदराबाद आ कर अपने देश के विकलांगों के लिए रोजगार मुहैया करवाने वाली एक कंपनी की शुरुआत करता है. बिजनैस में पार्टनर बन कर रवि (शरद केलकर) श्रीकांत का साथ देता है. दूसरी तरफ डाक्टरी की पढ़ाई कर स्वाति (अलाया एफ) उसे अपना प्यार देती है और नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती है.

इस फिल्म में कहीं भी श्रीकांत का महिमामंडन नहीं किया गया है. कहानी सीधी राह पर चलती रहती है. साथ ही, दर्शकों को बोर नहीं होने देती. मध्यांतर से पहले का भाग इंटरैस्टिंग है, मगर सैकंडहाफ खिंचाखिंचा सा लगता है. फिल्म शिक्षा प्रणाली पर भी कटाक्ष करती है. मध्यांतर के बाद फिल्म डौक्यूमैंट्री सी लगने लगती है.

श्रीकांत के किरदार में राजकुमार राव एकदम परफैक्ट रहा है. उस का अभिनय जानदार है. टीचर की भूमिका में ज्योतिका का अभिनय शानदार है. शरद केलकर ने भी सपोर्टिंग कास्ट में अच्छा काम कर लिया है. फिल्म में पूरा फोकस श्रीकांत की पढ़ाई, उस की कारोबारी सफलता और फिर उस के खुद पर होने वाले अभिनय पर केंद्रित है.

कामयाब होने पर श्रीकांत में अहंकार आ जाता है, वह रवि को जलील करने लगता है. 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा...' गाने को सिचुएशन के हिसाब से रीक्रिएट किया गया है. इस के अलावा 'तू मिल गया...' और 'तुम्हें ही अपना मानना है...' गाने अच्छे बन पड़े हैं. सिनेमेटोग्राफी अच्छी है. फिल्म के अंत में स्क्रीन पर यह लिखा आता है कि श्रीकांत बोल्ला आज भी इस ख्वाहिश के साथ जी रहे हैं तो फिल्म का मकसद साफ हो जाता है.

दृष्टिहीनों के दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को निर्देशक गोल कर गया है. श्रीकांत जितना बड़ा कैरेक्टर है, उस की पूरी कहानी समेट पाने में फिल्म असफल रहती है. फिल्म में श्रीकांत की पढ़ाई, उस की कारोबारी सफलता और फिर सफल कारोबारी के अभिमान पर केंद्रित है.

ब्लाइंड के किरदार में राजकुमार ने अच्छा अभिनय भले किया है मगर उस के बावजूद वह 'स्पर्श' फिल्म के अनिरुद्ध परमार से पीछे रह गया है. उस ने पूरी फिल्म में एक तरह की भावभंगिमा ओढ़े रखी है जो ब्लाइंड लोगों में अकसर दिखती है. हालांकि इसे दर्शक कितना पचा पाते हैं, कहना मुश्किल है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# दो और दो प्यार ★★

एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर पर बनी फिल्म 'दो और दो प्यार' हौलीवुड की फिल्म 'द लवर्स' की रीमेक है. फिल्म उस दौर की फिल्मों की याद ताजा करती है जब बासु चटर्जी और विनोद पांडे जैसे निर्देशक वैवाहिक रिश्तों में निजी सुख तलाशने वाली फिल्में बनाया करते थे.

फिल्म वैवाहिक रिश्तों की बात करती है. अकसर शादी के कुछ सालों बाद कपल्स में रूमानियत कम होने लगती है. पति को पत्नी अच्छी नहीं लगती और पत्नी को पति के बजाय कोई और भाने लगता है. ऐसे में पतिपत्नी का वैवाहिक रिश्ता पटरी से उतर जाता है और दोनों ही किसी और की बांहों में समा जाने को आतुर होने लगते हैं. ये रिश्ते तन के भी हो सकते हैं और मन के भी.

यह फिल्म मौजूदा दौर की सामाजिक घटनाओं में गुम हो चुके सवालों की तफ्तीश करती है. वैवाहिक उलझे रिश्तों पर वैसे तो कई फिल्में बन चुकी हैं, जैसे 'अर्थ', 'सिलसिला', 'हमारी अधूरी कहानी', 'लाइफ इन ए मैट्रो' वगैरह मगर यह फिल्म इस मामले में थोड़ी सी अलग है क्योंकि इस में शादी से ऊब चुके कपल को अपने अतीत की खूबसूरत और चुलबुली यादें उन्हें करीब लाने में सहायक सिद्ध होती हैं और दोनों पार्टनर्स को अब प्रेमी के बजाय अपना पति या पत्नी अच्छा लगने लगता है. उन की जिंदगी फिर से हसीन हो जाती है. लौट के बुद्धू घर को आए.

फिल्म की कहानी अन्य फिल्मों से अलग है क्योंकि यह एक संगीन मुद्दे को मजेदार और हलकेफुलके अंदाज में ट्रीट करती है. कहानी काव्या (विद्या बालन) और अनिरुद्ध (प्रतीक गांधी) की है. वे दोनों पतिपत्नी हैं. दोनों ने 12 साल पहले घर से भाग कर शादी की थी, अब उन की शादीशुदा जिंदगी बोरिंग हो गई है. दोनों घर में साथसाथ तो रहते हैं मगर एकसाथ सोते नहीं.

काव्या एक डैंटिस्ट है और अनिरुद्ध एक बिसनैसमैन. दोनों का बाहर अफेयर चल रहा है. काव्या का अफेयर एक प्रोफैशनल फोटोग्राफर विक्रम (सैंधिल

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

रामामूर्ति) से चल रहा है तो अनिरुद्ध का अफेयर ऐक्ट्रैस बनने के लिए संघर्षरत रोजी उर्फ नोरा (इलिआना डिक्रूज) से है. नोरा अनिरुद्ध पर दबाव डालती है कि अनिरुद्ध अपने और उस के प्यार के बारे में काव्या को सबकुछ बता दे.

तभी कहानी में ट्विस्ट आता है. काव्या के दादाजी का निधन हो जाता है. उसे अपने मायके ऊटी जाना पड़ जाता है. अनिरुद्ध भी उस के साथ जाता है. ऊटी की हसीन वादियों में एक बार फिर काव्या और अनिरुद्ध के अतीत की चुलबुली और प्यारभरी यादें उन दोनों को फिर से करीब लाती हैं. मगर अब दोनों एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर में हैं.

ऊटी में काव्या और उस के पिता के बीच झगड़ा हो जाता है. काव्या और अनिरुद्ध एक होटल में चले जाते हैं. वहां



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

वे जम कर शराब पीते हैं और डांस करते हैं. दोनों खूब एंजौय करते हैं. दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ने लगती हैं. कुछ दिनों बाद दोनों मुंबई वापस आ जाते हैं. दोनों को लगने लगता है जैसे उन्होंने हाल ही में शादी की है. नोरा का फोन आने पर अनिरुद्ध बहाने तलाशने लगता है. अब अनिरुद्ध को अपनी बीवी ही अच्छी लगने लगती है. दूसरी ओर विक्रम का फोन आने पर काव्या उसे इग्नोर करने लगती है. वह बहाने तलाशने लगती है. अब काव्या और अनिरुद्ध एकदूसरे के नजदीक रहना पसंद करने लगते हैं. कुछ दिनों बाद काव्या के पेरैंट्स उन के पास रहने आते हैं. वे अब काव्या और अनिरुद्ध को माफ कर देते हैं.

नोरा अपने शो में अनिरुद्ध को बुलाती है. अनिरुद्ध नोरा के शो में जाता है. वहां नोरा अनिरुद्ध पर दबाव बनाती है. वह इमोशनल हो चुकी है. दूसरी ओर विक्रम भी चाहता है कि काव्या अनिरुद्ध को छोड़ कर उस के साथ रहने आ जाए. काव्या बहुत कन्फ्यूज्ड है कि वह अनिरुद्ध के साथ रहे या विक्रम के. दूसरी और अनिरुद्ध भी कन्फ्यूज्ड है कि वह अपनी बीवी के साथ रहे या नोरा के.

एक दिन अनिरुद्ध को विक्रम और काव्या के अफेयर के बारे में पता चल जाता है. दोनों के बीच झगड़ा शुरू हो जाता है क्योंकि दोनों ने एकदूसरे के साथ चीट किया था. अब दोनों एकदूसरे पर आरोप लगाते हैं. दोनों अपनीअपनी बात को सही साबित करने में लग जाते हैं. काव्या अपना सामान पैक कर विक्रम के पास चली जाती है लेकिन वहां उस के साथ नहीं रहती, अलग रहने चली जाती है.

एक साल बीत जाता है. दीवाली पर काव्या अपने पुराने घर वापस लौटती है. वहां अनिरुद्ध भी आ जाता है. वह काव्या को बताता है कि उस ने नोरा को छोड़ दिया था. अब काव्या और अनिरुद्ध एकदूसरे को माफ कर फिर से एक हो जाते हैं.

फिल्म का पहला हिस्सा मजेदार है. निर्देशक शीर्षा गुहा ठाकुरता ने संगीन मुद्दे को मजेदार और हलकेफुलके कौमेडी अंदाज में ट्रीट किया है. विद्या बालन और प्रतीक गांधी की ऐक्टिंग जानदार है. विद्या बालन तो फिल्म की जान है.

इस फिल्म से कई वैवाहिक जोड़े रिलेट कर पाएंगे कि शादी के कुछ सालों बाद जब रिश्तों का चार्म खत्म हो जाता है, गरमाहट नहीं रहती, सैक्स नदारद हो जाता है तो घर में कैसे हालात बनते हैं. विद्या बालन के मायके ऊटी में उस के परिवार के साथ कुछ सीन बहुत ही अच्छे बन पड़े हैं. सैकंडहाफ में कहानी थोड़ी खिंची लगती है. क्लाइमैक्स में रिश्तों को जोड़ने में निर्देशिका जल्दबाजी कर गई लगती है. फिल्म का गीतसंगीत सामान्य है. फिल्म की सिनेमेटोग्राफी साधारण है. फिल्म में बहुत ज्यादा ड्रामा नहीं है.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## करतम भुगतम ★★

हमारे देश के लगभग सभी हिंदू घोर अंधविश्वासी हैं. बच्चे के जन्म से ले कर व्यक्ति के मरने तक वह ज्योतिषियों और पंडों के चंगुल में फंसा रह कर कर्मकांड करता रहता है. वह हिट गाना दर्शकों को याद होगा– 'सुखदुख है क्या फल कर्मों का, जैसी करनी वैसी भरनी' यह फिल्म इसी अंधविश्वास को दोहराती है.



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

यथा राजा यथा प्रजा यानी जैसा राजा होगा उस की प्रजा वैसी ही होगी. हमारे देश के प्रधानमंत्री ही घोर अंधविश्वासी हैं. वे खुद को रामभक्त कह राम की मूर्ति के आगे कईकई बार दंडवत लोट लगाते हैं, केदारनाथ की गुफाओं में जा कर जपतप करते हैं और मूर्तिपूजा में सब से आगे रहते हैं.

ज्योतिषियों की तो वैसे ही हमारे देश में पौबारह है. वे लोगों को अंकों के जाल में उलझा कर उन की जेबें ढीली करते हैं. ज्योतिष एक छलावा है. ज्योतिषीय उपायों, भविष्यवाणियों, काला जादू, तंत्रमंत्र का क्या असर होता है, असर होता भी है या नहीं, यह बहस का विषय हो सकता है. इसी तरह जो हो रहा है वह आज के कर्मों का फल है या पिछले जन्म के कर्मों का भुगतान है, फिल्म में अंधविश्वास की इस थ्योरी को उठाया गया है.

निर्देशक व लेखक सोहम पी शाह ने 'जो बोओगे वही काटोगे' वाली थ्योरी को आधार बना कर इस नई फिल्म से अंधविश्वासों को पुख्ता ही किया है. कहानी ज्योतिष के कालेधंधे से शुरू हो कर धीरेधीरे धोखेबाजी और बदले के ट्रैप पर रास्ता भटक जाती है.

निर्देशक सोहम इस से पहले 'काल' और 'लक' जैसी फिल्में बना चुके हैं जिन का विषय कर्मफल और भाग्य ही था. फिल्म की कहानी न्यूजीलैंड से अपने घर मध्य प्रदेश लौटे देव जोशी (श्रेयस तलपड़े) की है. देव को पिता की मृत्यु के बाद सारी पुश्तैनी प्रौपर्टी बेच 10 दिन में वापस लौटना है. लेकिन एक ज्योतिषी अन्ना (विजय राज) उस से कहता है कि वह वापस नहीं जाएगा. यह बात देव के दिमाग में बैठ जाती है. जमीन से ले कर बैंक तक में उस का सारा काम अटक जाता है तो वह अन्ना की शरण में चला जाता है. अन्ना उस से जो कहता है, वह करता जाता है.

देव के दोस्त गौरव ने अन्ना के साथ मिल कर सारे पैसे अपने नाम करा लिए थे. अन्ना कालूजादू जानता था. उस की पत्नी देव के खाने में नशे की दवाई मिला दिया करती थी. इस से देव हर वक्त नींद में रहने लगा था. इन सभी ने देव को मारने के लिए उस के घर में आग लगाई थी. देव पागल हो चुका था.

देव की प्रेमिका जिया (अक्षा परदासानी) इंडिया आ गई. जिया देव को न्यूजीलैंड वापस ले जाना चाहती थी. फ्लाइट कुछ देर के लिए बैंकौक में रुकनी थी. बैंकौक में देव ने अन्ना की और उस की फैमिली को देखा. वे लोग धोखाधड़ी कर के बैंकौक में रह रहे थे. देव ने बैंकौक पुलिस को अन्ना की असलियत बताई. पुलिस ने देव के दोस्त गौरव को अरैस्ट कर लिया और देव ने अन्ना के सारे पैसे चोरी कर लिए. अब अन्ना पागल बना घूम रहा है.

तकनीकी दृष्टि से फिल्म साधारण है. फिल्म ज्योतिषियों के चंगुल में न फंसने की बात करती है. सिनेमेटोग्राफर न बैंकौक को एक्सप्लोर किया है. फिल्म का संगीत कमजोर है. ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# निसंतानता पर फिल्में क्यों नहीं

• सोमा घोष

देर से शादी, फर्टिलिटी रेट के गिरने व अन्य कारणों के चलते आजकल कपल्स के बीच निसंतानता बड़ी समस्या बन कर उभरी है. लेकिन इतने बड़े मुद्दे पर फिल्में नहीं बन रहीं. आखिर वजह क्या है, जानिए.

रश्मि मां नहीं बन पाई, क्योंकि उस का बारबार मिसकैरिज हो जाता था. उन्होंने कई बार डाक्टर से सलाह ले कर दवाइयां लीं, लेकिन वह मां नहीं बनी. अंत में रश्मि ने अपनी जिंदगी को अपनी तरीके से जीना शुरू किया, जिस में उस ने नौकरी कर ली और अपनी हौबी के करम करने शुरू किए. आज वह खुश है, लेकिन 50 साल की इस उम्र में भी वह जब भी अपने पति के साथ किसी गेटटुगेदर में जाती है, लोगों को फुसफुसाते हुए सुनती है या अपने लिए दयाभाव को जाहिर होते पाती है, जो हालांकि, पहले की अपेक्षा कम हुआ है. उन दोनों की इस बिंदास जीवनशैली से दूसरे कपल्स प्रेरित भी होते हैं, जो रश्मि को अच्छा लगता है.

असल में जब कपल मातापिता बनते हैं



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

तो उन की जिंदगी बच्चों के पालनपोषण में गुजर जाती है. ऐसे में बहुत कम पतिपत्नी होते हैं जो एकदूसरे की जिंदगी का ध्यान रख पाते हैं जबकि देखा गया है कि निसंतान पतिपत्नी का आपसी प्यार और उन की बौंडिंग बहुत अच्छी होती है. अभिनेता दिलीप कुमार और अभिनेत्री सायरा बानो की आपसी बौंडिंग इस का एक उदाहरण है. उन की कोई संतान नहीं थी, लेकिन उन दोनों का आपसी प्यार बहुत स्ट्रौंग था.

एक बार अभिनेत्री सायरा बानो ने कहा भी था कि मेरे अपने बच्चे भले ही नहीं हैं लेकिन मेरे आसपास बहुत सारे बच्चे हैं जिन को मैं ने अपने परिवार में बड़ा होते हुए देखा है. उन में केवल परिवार ही नहीं, बल्कि हमारे घर के हैल्पर भी हैं. हम दोनों को कभी नहीं लगा कि हमारे बच्चे नहीं हैं.

## चौइस कपल्स की

असल में मां बनना एक महिला के लिए नैसर्गिक प्रक्रिया है, लेकिन कई बार कुछ कारणों से महिला मां नहीं बन पाती. सार्वजनिक स्थानों पर ऐसी महिला के प्रति समाज और परिवार आजकल हीनभावना दिखाने की अपेक्षा दयाभाव ज्यादा दिखाते हैं. अगर कपल संभ्रांत परिवार का हो तो फिर क्या ही कहने. लोगों की हमदर्दी अनचाहे ही उन पर आ गिरती है, मसलन उन के बाद में उन की प्रौपर्टी का मालिक कौन होगा, व्यवसाय को कौन चलाएगा आदि कई प्रश्नों का सामना उन्हें करना पड़ता है, जो उन कपल्स को कई बार खराब भी लगता है.

हालांकि आजकल कई प्रकार के इलाज द्वारा प्रैगनैंसी संभव है, मसलन सरोगेसी, अडौप्शन, आईवीएफ आदि लेकिन ये सब उन कपल्स की चौइस होती है कि बच्चा उन्हें चाहिए या नहीं. आजकल अधिकतर पतिपत्नी दोनों कामकाजी हैं, बच्चे की जिम्मेदारी लेने से वे घबराते हैं.

सीमा और कुशल की भी कहानी यही है. 10 साल हुए उन की शादी को. दोनों मुंबई में रहते हैं. दोनों आर्किटैक्ट हैं लेकिन उन्हें बच्चा नहीं चाहिए क्योंकि बच्चे को पालने वाला कोई नहीं है और वे अपने बच्चे की जिम्मेदारी सास या मां पर डालना नहीं चाहते. यह उन दोनों की सम्मिलित सोच है, दोनों अपनी जिंदगी से खुश हैं. हालांकि परिवार वाले उन पर बच्चे के लिए प्रैशर बनाते हैं लेकिन उन्होंने साफसाफ कह दिया है कि हम दोनों में कोई डिफैक्ट नहीं है और हमें बच्चा नहीं चाहिए. सो, परिवार वाले भी चुप हैं.

## क्या कहते हैं आंकड़े

हाल के वर्षों में विकासशील देशों में बिना बच्चे वाली महिलाओं की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है. भारत भी उन में से एक है. भारत में निसंतानता बढ़ी है. वर्ष 2015–2016 में भारत में 7 फीसदी महिलाएं निसंतान थीं, जो 2019–2021 में बढ़ कर 12 फीसदी हो गईं. संतानहीनता शिक्षा के स्तर, शादी की उम्र, बौडी मास इंडैक्स (बीएमआई) स्तर और थायरौइड की उपस्थिति से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है, जिस में शहरी महिलाओं में निसंतानता की संख्या अधिक है. इस की वजह महिलाओं की स्कूली शिक्षा, आत्मनिर्भरता, शादी की उम्र, मीडिया एक्सपोजर आदि के बढ़ते रुझान को देखते हुए निसंतान महिलाओं का प्रतिशत बढ़ रहा है. यही वजह है कि आजकल औलाद पाने का कारोबार भी खूब बढ़ रहा है.

अगर फिल्मों की बात करें तो फिल्मों की कहानियां भी आज तक ऐसी नहीं

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

## कुछ ऐक्ट्रैसेस जो रियल लाइफ में नहीं बनीं मां

### जयाप्रदा

अभिनेत्री सायरा बानो के अलावा अभिनेत्री जयाप्रदा ने भी मां की कई भूमिकाएं फिल्मों में निभाईं और चर्चित रहीं. बौलीवुड की खूबसूरत ऐक्ट्रैस में शुमार जयाप्रदा की शादी साल 1986 में फिल्म प्रोड्यूसर श्रीकांत नाहटा से हुई. कपल की कोई संतान नहीं है.

### शबाना आजमी

शबाना आजमी ने मशहूर गीतकार और लेखक जावेद अख्तर से शादी की. दोनों की जोड़ी को आज भी फैंस का भरपूर प्यार मिलता है. शबाना और जावेद की शादी को कई साल हो चुके हैं लेकिन अब तक शबाना मां नहीं बनीं. शबाना का उन के सौतेले बच्चों के साथ मधुर रिश्ता है.

### रेखा

करोड़ों दिलों की धड़कन अभिनेत्री रेखा को आज भी दर्शक स्क्रीन पर देखना पसंद करते हैं. रेखा इस वक्त 68 साल की हो चुकी हैं. 3 शादियां करने के बाद भी वे मां नहीं बनीं.

### हेलेन

एक समय अपने डांस से सब को हैरत में डालने वाली खूबसूरत अभिनेत्री हेलेन ने सलीम खान से शादी की और सलीम खान के बच्चों को अपना मानती हैं.

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

लिखी गईं जिन में किसी दंपती को फिल्म के अंत तक बच्चा नहीं है और वे अपनी जिंदगी को एक अलग अंदाज में जी रहे हैं. अधिकतर फिल्मों में ऐक्ट्रैस निसंतान तो होती है, लेकिन अंत में उसे किसी न किसी रूप में बच्चा मिल ही जाता है, जो दर्शकों के लिए पौजिटिव एंडिंग होती है. इस बारे में 'लिपस्टिक अंडर माय बुर्का' की निर्देशक और लेखक अलंकृता श्रीवास्तव कहती हैं, "यह सही है कि निसंतान दंपती को ले कर फिल्मों की कहानियां नहीं लिखी गईं और आज की तारीख में दंपती की चौइस कई बार मातापिता बनने की नहीं होती और किसी ने इस विषय पर फिल्म बनाने या लिखने के बारे में सोचा भी नहीं.

## महिला फिल्ममेकरों की जरूरत

फिल्म निर्देशक व लेखक अलंकृता श्रीवास्तव आगे कहती हैं, "बिना मां बने किसी स्टोरी का फोकस, शायद नहीं हुआ है. रियल लाइफ में महिलाएं या तो मां बनना नहीं चाहतीं या फिर किसी मैडिकल कारण से वे मां नहीं बन सकतीं. ऐसे में बच्चा पाने के आजकल कई साधन उपलब्ध हैं जिन में बच्चे को अडौप्ट किया जा सकता है, आईवीएफ करवा सकते हैं, सरोगेसी एक औप्शन है. मां न बनने की बात को मैं ने शो 'बौम्बे बेगम्स' में अभिनेत्री शाहाना गोस्वामी के माध्यम से दिखाया है, जो प्रैगनैंसी के लिए स्ट्रगल



More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

कर रही होती है. मिसकैरिज होता रहता है. सरोगेसी या अडौप्शन के लिए वह जाती है और वह ये सब अपने पति के लिए कर रही है, क्योंकि पति को बच्चा चाहिए."

फिल्मों में ऐसे चरित्र होते हैं जिन्हें बच्चा नहीं हो रहा है, लेकिन पूरी तरह से मुख्य भूमिका में मां न बन पाने को ले कर अभी तक कहानी नहीं बनी है. फिल्म 'क्रू' में भी करीना कपूर को बच्चा नहीं होता. यह सही है कि मुख्य पात्र पर फोकस कर जिन्हें बच्चा नहीं चाहिए या नहीं है, वैसी कहानी शायद आगे कोई अवश्य लिखेगा, जिसे फिल्ममेकर बनाएंगे.

## आज की महिला की चौइस

अलंकृता आगे कहती हैं, "मैं ने अभी इस विषय पर फिल्म बनाने के बारे में सोचा नहीं है पर सोचना अवश्य चाहूंगी क्योंकि जैसा मैं ने देखा है कि यह एक कपल की खुद की चौइस होती है कि वे बच्चा चाहते हैं या नहीं.

आज एक महिला सिंगल रह कर भी मां बनना पसंद करती है, जबकि कोईकोई महिला शादी के बाद भी मां बनना नहीं चाहती. किसी में भी कोई समस्या आज नहीं है.

"मैं ने मां बनने को ले कर कई थीम पर फिल्में बनाई हैं क्योंकि एक महिला के मां बनने के बाद भी कई समस्याएं आती हैं. मां बनना किसी के लिए आसान नहीं होता. जैसा कि मेरी फिल्म 'लिपस्टिक अंडर माय बुर्का' में कोंकणा सेन को अधिक बच्चे नहीं चाहिए, इसलिए वह बर्थ कंट्रोल करना चाहती है, जबकि फिल्म 'डौली किटी और वो चमकते सितारे' में कोंकणा के चरित्र में भी जटिल मदरहुड को दिखाया गया है, जहां वह 2 बच्चों में से एक को ले कर चली जाती है.

"असल में मां बनना आसान नहीं होता. सीरीज 'मेड इन हैवन' में भी सभी मांओं की एक अलग तसवीर दिखाई गई है, सभी मां परफैक्ट नहीं होतीं. मदरहुड एक ईमानदार और प्यार देने वाली होती है, इसे ग्लोरीफाई करने की जरूरत नहीं होती क्योंकि वह भी एक ह्यूमन बीइंग है और उस का व्यवहार अपने बच्चे के प्रति अलग हो सकता है.

"मेरे हिसाब से आज की महिला का अल्टीमेट गोल मां बनना नहीं हो सकता. मैं ने अपने काम में इसे दिखाना चाहा भी है. अभी आगे काफी एक्स्प्लोर करना है, जिस में शायद मां न बनने की चौइस, विषय पर भी फोकस डाला जाएगा. इस में मैं खासतौर पर यह भी कहना चाहूंगी कि किसी भी महिला की खुद की चाहत होनी चाहिए कि उसे बच्चा चाहिए या नहीं, उस की फ्रीडम, उस का संकल्प, जिसे सभी सहयोग दें, उस की इस चौइस को कोई गलत न ठहराए. इस पर अधिक से अधिक कहानी कही जानी चाहिए." ●

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

# भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

**MDH मसाले**

**सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच**

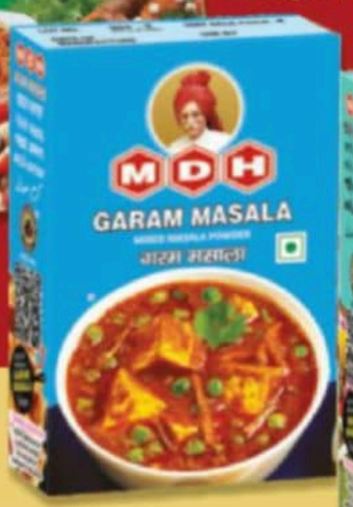


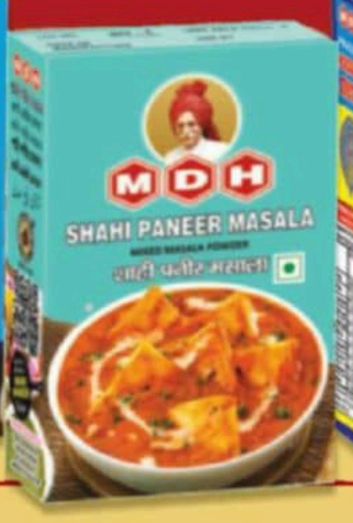

**For More Information Visit us on :**

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

**www.mdhspices.com**

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

👇📚 **ENGLISH MAGAZINE** 📚👇

👉 **GET ALL FAST UPDATE OF ALL HINDI ENGLISH MAGAZINE JOIN OUR TELEGRAM CHANNEL.**

**Frontline,SportStar,Business India,Banking Finance,Cricket Today,Mutual Fund Insight,Wealth insight,Indian Economy & Market,The Insurance Times,Electronics For You,Open Source For You,Mathematics Today,Biology Today,Chemistry Today,Physics For You,Business Today,Woman Fitness India,Grazia India,Filmfare India,Femina India,India Legal,Rolling Stone India,Bombay Filmfame,Outlook,Outlook Money,Careers 360,Outlook Traveller,India Strategic,Entertainment Updates,Outlook Business,Open,Investors India,Law Teller,Global Movie,The Week India,Indian Management,Fortune India,Dalal Street Investmemt Journal,Scientfic India,India Today,HT Brunch,Yoga and Total Health,BW BusinessWorld,Leisure India Today,Down To Earth,Pratiyogita Darpan,Marwar India,Champak,Woman's Era,The Caravan,Travel Liesure India,Business Traveller,Rishi Prasad,Smart investment,Economic and political weekly,Forbes india,Health The Week, Josh Government JOBS,Josh Current Affairs,Josh General Knowledge,Electronic For You Express,Josh Banking And SSC,Highlights Genius,Highlights Champ,Global Spa,Bio Spectrum,Uday India,Spice India Today,India Business Journal,Conde Nast Traveller,AD Architectural Digest,Man's world,Smart Photography India,Banking Frontiers,Hashtag,India Book Of Records,ET Wealth,Vogue india,Yojana,Kurukshetra**

👇 **JOIN TELEGRAM CHANNEL** 👇
👉 https://t.me/Magazines_8890050582

👇📚**हिन्दी मैगजीन**📚👇

**समय पत्रिका,साधना पथ,गृहलक्ष्मी,उदय इंडिया,निरोगधाम,मॉडर्न खेती ,इंडिया टुडे,देवपुत्र,क्रिकेट टुडे,गृहशोभा,अनोखी हिन्दुस्तान,मुक्ता,सरिता,चंपक,प्रतियोगिता दर्पण,सक्सेस मिरर,सामान्य ज्ञान दर्पण,फार्म एवं फूड,मनोहर कहानियां,सत्यकथा,सरस सलिल,स्वतंत्र वार्ता लाजवाब,आउटलुक,सच्ची शिक्षा,वनिता,मायापुरी,इंडिया हेल्थ,रूपायन उजाला,ऋषि प्रसाद,जोश रोजगार समाचार,जोश करेंट अफेयर्स,जोश सामान्य ज्ञान,जोश बैंकिंग और एसएससी,इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स,राजस्थान रोजगार संदेश,राजस्थान सूजस,सखी जागरण,अहा! जिंदगी,बाल भास्कर,योजना,कुरूक्षेत्र,हिन्दुस्तान जॉब्स**

👇 **JOIN TELEGRAM CHANNEL** 👇
👉 https://t.me/English_Newspaper_Banna

**Like other groups, this list is not just written, we will make these magazine available to you with 100% guarantee.**

JOIN TELEGRAM CHANNEL
👉 https://t.me/Premium_Newspaper

You will get the updates of all these magazinesfirst in the premium group.

👇 **JOIN BACKUP CHANNEL** 👇
👉 https://t.me/Backup_8890050582

SEARCH ON TELEGRAM TO JOIN PREMIUM GROUP
👉 @Lalit712Bot
**Contact** 👉 8890050582

🙏

More Newspaper and Magazines Telegram Channel join Search https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)